माहे रमज़ान

कैसे गुज़ारें

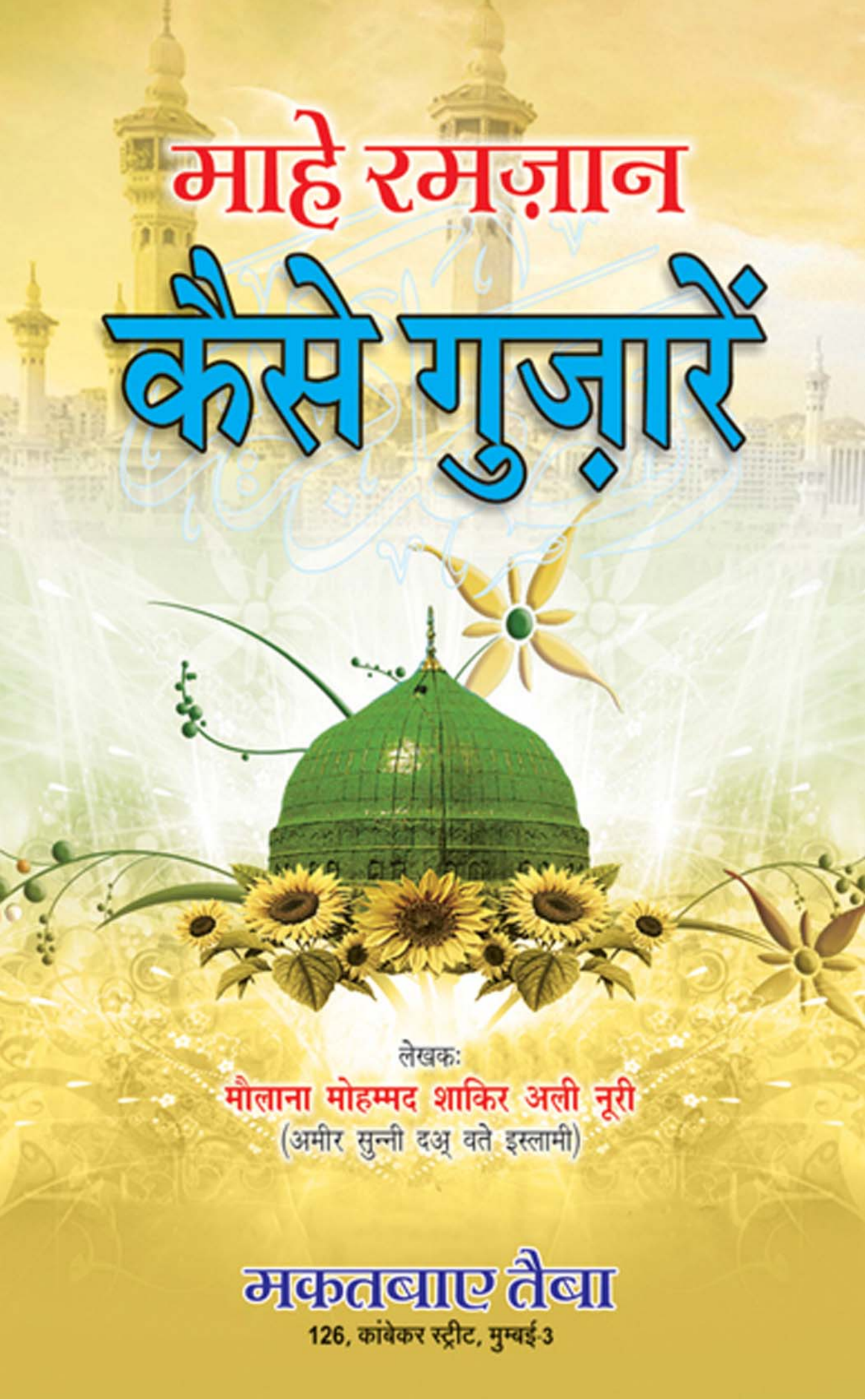

लेखक:
मौलाना मोहम्मद शाकिर अली नूरी
(अमीर सुन्नी दअ् वते इस्लामी)

मकतबाए तैबा
126, कांबेकर स्ट्रीट, मुम्बई-3

بسم اللہ الرحمن الرحیم

काम वह ले लीजिए तुमको जो राज़ी करे
ठीक हो नामे रज़ा तुम पे करोड़ों दुरूद

اَلصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم
وَ عَلٰی اٰلِکَ وَ اَصْحَابِکَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہِ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم

माहे रमज़ान कैसे गुज़ारें ?

मुसन्निफ़ः
हज़रत मौलाना मोहम्मद शाकिर अली नूरी
अमीर सुन्नी दअ्वते इस्लामी

नाशिरः
मकतबाए तैबा
मर्कज़ इसमाईल हबीब मस्जिद, 126 काम्बेकर स्ट्रीट, मुम्बई-3

जुमला हुक़ूक़ बहक़्के नाशिर महफ़ूज़ हैं

नाम किताब	:	माहे रमज़ान कैसे गुज़ारें?
तालीफ़	:	हज़रत मौलाना मोहम्मद शाकिर अली नूरी (अमीरे सुन्नी दअ़वते इस्लामी)
कम्पोज़िंग	:	मोहम्मद अब्दुल्लाह आज़मी (मुबल्लिग़ सुन्नी दअ़वते इस्लामी)
प्रूफ रीडिंग	:	मौलाना मज़हर हुसैन अलीमी (मुबल्लिग़ सुन्नी दअ़वते इस्लामी)
इशाअत बारे अव्वलः		रजबुल मुरजब 1429 हि॰ (2008)
सफ़हात	:	144
क़ीमत	:	
नाशिर	:	मकतबाए तैबा, मर्कज़ इसमाईल हबीब मस्जिद 126, काम्बेकर स्ट्रीट, मुम्बई-3
मिलने के पते	:	न्यू सिलवर बुक एजेंसी, मुहम्मद अली बिल्डिंग, मोहम्मद अली रोड, मुम्बई-3 नाज़ बुक डिपो, मोहम्मद अली बिल्डिंग, मोहम्मद अली रोड, मुम्बई-3 इक़रा बुक डिपो, 30-B, नूर मंज़िल मोहम्मद अली रोड, मुम्बई-3

फेहरिस्त

शरफे इतिसाब	3
तक़रीज़े जलील	
मुक़द्दमा	
माहे रमज़ान की वजह तसमिया	
रमज़ान के पांच हुरूफ़	
माहे रमज़ान की ख़ुसूसियात	
फ़ज़ाइले माहे रमज़ान	
माहे रमज़ान और रहमते रहमान	
मक्का मुअ़ज़्ज़मा में माहे रमज़ान	
शैतान क़ैद में	
रहमत, मग़फ़िरत और आग से आज़दी	
हयाते इंसानी के तीन अदवार और....	
आंखों की तकलीफ़ दूर	
फ़रिश्तों में फ़ख़्र	
नूर का शहर	
बख़शिश का ज़िम्मा	
साल का दिल	
आफात से महफ़ूज़	
अज़ाब से छुटकारा	
उम्मत के लिए अमान	
माहे रमज़ान के एहतराम का इनाम	
माहे रमज़ान की बेहुरमती की सज़ा	
हुज़ूर माहे रमज़ान कैसे गुज़ारा करते थे	
मख़सूस दुआ का विर्द	
रंगे मुबारक फ़क़ हो जाता	
सहाबा को मुबारकबाद देते	

रमज़ानुल मुबारक को ख़ुश आमदीद कहते	
आमदे रमज़ान पर ख़ुतबा इर्शाद फ़रमाते	
इस्तक़बालिया ख़ुतबा की तफ़्सील	
रमज़ान का इस्तिक़बाल किस तरह करें?	
रोज़ा कब फ़र्ज़ हुआ?	
सहरी और इफ़्तारी	
सहर क्या है?	
वक़्ते सहर गिरया व ज़ारी	
तौबा और दुआ की क़ुबूलियत के औक़ात	
तहज्जुद भी पढ़ लें	
तहज्जुद का माअ़ना	
नमाज़े तहज्जुद का वक़्त	
नमाज़े तहज्जुद की रकआ़त	
नमाज़े तहज्जुद का फ़ायदा	
तहज्जुद की रकअ़त को लंबी करो	
सहरी भी सुन्नते रसूल है	
रोज़ा की नियत	
रोज़ा के बातिनी आदाब	
झूट से बचो	
नाज़ेबा अलफ़ाज़ भी ज़बान से अदा न हों	
ग़ीबत से परहेज़	
किसी का दिल न दुखाओ	
कानों की हिफ़ाज़त करो	
निगाहों की हिफ़ाज़त	
दिल हिफ़ाज़त	
इफ़्तार का बयान	
इफ़्तार का माअ़ना	
इफ़्तार के वक़्ते दुआ का एहतिमाम	

इफ़्तार और नबी करीम की सुन्नते मुबारका	
इफ़्तार की फ़ज़ीलत	
किसी चीज़ से इफ़्तार करे	
साइंस क्या कहती है?	
खजूर का कीमयाई तजज़िया	
इफ़्तार के बाद की दुआ	
इफ़्तार कराने की फ़ज़ीलत	
रोज़ा के फ़ज़ाइल अहादीस की रोशनी में	
मुश्क से ज़्यादा ख़ुश्बूदार	
मैं ही इसका बदला दूंगा	
मक़अदे सिदक़ में	
बेहिसाब व किताब जन्नत में	
रोज़ादार कहाँ हैं?	
पूरे साल रोज़े की तमन्ना	
रोज़े ढाल हैं	
सत्तर साल की मसाफ़त पर	
सेहतमंद होने का नुस्ख़ा	
रोज़दार के लिए दो ख़ुशियाँ	
अल्लाह का दुश्मन	
चार आदमियों की मुश्ताक़	
रोज़ादार का इस्तक़बाल	
एक अजीबुल ख़िल्क़त फ़रिश्ता	
रोज़ा और दीगर इबादात में फ़र्क़	
रोज़े के फ़वाइद	
रोज़ा साइंस की नज़र में	
पॉप एफ़ गाल का तजज़िया	
रोज़ा और मिसवाक का इस्तेमाल	
मिस्वाक के फ़वाइद	

किन औक़ात में मिस्वाक करें?	
मिस्वाक के ज़रिये इलाज	
मिस्वाक साइंस की नज़र में	
मसाइले रोज़ा	
जिन चीज़ों से रोज़ा नहीं टूटता	
जिन चीज़ों से रोज़ा टूट जाता है	
जिन सूरतों में सिर्फ़ क़ज़ा लाज़िम है	
जिन सूरतों में कफ़्फ़ारा भी लाज़िम है	
नुज़ूले कुरआन	
लफ़्ज़े कुरआन के मआनी और उसकी वजह तसमिया	
नुज़ूल का माअ्ना	
नुज़ूले कुरआन कितनी बार हुआ?	
कुरआन और दीगर किताबों के नुज़ूल में फ़र्क़	
तिलावते कुरआन	
तरतील के साथ पढ़ो	
अल्लाह के प्यारे रसूल का मामूल	
जिब्रीले अमीन के साथ कुरआन मजीद का दौर	
अल्लाह व रसूल से मुहब्बत का तक़ाज़ा	
अल्लाह की रस्सी	
उन ज़बानों के लिए भलाई	
मुक़र्रब फ़रिश्तों में तज़किरा	
कुरआन की शिफ़ाअ़त	
हर हर्फ़ के एवज़ रुत्बा बुलंद होगा	
इससे बढ़ कर कोई षवाब नहीं	
ताजे करामत	
दिलों का ज़ंग	
अस्लाफ़े किराम की तिलावत का अंदाज़	
तिलावते कुरआन के फ़वाइद	

समाअते कुरआन मजीद	
सामईने कुरआन के तबक़ात	
समाअते कुरआन की फ़ज़ीलत	
माहे रमज़ान और तरावीह का एहतिमाम	
तरावीह का माअ्ना	
नबी-ए-अकरम नूरे मुजस्सम का मामूल	
तरावीह पर सहाबाए किराम की मुदावमत	
तरावीह की रकआ़त	
तरावीह की फ़ज़ीलत	
तरावीह में ख़त्मे कुरआन	
हुज़ूर नबी-ए-रहमत ﷺ और माहे रमज़ान का आख़री अशरा	
माहे रमज़ान और सख़ावत	
सख़ावत, जूद, बुख़्ल और शुह में फ़र्क़	
इंफ़ाक़ की दो क़िस्में	
कितना ख़र्च करें?	
इंफ़ाक़ का हुक्म क्यों हुआ?	
किस पर ख़र्च किया जाए?	
अल्लाह के दस्ते कुदरत में	
हुज़ूर नबीए रहमत की दुआ	
ग़रीब की मदद न करने का अंजाम	
यह भी इंफ़ाक़ फ़ी सबीलिल्लाह है	
बेहिसाब ख़र्च करो	
जन्नत से क़रीब	
आग से बचो	
हुज़ूर रहमते आलम की जूद व सख़ा का अंदाज़	
अपने सदक़ात ज़ाए न करो	
अमीरों पर ग़रीबों का एहसान	
सदक़ात के इक़साम	

ज़कात का बयान	
ज़कात का लुग़वी और शरई माअ्ना	
ज़कात किस पर वाजिब है	
निसाबे ज़कात	
ज़कात क्यों फ़र्ज़ हुई?	
ज़कात से मुतअल्लिक़ चंद ज़रूरी मसाइल	
किन चीज़ों पर ज़कात नहीं है?	
ज़कात किस को दी जाए?	
फ़क़ीर	
मिस्कीन	
आमिल	
मोअल्लिफ़तुल क़ुलूब	
रिक़ाब मकातिब	
ग़ारिम यानी क़र्ज़दार	
फ़ी सबीलिल्लाह	
इब्नुस-सबील यानी मुसाफ़िर	
उश्र का बयान	
उश्र की शरह	
उश्र किस को दिया जाए	
शबे क़द्र	
वजहे तस्मिया	
शबे क़द्र अहादीष के आइना में	
शबे क़द्र कौन सी रात है?	
शबे क़द्र की अलामतें	
शबे क़द्र को पोशीदा रखने की हिकमतें	
शब क़द्र क्यों अता हुई?	
फ़रिश्तों का नुज़ूल	
एक अजीबुल ख़िल्क़त फ़रिश्ते का नुज़ूल	

फ़रिश्ते क्यों नाज़िल होते हैं?	
फ़रिश्तों का सलाम	
शबे क़द्र और तदाबीरे उमूर	
शबे क़द्र की दुआऐं	
शब क़द्र की नफ़्ल नमाज़	
शबे क़द्र से महरूमी का नुक़सान	
एतिकाफ़ का बयान	
एतिकाफ़ का लुग़वी और शरई माअ्ना	
नबीए कौनो मकाँ का मामूल	
एतिकाफ़ के ज़रिये शबे क़द्र की तलाश	
एतिकाफ़ की फ़ज़ीलत	
एतिकाफ़ के अक़साम	
एतिकाफ़ वाजिब, सुन्नते मोअक्किदा और नफ़्ल में फ़र्क़	
एतिकाफ़ में किए जाने वाले आमाल	
एतिकाफ़ में किए जाने वाले चंद अवराद व वज़ाइफ़	
माहे रमज़ानुल मुबारक की आख़री शब कैसे गुज़ारें?	
ईदुल फ़ित्र का बयान	
ईद मनाना कब से शुरू हुआ?	
ईद का दिन कैसे गुज़ारें	
ग़रीबों का ख़्याल रखें	
ईद के दिन यह बातें मुस्तहब हैं	
इन बातों से परहेज़ करें	
माहे रमज़ानुल मुबारक की कुछ एहम तारीख़ें	
शेर ख़ुदा हज़रत अली	
नाम व नसब	
नसब नामा व विलादत	
आपका क़ुबूले इस्लाम	
आपकी हिजरत	

हज़रत अली رضی اللہ عنہ और अहादीषे करीमा	
आपकी शहादत	
उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजतुल कुबरा	
आपका कुबूले इस्लाम	
अहादीष में आपकी फ़ज़ीलत	
आपकी वफ़ात	
उम्मुल मोमिनीन हज़रत आईशा सिद्दीक़ा	
अहादीष में आपका तज़किरा	
चंद वजहों से आपकी फ़ज़ीलत	
अहादीषे मुबारका की नक़्ल व रिवायत में आप का किरदार	
इल्मे तिब्ब में आपकी मालूमात	
इबादत व सख़ावत में आपकी ज़ात	
अरबी अश्आर में आपकी महारत	
आपका विसाल	
ख़ातूने जन्नत हज़रत फ़ातिमतुज़ ज़हरा	
हज़रत फातिमा के फज़ाइल ज़बाने नबवी से	
हुज़ूर को सबसे ज़्यादा महबूब	
पेशानी को बोसा देते	
हुज़ूर का गुस्ताख़	
अल्लाह की रज़ामंदी व नाराज़गी	
जन्नती औरतों की सरदार	
मुख़्तसर सवानेह हयात	
विसाल शरीफ़	

शरफे इंतिसाब

मैं अपनी इस तालीफ़ को उम्मुल मोमिनीन, ग़मगुसारे रसूल हज़रत खदीजतुल कुबरा رضی اللہ تعالیٰ عنہا व महबूबए रसूल उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा رضی اللہ تعالیٰ عنہا जिगर गोश-ए-रसूल सैयदतुन निसा हज़रत फ़ातिमतुज़ ज़हरा رضی اللہ تعالیٰ عنہا अमीरुल मोमिनीन खलीफ़तुल मुसलिमीन हज़रत अली मुरतज़ा رضی اللہ تعالیٰ عنہ और बिलखुसूस शोहदाए बदर رضی اللہ عنہم की ज़वाते मुक़द्दसा से मंसूब करता हूँ जिनका विसाल माहे रमज़ानुल मुबारक में हुआ। यक़ीनन आज इस्लाम का लहलहाता हुआ सब्ज़ व शादाब चमन उन्हीं ज़वाते मुक़द्दसा का मरहूने मिन्नत है। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त इन नुफूसे कुदसिया के दरजात को बुलंद फरमाए और हम सब पर उनके फुयूज़ व बर्कात जारी रखे।

इस किताब की तस्नीफ़ पर तहरीक हमदर्दे क़ौम व मिल्लत बिरादरम व मुशफिक्कम अल्हाज उष्मान ज़रुदर वाला की सालेह फिक्र से मिली जो हर साल माहे रमज़ानुल मुबारक के इस्तक़बाल के लिए मुख़्तलिफ़ मंसूबे पेश करते रहते हैं। अल्लाह عزوجل उनको शिफाए कामिल व आजिल अता फरमाए और दराज़गीए उम्र बिलखैर अता फरमाए।

आखिर में अर्ज़ है कि इस किताब से इस्तिफादा भी करें और इस फ़क़ीर के लिए दुआए खैर व मग़फ़िरत फ़रमाऐं और खास तोर पर मेरी वालदा माजिदा के लिए दराज़गी-ए-उम्र बिलखैर और वालिद साहब क़िब्ला की बख़्शिश की दुआ फ़रमाएं और हां तहरीके सुन्नी दावते इस्लामी के फरोग़ व इस्तिहकाम और इस किताब की तर्तीब व कम्पोज़िंग में जामिआ ग़ोषिया के तलबा व मुबल्लिगीन ने साथ दिया उनके लिए भी दुआ करें कि अल्लाह عزوجل सब पर करम की नज़र फरमाए। آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ و التسلیم

तालिबे दुआए मग़फ़िरत

फक़ीर मुहम्मद शाकिर नूरी

(अमीरे सुन्नी दावते इस्लामी)

13, शाबनुल मुअज़्ज़म 1427 हि.

तक़रीज़े जलील

हज़रत अल्लामा मुफ्ती मुहम्मद अशरफ़ रज़ा
क़ादरी मिस्वाही دام ظلہ النورانی
मुफ्ती व क़ाज़ी इदारा-ए-शरइय्या महाराष्ट्र

بسم اللہ الرحمن الرحیم
نَحْمَدُہٗ وَ نُصَلِّیْ وَ نُسَلِّمُ عَلٰی حَبِیْبِہِ الْمُصْطَفٰی الْاَشْرَفْ

मुबल्लिग़े सुन्नियत, अख़ी फ़िद्दीन, अल्हाज अल्हाफ़िज़ अलक़ारी मौलाना मुहम्मद शाकिर अली नूरी ज़ीद मकारिमुकुम अमीरे सुन्नी दअ्वते इस्लामी का मुरत्तिब रिसाला "माहे रमज़ान कैसे गुज़ारें" मुतअद्दिद मुक़ामात से देखा, नाफ़ेअ व मुफ़ीद पाया। इसमें उन्होंने अपने मख़्सूस दावती अंदाज़ में फ़ज़ाइले रमज़ानुल मुबारक, मसाइले रोज़ा, फ़वाइदे मिस्वाक, बरकाते तिलावत कुरआने हकीम नीज़ नमाज़े तरावीह व ऐतिकाफ और शबे क़द्र वग़ैरा पर इल्म दोस्त एहबाब के लिए अच्छा हासिल मुताला पेश किया है जो इस्लाहे आमाल के लिए मौज़ूं है।

इस दौरे पुरआशुब और सुलह कुल्ली माहौल में तहफ्फुज़े अक़ाइद और सयानते दीन व मज़हब के लिए मोअस्सिर अंदाज़ में किताबों की इशाअत की सख़्त ज़रूरत है। जान व माल का ख़ौफ़ दिला कर अल्लाह व रसूल عزوجل وصلی اللہ علیہ وسلم के दुश्मनों के साथ मिल बैठने का ईमान सौज़ हरबा शयातीन इस्तेमाल कर चुके, ईमान की खेतियाँ जल रही हैं, अक़ीदा का बाग़ झुलस रहा है, इम्तियाज़े सुन्नत मजरूह हो रहा है, ऐसे माहौल में इस्लाम के दाई, सुन्नियत के मुबलिग़, मुस्लेह क़ौम व मिल्लत की ज़िम्मेदारियाँ बढ़ जाती हैं।

दुआ है कि मौला अमीरे सुन्नी दावते इस्लामी व उनके रुफ़क़ाए कार और दीन व सुन्नियत के लिए अपना सब कुछ निछावर कर देने का जज़्बा रखने वालों को सरकारे आला हज़रत सैयदना इमाम अहमद रज़ा क़ादरी हनफ़ी बरेली رضی اللہ عنہ के मस्लक को ख़ूब आम करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

آمین یا ارحم الراحمین بحرمۃ حبیبہ سید المرسلین علیہ و علی آلہ و صحبہ افضل الصلوٰۃ و التسلیم و اکمل التسلیمات الف الف مرۃ فی کل لمحۃ و لحظۃ الی یوم الدین

अशरफ रज़ा क़ादरी
5 शाबानुल मुकर्रम 1427 हि. 30 अगस्त 2006

मुक़द्दमा

मुफक्किरे इस्लाम हज़रत अल्लामा क़मरुज़्ज़माँ खान आज़मी
(जनरल सेक्रटरी वर्ल्ड इस्लामिक मिशन ऑफ लंडन)

حامداً و مصلیاً و مسلماً

सालहाए गुज़िश्ता की तरह इस साल भी सुन्नी दावते इस्लामी के सालाना इजतिमा मुनअक़िदा प्रेस्टन (इंग्लैड) में शिर्कत की सआदत मैयस्सर आई और इस साल भी हज़रत मौलाना शाकिर नूरी अमीरे सुन्नी दावते इस्लामी अपनी गिरां क़द्र तस्नीफ़ का मसव्विदा लेकर आए जिसे देख कर और बिलइस्तीआ़ब मुताला करके बेपायाँ मुसर्रत हुई।

शाबाने मुक़द्दस जलवा गर हो चुका है और माहे रमज़ान का इस्तक़बाल करने के लिए उम्मते मुस्लिमा तैयार है। उम्मीद है कि इस्तक़्बाले माहे रमज़ान से पहले ही एहले इल्म व दानिश के हाथों तक हम ''माहे रमज़ान कैसे गुज़ारें'' का तोहफ़ा पहुंच चुका होगा। الحمدللہ माहे रमज़ान हर साल जल्वा फ़गन होता है और उम्मते मुस्लिमा इस माह की सआदतों और बरकतों से बक़द्रे तौफ़ीक़ फैज़याब भी होती है मगर बहुत कम लोग हैं जो इस माह को ईमान व एहतिसाब के तक़ाज़ों के साथ गुज़ारते हैं। यही वजह है कि सालहा-साल रोज़ा रखने के बावजूद भी हमारी ज़िंदगियों में वह तबदीली पैदा नहीं होती जिसका तक़ाज़ा यह माहे मुबारक करता है। जिसकी वजह या तो हमारी ग़फ़लत है या इस माहे मुबारक के आमाल से नावाक़िफ़ियत, जबकि सैयदे आलम ﷺ ने फ़रमाया कि अगर तुम्हारा रोज़ा तुम्हें झूट और दूसरी बुराइयों से बाज़ नहीं रखता तो अल्लाह عزوجل को तुम्हारे भूके और प्यासे रहने की कोई ज़रूरत नहीं।

माहे रमज़ान दरअसल एक रूहानी तर्बियत का महीना है जिसमें इंसान इन तमाम ख़साइले हमीदा से आरास्ता हो जाता है जो शजरे तक़वा के बर्ग व बार की हैसियत रखते हैं जब कि रोज़ा की फ़र्ज़ियत का बुन्यादी मक़सद ही शजरे तक़वा की आबयारी है। क़ुरआने अज़ीम का इरशाद है:

”يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ“

(سورۂ بقرہ پ ۲، آیت ۱۸۳)

रोज़ा उम्मते मुहम्मदिया ﷺ से पहले भी तमाम अंबियाए किराम की उम्मतों पर फ़र्ज़ था इसलिए कि रूहानी और अख़्लाक़ी तर्बियत के लिए रोज़ा बहुत ज़रूरी है।

वह मज़ाहिब जो रुहबानियत यानी तर्के दुनिया और तर्के लज़्ज़ात तालीम देते हैं वह रूहानी इरतिक़ा के लिए पूरी ज़िंदगी मुजर्रद रहने और दुन्यवी अलाइक़ से बेनियाज़ हो जाने का हुक्म देते हैं लेकिन रुहबानियत एक तरह से فرار عن الحيات है जब कि इस्लाम ज़िंदगी का मज़हब है और पूरे आलमे इंसानी का मज़हब है। अगर तमाम इंसान रुहबानियत इख़्तियार कर लें तो क़ाफ़िला-ए-हयात आगे न बढ़ सकेगा इसलिए इस्लाम में रुहबानियत की गुंजाइश नहीं। फ़रमाया गया ’لَا رَهْبَانِيَةَ فِي الْإِسْلَام

अलबत्ता इरतिक़ाए रूहानी के लिए माहे रमज़ान अता फ़रमाया गया ताकि उम्मते मुस्लिमा इस माहे मुबारक में रोज़ा रख कर ज़िंदगी भर रहबानियत के ज़रीआ रूहानी मनाज़िल तय करने वालों से ज़्यादा बुलंद रूहानी मुक़ाम हासिल कर ले। यही वजह है कि क़ुरआने अज़ीम ने लैलतुल क़द्र को हज़ार महीने की रातों से बेहतर क़रार दिया है। सरकारे दो आलम ﷺ का फरमाने गिरामी है कि इस माह का अव्वल रहमत, वस्त मग़फ़िरत और आख़िरी हिस्सा जहन्नम से आज़ादी है। रहमत, मग़फ़िरत और जहन्नम से आज़ादी की तर्तीब में एक फ़ित्री रब्त पाया जाता है।

अल्लाह तबारक व तआला रहमान व रहीम है वह सारी कायनात की परवरिश इसलिए करता है कि यह उसकी सिफ़त रहमान व रहीम का तक़ाज़ा है। वह अपने बंदों के गुनाह अपनी रहमते बेपायाँ से माफ़ फ़रमाएगा। सरकारे दो आलम ﷺ ने फ़रमाया कि अल्लाह तबारक व तआला इर्शाद फरमाता है कि मेरी रहमत के 100 हिस्से हैं, मैंने उसका एक हिस्सा अपनी मख़्लूक़ को अता फ़रमाया है। जब से वह दूसरों के साथ रहम व करम का मामला करती है हत्ता के जानवर अपने

बच्चों की परवरिश करते हैं। और निन्नयानवें (99) हिस्से मैंने क़यामत के दिन अपने बंदों के लिए मख़्सूस फ़रमा रखा है। (मफहूमन)

इससे मालूम हुआ कि मग़फ़िरत बग़ैर रहमत के मुम्किन नहीं। चुनान्चे रमज़ान के पहले अशरे में बंदे को चाहिए कि रहमत तलब करे ता कि दूसरे अशरे में मग़फ़िरत का हक़दार बन जाए और दूसरे अशरे में तलबे मग़फ़िरत के बाद गुनाहों से पाक व साफ हो जाए और तीसरे अशरे में जहन्नम से आज़ाद होकर जन्नत में जाने का मुस्तहिक़ हो जाए। अस्ल में जन्नत में इंसान गुनाहों की गंदगी की वजह से दाख़िल नहीं हो सकेगा इसलिए दख़ूले जन्नत के लिए मग़फ़िरत ज़रूरी है।

हर साल माहे रमज़ान में लाखों अफ़राद के गुनाह माफ़ होते हैं और उन्हें मुस्तहिक़े जन्नत क़रार दिया जाता है। इसलिए सरकारे दो आलम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया مَنْ صَامَ رَمَضَانَ اِيْمَاناً وَّ اِحْتِسَاباً غُفِرَ لَهٗ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهٖ (बुख़ारी शरीफ, 1/155)

माहे रमज़ान और तिलावते कुरआन

माहे रमज़ान का तिलावते कुरआने अज़ीम से बड़ा गहरा रब्त है। कुरआने अज़ीम माहे रमज़ान में नाज़िल हुआ जैसा कि अल्लाह तआ़ला का फ़रमाने ज़ीशान है: "شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِیْ اُنْزِلَ فِیْهِ الْقُرْاٰنُ" इस तरह रमज़ान गोया नुज़ूले कुरआन की सालगिरह का महीना है। इस माहे मुबारक में ख़ूद सैयदे आलम ﷺ और महीनों के मुक़ाबले में कुरआने पाक की तिलावत ज़्यादा फ़रमाते थे और हज़रत जिब्रईल علیہ السلام हुज़ूर ﷺ को कुरआन सुनाते भी थे और कुरआन सुनते भी थे। अंबियाए किराम पर नुज़ूले वही के आग़ाज़ से पहले रोज़े का हुक्म दिया जाता था। चुनान्चे हज़रत मूसा علیہ السلام को तौरेत अता फ़रमाने से पहले कोहे तूर पर चालीस रोज़ तक रोज़ा और इबादत नीज़ दीगर अलाइक़े दुन्यवी से अलाहिदा रहने का हुक्म दिया गया और चालीस रोज़ की तकमील के बाद उन्हें तौरेत अता की गई।

आक़ाए दो जहाँ ﷺ को हुक्म तो नहीं दिया गया मगर उन्होंने अपनी पैग़म्बराना फ़ितरत की दावत पर ग़ारे हिरा में तंहाई इख़्तियार की जहाँ अक्सर वह रोज़े की हालत में होते थे और इसी हालत में नुज़ूले

कुरआन का आग़ाज़ हुआ।

अब नुज़ूले वही तो मुम्किन नहीं मगर रमज़ान में तिलावते कुरआन की सआदत हासिल करने वालों के दिल पर कुरआन पाक के अन्वार व बरकात ज़रूर उतरते हैं इसलिए कि इस माह में कुरआने अज़ीम की तिलावत के साथ-साथ किसी हद तक अलाइक़े दुन्यवी और ख़्वाहिशाते माद्दी से बे तअ़ल्लुक़ी होती है।

दुनिया में कोई ऐसा निज़ामे ज़िंदगी और क़ानूने हयात नहीं है जिसके मानने वालों को हर साल पूरा दस्तूरे हयात सुनाया जाता हो और उसकी याद देहानी कराई जाती हो मगर तरावीह के ज़रिया हर साल उम्मते मुस्लिमा पूरा कुरआने अज़ीम सुनती भी है और पढ़ती भी है। काश ! मुसलमान समझ कर पढ़ते और अमल करते तो आज आलमे इस्लाम का नक़्शा ही कुछ और होता।

वह मुअज़्ज़ज़ थे ज़माने में मुसलमाँ होकर
और हम ख़्वार हुए तारिके कुरआँ होकर

रमज़ान पाक में शैतान पाबंद सलासिल कर दिया जाता है ताकि वह एहले ईमान को बहका न सके और मुसलमान अपनी रूहानी तर्बियत और अमली ट्रेनिंग का ज़माना शैतान की मुदाख़लत के बग़ैर कामिल कर सके। आपने देखा होगा कि तर्बियत लेने वाले को तर्बियत देने वाला बहुत से हिफ़ाज़ती इंतिज़ामात के साथ तर्बियत देता है और जब तर्बियत कामिल हो जाती है तो हिफ़ाज़ती इंतिज़ामात उठाए जाते हैं और वही वक़्त इसकी तर्बियत की आज़माइश का होता है।

रमज़ान के बाद शैतान को आज़ाद कर दिया जाता है अगर मर्दे मोमिन ने ईमान व एहतिसाब के साथ रोज़ा रखा और हाथ, पाँव, आँख, ज़बान वग़ैरा को भी रोज़ादार रखा तो माहे मुबारक गुज़र जाने के बाद भी रमज़ान की हालत पर किसी हद तक क़ायम रहता है और अगर तर्बियत नाक़िस रह गई तो वह फिर माहे रमज़ान से क़ब्ल की ज़िंदगी की तरफ़ लोट जाता है जो इस बात की अलामत है कि इस का रोज़ा मक़्बूल नहीं हुआ। ऐसे इंसान के लिए दुआ करनी चाहिए कि मौत से पहले अल्लाह उसको एक ऐसा माहे रमज़ान ज़रूर अता करे जब उसके

रोज़े मक़बूल हो गए हों और उसके सारे गुनाह माफ़ फ़रमा कर उसको मुस्तहिक़े जन्नत क़रार दिया गया हो।

माहे रमज़ान रोज़ादार के अंदर बहुत सी रूहानी और अख़्लाक़ी ख़ूबियों को परवान चढ़ाता है। मषलन

(1) अल्लाह का ख़ौफ़ हर हालत में रोज़ादार के दिल पर तारी रहता है। यही वजह है कि वह ख़िल्वत में कोई ऐसा काम नहीं करता जो हुक्मे रब्बानी के ख़िलाफ़ हो।

(2) रोज़ादार के अंदर सब्र और बर्दाश्त नीज़ ज़ब्त नफ़्स की सलाहियत पैदा हो जाती है। वह गाली या दावते मुबारज़त के जवाब मे सिर्फ यह कहता है कि मैं रोज़दार हूँ और गुज़र जाता है।

(3) अपने अवक़ाते कार को मुंज़बित करता है, शब बेदारी की आदत पैदा होती है, तहज्जुद और नवाफ़िल का पाबंद हो जाता है, जमाअत का एहतिमाम करता है।

(4) उसके अंदर अपने एहतिसाब की सलाहियत पैदा हो जाती है और "حَاسِبُوْا قَبْلَ اَنْ تُحَاسَبُوْا" की सिफ़त से मुत्तसिफ हो जाता है।

(5) "اَلصَّوْمُ جُنَّةٌ" के फ़रमाने आलीशान के मुताबिक़ वह शैतान के मुक़ाबले के लिए ख़ूद को तैयार कर लेता है और उसको कुदरत की तरफ से एक ढाल मिल जाती है जो शैतान के हमलों से महफ़ूज़ रखती है।

(6) उसके लिए जन्नत के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं, जहन्नम के दरवाज़े बंद कर दिए जाते हैं और शयातीन को पाबंदे सलासिल कर दिया जाता है।

(7) रमज़ान की बर्कत से उसे दो ख़ुशियाँ मैयस्सर आती हैं, एक वक़्ते इफ़तार और एक ज़ियारते परवरदिगार के वक़्त।

(8) इस माहे मुबारक में रोज़ादार के नवाफ़िल फ़र्ज़ का, फ़र्ज़ सत्तर फ़र्ज़ों का हामिल रहते हैं।

(9) इस माहे मुबारक में रोज़ादार का दिल नर्म और अख़्लाक़ी ख़ूबियों से मामूर होता है। उसके अंदर जज़्ब-ए-सख़ावत पैदा

होता है। और दूसरे दिनों के मुक़ाबले में ज़्यादा उमूरे खैर में हिस्सा लेता है।

(10) इफ़तारी और सहरी की बर्कतें हासिल करता है।

(11) रोज़ा और कुरआन की शफ़ाअत का मुस्तहिक़ होता है।

(12) लैलतुल क़द्र की बर्कतों से फैज़याब होता है।

(13) रोज़दार खूद को रमज़ान के बाद भी नफ़ली रोज़ों के लिए आमादा कर लेता है।

(14) रोज़ादार जिस्मानी सेहत से बेहरामंद हो जाता है।

खुदा का शुक्र है कि मौलाना शाकिर नूरी साहब ने इस किताब में माहे सियाम के बैशतर आमाल का अेहाता किया है और अस्लूबे दावत का तरीक़ा इख़्तियार किया है इसलिए किताब दिलनशीं और मुअष्यिर है। उम्मीद है कि इस किताब के मुतालआ से हज़ारों अफराद को माहे रमज़ान को सहीह तोर पर गुज़ारने की तौफ़ीक़ मिलेगी और वह अपनी ज़िंदगी में एक अख़्लाक़ी और रूहानी इंक़लाब पैदा कर सकेंगे।

☆☆☆

بسم اللّٰہ الرحمٰن الرحیم

اَلصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ ﷺ
وَ عَلٰی آلِکَ وَ اَصْحَابِکَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہِ ﷺ

अल्लाह عزوجل का बेपनाह एहसान और उसका शुक्र है कि उसने अपने प्यारे महबूब साहबे लोलाक ﷺ के सदक़ा व तुफ़ैल हमें बेशुमार नेअ़मतें अता फ़रमाई, अगर हम उसकी नेअ़मतों को शुमार करना चाहें तो नहीं कर सकेंगे। जैसा कि ख़ूद उसी का फरमान है। "وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَۃَ اللّٰہِ لَا تُحْصُوْھَا" और अगर तुम अल्लाह की नेअ़मतों का शुमार करना चाहो तो तुम नहीं कर सकते।

इससे पता चला है रब्बे क़दीर جل جلالہ ने हमें बेहिसाब नेअ़मतें अता फरमाई, बिन मांगे और बिन महनत के, यह अल्लाह عزوجل ही की ज़ात है कि नेअ़मते कषीरा से हमें नवाज़ता है। हमारी ज़िम्मदारी है कि हम उसकी नेअ़मतों का शुक्रिया नेअ़मतों की क़द्र के ज़रिया अदा करें।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! माहे रमज़ानुल मुबारक जो अल्लाह عزوجل की तरफ़ से बहुत बड़ी नेअ़मत है उसके इस्तक़बाल और गुज़ारने के तअल्लुक से कुछ बातें लिखने की सआदत हासिल कर रहा हूँ ताकि हम अल्लाह عزوجل की अ़ज़ीम नेअ़मत माहे रमज़ानुल मुबारक की बरकतों से मालामाल हो सकें और जब इस नेअ़मत के हवाले से क़यामत में सवाल किया जाए तो हम माहे रमज़ानुल मुबारक के रोज़ों की शफ़ाअत के हक़दार बन जाऐं।

आइये सबसे पहले माहे रमज़ानुल मुबारक के नाम और उसके मआ़नी को समझने की कोशिश करें ताकि मक़सदे रमज़ानुल मुबारक हमारी फहम में आ सके।

माहे रमज़ान की वजह तस्मिया

''रमज़ान'' ''रम्ज़ुन'' का मसदर है, रम्ज़ का माअ़ना है ''जलना'' मुफ़स्सरीने किराम ने रमज़ान की चंद वजहे तस्मिया बताई हैं।

(1) रोज़ा गुनाहों को जला देता है।

(2) जब इस माह के नाम रखने की बारी आई तो सख़्त गर्मी थी

इस वजह से उसका नाम रमज़ान रखा गया जैसा कि रबीउल अव्वल, रबीउष्यानी के जिस वक़्त नाम रखे गए उस वक़्त मौसमे बहार था।

(3) ''रमज़ान'' अल्लाह तआ़ला का एक नाम है लिहाज़ा इस लिहाज़ से उसे रमज़ान नहीं बल्कि ''शहर'' की उसकी जानिब इज़ाफ़त करके ''शहरे रमज़ान'' यानी अल्लाह का महीना कहना चाहिए जैसा कि मरवी है "وَ لَا تَقُوْلُوْا جَاءَ رَمَضَانُ وَ ذَهَبَ رَمَضَانُ" यह न कहो कि रमज़ान आया, रमज़ान गया बल्कि यह कहो कि माहे रमज़ान आया, माहे रमज़ान गया।

(रुहुल बयान, जि.2, स.104, 105, मुलख़्ख़सन)

रमज़ान के पाँच हुरूफ़

बुज़ुर्गाने दीन علیہم الرحمۃ والرضوان ने फ़रमाया कि रमज़ान में पाँच हुरूफ़ हैं। (र) से रज़ाए इलाही (म) से मग़फ़िरत इलाही (ज़) से ज़माने इलाही (अ) से उलफते इलाही (न) से नवाल व अताए इलाही मुराद है। गोया जिसने रमज़ानुल मुबारक में इबादत किया वह इन सारी चीज़ों का हक़दार है। (नुज़हतुल मजालिसः1/581)

माहे रमज़ान की ख़ुसूसियात

दूसरे महीनों पर माहे रमज़ानुल मुबारक की फ़ज़ीलत चंद एतिबार से है।

☆ कुरआने मुक़द्दस में यह तो मज़कूर है कि महीनें बारा हैं और यह भी मज़कूर है कि उनमें से चार हुर्मत वाले हैं वह हुर्मत व इज़्ज़त वाले महीने कौन हैं यह मज़कूर नहीं लेकिन माहे रमज़ानुल मुबारक का नाम कुरआने मुक़द्दस में सराहत के साथ मज़कूर है बाक़ी किसी भी महीने का नाम सराहत के साथ मज़कूर नहीं। जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने इरशाद फ़रमायाः "شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِیْ اُنْزِلَ فِیْهِ الْقُرْاٰنُ" रमज़ान का महीना जिसमें कुरआन नाज़िल हुआ।

माहे रमज़ान में कुरआने मुक़द्दस नुज़ूल हुआ जैसा कि मज़कूरा बाला आयत में है।

☆ इसी माह में शबे क़द्र है, जिसका क़याम (इबादत व शब बेदारी) हज़ार महीनों के क़याम से बेहतर है।

☆ हर माह में इबादत के लिए वक़्त मुक़र्रर है मगर इस माह में रोज़ादार का लम्हा-लम्हा इबादत में शुमार होता है।

☆ इस माह में नेकियों का षवाब दस गुना से सात सौ गुना तक बढ़ा दिया जाता है।

☆ नफ़्ल का सवाब फ़र्ज़ के बराबर और फ़र्ज़ का सवाब सत्तर फ़र्ज़ के बराबर हो जाता है।

☆ अल्लाह तआ़ला इस माह में अपने बंदों पर ख़ुसूसी तवज्जह फ़रमाता है।

☆ जन्नत के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं।

☆ जहन्नम के दरवाज़े बंद कर दिए जाते हैं।

☆ आसमान के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं और बंदों की जाइज़ दुआऐं बाबे इजाबत तक बिल्कुल आसानी के साथ पहुंच जाती है।

☆ हज़रत इब्राहीम علیہ الصلوٰۃ والسلام के सहीफे इसी माह की एक तारीख़ को नाज़िल हुए।

☆ तौरेत शरीफ इसी माह की 6 तारीख को नाज़िल हुई।

☆ इंजील शरीफ़ इसी माह की 13 तारीख को नाज़िल हुई।

☆ कुरआन मुक़द्दस इसी माह की चौबीस तारीख को नाज़िल हुआ।

☆ ख़ातूने जन्नत हज़रत फ़ातिमा ज़हरा رضی اللہ عنہا का विसाल इसी माह की 3 तारीख को हुआ।

☆ उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा رضی اللہ عنہا का विसाल इसी माह की 17 तारीख को हुआ।

☆ जंगे बदर इसी माह की 17 तारीख को हुई।

☆ फतहे मक्का इसी माह की 20 तारीख को हुई।

☆ हज़रत अली मुश्किल कुशा शेरे ख़ुदा رضی اللہ عنہ की शहादत इसी माह की 21 तारीख को हुई।

फ़ज़ाइले माहे रमज़ान

हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इरशाद फ़रमायाः "اِذَا جَاءَ رَمَضَانُ فُتِحَتْ اَبْوَابُ الْجَنَّةِ" यानी जब रमज़ान का महीना आता है तो जन्नत के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं।

(बुख़ारी शरीफ़ः ज.1, स. 255)

माहे रमज़ान और रहमते रहमान

नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमायाः अल्लाह तआ़ला रमज़ान की हर शब को बवक़्ते इफ़्तार एक लाख दोज़ख़ियों को दोज़ख़ से आज़ाद फ़रमाता है और वह दोज़ख़ी ऐसे होते हैं कि उन पर अज़ाब वाजिब हो चुका होता है, जब रमज़ान की आख़री शब होती है तो उसमें इतनी तादाद में आज़ाद फ़रमाता है जितनी तादाद में रमज़ान की पहली शब से लेकर आख़री तक आज़ाद कर चुका होता है।

मक्का मुअ़ज़्ज़मा में माहे रमज़ान

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضی اللہ تعالیٰ عنہما से रिवायत है कि हुज़ूर शाफ़िए योमुन्नुशूर ﷺ ने इर्शाद फ़रमायाः जिसने मक्का में रमज़ान पाया और रोज़ा रखा और रात में जितना हो सका क़याम किया (नवाफ़िल पढ़े) तो अल्लाह عزوجل उसके लिए दूसरी जगह की बनिस्बत एक लाख रमज़ान का सवाब लिखेगा और हर दिन एक ग़ुलाम आज़ाद करने का सवाब और हर रोज़ जिहाद में घोड़े पर सवार कर देने का सवाब और हर दिन में हसना और हर रात में हसना लिखेगा। (बहारे शरीअत)

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! अगर अल्लाह तआ़ला ने आपको इस्तिताअत बख़्शी है तो मक्का मुअज़्ज़मा और मदीना मुनव्वरा में माहे रमज़ानुल मुबारक गुज़ारने की कोशिश करो। अल्लाह तआ़ला की बारगाह में दुआ है कि हमें इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन

शैतान क़ैद में

हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि नबी करीम रऊफ़ व रहीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमायाः जब माहे रमज़ान आता है तो आसमान के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं, जहन्नम के दरवाज़े बंद कर दिए जाते हैं

और शैतानों को क़ैद कर दिया जाता है। (बुख़ारीः 255.1)

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! इस हदीष में इस बात का भी बयान है कि शैतानों को रमज़ान के महीना में क़ैद कर दिया जाता है, इस पर सवाल पैदा होता है कि जब शैतानों को क़ैद कर दिया जाता है तो फिर क्यों लोग रमज़ान के महीने में गुनाह करते हैं? इस सवाल के मुतअद्दिद जवाबात दिये गए हैं।

अव्वलः यह कि बड़े-बड़े शयातीन को क़ैद कर दिया जाता है और छोटे छोटे शैतान खुले फिरते हैं, जिनकी वजह से लोग गुनाह करते हैं। जैसा कि दूसरी हदीष में इरशाद हुआ "صُفِّدَتْ مَرَدَةُ الشَّيَاطِيْنِ" यानी सरकश और बड़े बड़े शयातीन क़ैद कर दिए जाते हैं।

दौमः यह कि गुमराह करने वाला एक ख़ारजी शैतान और एक दाख़ली शैतान है जिसको "لُمَّةُ شَيْطَانَ قَرِيْنٌ مِّنَ الْجِنِّ" और उर्दू में हमज़ाद कहते हैं, ख़ारजी शयातीन को क़ैद कर दिया जाता है, दाख़ली शैतान को क़ैद नहीं किया जाता है जिसकी वजह से लोग गुनाह में मुबतिला रहते हैं।

सौमः यह कि शैतान के ग्यारह माह बहकाने और वसाविस का अषर इस क़द्र रासिख़ हो जाता है कि उसकी एक माह की ग़ैर हाज़री से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता और लोग बदस्तूर बुराई और गुनाह में मुबतिला रहते हैं। الا ماشاءالله

चहारुमः बुराई में मशग़ूल लोगों को कम अज़ कम इस माह में तो यह तस्लीम कर लेना चाहिए कि उनकी ग़लतकारियों और बे राह रवियों में शैतान के वसवसे से ज़्यादा ख़ूद उनकी ज़ात और बुरे इरादों का दख़ल है क्योंकि इस माह में जब शयातीन मुक़य्यद कर दिए जाते हैं और वह लोग फिर भी बुराइयों और बुरे कामों से बाज़ नहीं आते, हद तो यह है कि बाज़ जगहों पर रात भर जुआ और लहवो-लइब का बाज़ार गर्म होता है (जैसे कि रमज़ान इसी लिए आया हो!) और सहरी के फौरन बाद लोग ख़्वाबे ग़फ़लत का शिकार होकर नमाज़े फ़ज्र को भी तर्क कर देते हैं लिहाज़ा उनकी बुराई और बुरे कामों के वह ख़ूद ज़िम्मेदार हैं।

रहमत, मग़फ़िरत और आग से आज़ादी

हदीष शरीफ़ में है कि हुज़ूर ताजदारे मदीना राहते क़ल्ब व सीना ﷺ ने इरशाद फ़रमाया रमज़ान ऐसा महीना है जिसका अव्वल रहमत है,

उसके दर्मियान में बख़्शिश है और उसके आख़िर में आग से आज़ादी है।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! मज़कूरा हदीष शरीफ़ में रमज़ानुल मुबारक की बर्कत और बुज़ुर्गी का ज़िक्र किया गया है, जिससे रमज़ानुल मुबारक की एहमियत और फ़ज़ीलत ज़ाहिर होती है, माहे रमज़ान में रोज़ा रखना, इफ़तारी करना और करवाना, क़यामुल्लैल करना और दिन के वक़्त भूक और प्यास से सब्र व ज़ब्त और हर बुरी चीज़ से परहेज़ करना, यह तमाम अफ़आल वह हैं जो हम गुनाहगार मुसलमानों की बख़्शिश और नजात का वसीला हैं।

हयाते इंसानी के तीन अदवार और रमज़ानुल मुबारक के तीन अशरे

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! अगर्चे इंसान की हयात बेशुमार मराहिल से गुज़र कर इर्तिक़ाए मराहिल तय करती हुई अपनी इंतिहा को पहुंचती है लेकिन हयात के तीन दोर क़ाबिले ज़िक्र हैं।

पहला दोर दुनिया की ज़िंदगी है जिसका तअल्लुक़ रूह और जिस्म से वाबस्ता है और ज़िंदगी का यह दोर पैदाइश से लेकर मौत तक है, इस दोर में हर इंसान अपनी रूह और जिस्म दोनों को पुरसुकून तरीक़े से माद्दी आसाइश पहुंचाना चाहता है और मसाइब व आलाम से नजात चाहता है।

हयात का दूसरा मरहला मोत से लेकर क़यामत तक का है जिसे आलमे बर्ज़ख़ कहा जाता है, ज़िंदगी के इस मरहले की हक़ीक़त अल्लाह तआ़ला ही को मालूम है, सिवाए उसके कि जितना इल्म अल्लाह तआ़ला ने इंसान को दिया है, सिर्फ़ इसी हद तक इंसान इस मरहले के बारे में जानता है।

तीसरा मरहला क़यामत के बाद न ख़त्म होने वाली ज़िंदगी है, यह ज़िंदगी हिसाब व किताब के बाद जज़ा के तोर पर जन्नत की सूरत में या सज़ा के तारे पर दोज़ख़ की सूरत में होगी।

रोज़ा ऐसी इबादत है कि नबी करीम ﷺ के इर्शाद के मुताबिक़ ज़िंदगी के उन तमाम मराहिल में कारआमद षाबित होता है। रमज़ान का पहला अशरा रहमत का है जो ज़िंदगी के ख़ुसूसन् पहले

मरहले में अशद ज़रूरी है।

दूसरा अशरा मग़फ़िरत का है जो ज़िंदगी के दूसरे मरहले के लिए कारआमद है कि उसकी वजह से क़ब्र में राहत मिलेगी और तीसरा अशरा जहन्नम से आज़ादी का है जो ज़िंदगी के तीसरे मरहले में कारआमद है। तो गोया जिसने रमज़ान के पूरे माह के रोज़े रखे उसे ज़िंदगी के तमाम मराहिल में राहत व सुकून मयस्सर आएगा। रब्बे क़दीर हमें तौफ़ीक़ अता फ़रमाए

आँखों की तकलीफ़ दूर

जो शख़्स माहे रमज़ानुल मुबारक का चाँद देख कर हम्द व षना बजा लाए और सात मर्तबा सूरए फ़ातिहा पढ़ ले तो उसे महीना भर आंखों में किसी भी क़िस्म की शिकायत नहीं होगी।

(नुज़हतुल मजालिसः ज.1, स. 575)

फ़रिश्तों में फ़ख़्र

हज़रत अली मुर्तुज़ा رضی اللہ عنہ से मरवी है कि नबी करीम ﷺ इर्शाद फ़रमाते हैं कि जब तुम महीने के आग़ाज़ पर चाँद देखो तो यह दुआ पढ़ लिया करो "وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ خَلَقَکَ وَ قَدَّرَلَکَ مَنَازِلَ وَ جَعَلَکَ آیَةً لِّلْعٰلَمِیْنَ" तो अल्लाह तआ़ला फ़रिश्तों में इज़हारे फ़ख़्र फ़रमाएगा और कहेगा मेरे फ़रिश्तों! गवाह रहो मैं ने अपने बंदे को दोज़ख़ से आज़ाद कर दिया। (नुज़हतुल मजालिसः ज.1, स.575)

नूर का शहर

नबी अकरम नूरे मुजस्सम ﷺ ने इर्शाद फ़रमायाः जो शख़्स माहे रमज़ानुल मुबारक में इबादत पर इस्तिक़ामत इख़्तियार करता है अल्लाह तआ़ला उसे हर रकअ़त पर नूर का एक शहर इनाम देगा।

बख़्शिश का ज़िम्मा

नबीए कोनैन साहिबे क़ाब क़ोसैन ﷺ ने इर्शाद फ़रमायाः जो शख़्स माहे रमज़ानुल मुबारक में अपने वालिदैन की ख़िदमत अपनी इस्तिताअत के मुताबिक़ सर अंजाम देता है अल्लाह तआ़ला उस पर ख़ुसूसी नज़रे रहमत फ़रमाता है और उसकी बख़्शिश का मैं ज़िम्मा लेता

हूँ। और जो औरत माहे रमज़ानुल मुबारक में अपने ख़ाविंद की रज़ा जोई में मसरूफ़ रहती है अल्लाह तआ़ला उसे जन्नत में हज़रत मरयम व हज़रत आसिया رضی اللہ عنہما की मईयत (साथ) अता फ़रमाएगा।

(नुज़हतुल मजालिसः 1.577)

साल का दिल

हुज़ूर नबी अकरम ﷺ ने इर्शाद फ़रमायाः माहे रमज़ानुल मुबारक साल का दिल है, जब यह दुरुस्त रहा तो पूरा साल दुरुस्त रहेगा।

आफ़ात से महफ़ूज़

किताबुल बरकत में हज़रत मसऊदी رحمۃ اللہ علیہ से मरवी है कि जो माहे रमज़ानुल मुबारक की पहली शब सूरए फ़तह पढ़ता है वह साल भर हर क़िस्म की आफ़ात व बलय्यात से महफ़ूज़ रहता है।

अज़ाब से छुटकारा का ज़रिया

शेरे ख़ुदा मुश्किल कुशा हज़रत अली मुरतज़ा رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं कि अगर अल्लाह तआ़ला को उम्मते मुहम्मदिया को अज़ाब से दोचार करना होता तो उसे माहे रमज़ान और सूरए इख़्लास कभी अता न फ़रमाता।

बाज़ बुज़ुर्गाने दीन से मंक़ूल है कि हज़रत जिब्रील علیہ الصلوٰۃ والسلام आसमान वालों के लिए अमान हैं और सैयदे आलम ﷺ ज़मीन वालों के लिए और माहे रमज़ानुल मुबारक नबी करीम ﷺ की उम्मत के लिये अमान है।

माहे रमज़ान के एहतिराम का इनाम

बुख़ारा के शहर में एक मजूसी (आग की पूजा करने वाले) का लड़का मुसलमानों के बाज़ार में रमज़ान के महीने में खाना खा रहा था, यह देख कर उसके बाप ने अपने लड़के के मुंह पर तमांचा मारा और सख़्त नाराज़ हुआ, लड़के ने कहाः अब्बा जान! तुम भी तो रमज़ान में हर रोज़ दिन के वक़्त खाते रहते हो! बाप ने कहा, वाक़ई मैं रोज़ा नहीं रखता और खाना भी खाता हूँ मगर ख़ुफ़िया तोर पर घर बैठ कर खाता हूँ, मुसलमानों के सामने नहीं खाता हूँ! इस माहे मुबारक का एहतराम

करता हूँ।

कुछ अरसे के बाद उस मजूसी का इंतिक़ाल हो गया तो बुख़ारा के किसी नेक आदमी ने उसे ख़्वाब में देखा कि वह जन्नत में टहल रहा है, उन्होंने मजूसी से पूछा तू जन्नत में कैसे दाख़िल हो गया? तू तो मजूसी था! उसने कहा, वाक़ई मैं मजूसी था मगर मौत का वक़्त क़रीब आया तो माहे रमज़ान के एहतेराम की बरकत से अल्लाह तआ़ला ने मुझे इस्लाम लाने की तौफ़ीक़ दी और मैं मुसलमान होकर मरा और यह जन्नत रमज़ान के एहतराम में इस्लाम मिलने पर अल्लाह तआ़ला ने अता फ़रमाई। (नुज़हतुल मजालिसः स.580 वतग़ैयुर)

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! ग़ोर करो कि एक आतिश परस्त ने माहे रमज़ान का एहतेराम किया तो अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने उसके एवज़ उसे ईमान की दौलते बेबहा से नवाज़ कर जन्नत अता फ़रमा दी तो हम तो मुसलमान हैं अगर हम अय्यामे रमज़ान की क़द्र करेंगे, उसकी हुर्मत को पामाल न करेंगे तो ज़रूर रब्बे क़दीर के फ़ज़्ल व करम के मुस्तहिक़ क़रार पाऐंगे। रब्बे क़दीर की बारगाह में दुआ है कि हम सब को माहे रमज़ान की क़द्र करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

माहे रमज़ान की बेहुर्मती की सज़ा

क़यामत के दिन एक शख़्स को ऐसी हालत में लाया जाएगा कि फ़रिश्ते उसको ख़ूब मार पीट रहे होंगे, रहमते आलम ﷺ से वह सहारा तलाश करेगा, आप उनसे दर्याफ़्त फ़रमाऐंगे, उसका क्या गुनाह है कि इतना मार रहे हो? वह कहेंगे उसने माहे रमज़ानुल मुबारक को पाया मगर फिर भी अल्लाह तआ़ला की नाफ़रमानी पर डटा रहा। हुज़ूर सिफ़ारिश करना चाहेंगे तो हुक्म होगा, मेरे हबीब! ﷺ इसका दावा तो माहे रमज़ान ने किया है, आप ﷺ फ़रमाऐंगे जिसका दावेदार माहे रमज़ान है मैं उससे बेज़ार हूँ। (नुज़हतुल मजालिसः स.580)

ऐ ख़ालिक़े अर्ज़ व समा! अपने महबूब ﷺ के सदक़े हमें माहे रमज़ान का एहतराम करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा और हर उस फेअल से बचा जो माहे रमज़ान की बेहुर्मती का सबब बने। आमीन

हुज़ूर ﷺ माहे रमज़ान कैसे गुज़ारा करते थे

सबसे पहला मामूल आपका यह है कि आप रमज़ानुल मुबारक की आमद से कई अय्याम पहले से ही उसको पाने की दुआ करते रहते। चुनान्चे इमामे तिबरानी की अवूसत में और मुस्नदे बज़्ज़ार में है कि जैसे ही रजब का चाँद तुलूअ़ होता तो आप अल्लाह तआ़ला के हुज़ूर यह दुआ करते "اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِىْ رَجَبٍ وَ شَعْبَانَ وَ بَلِّغْنَا رَمَضَانَ" ऐ अल्लाह! हमारे लिए रजब व शाबान बाबर्कत बना दे और हमें रमज़ान नसीब फ़रमा।

मख़्सूस दुआ का विर्द

जब रमज़ानुल मुबारक शुरू होता तो रहमते आलम ﷺ अल्लाह तआ़ला की बारगाहे अक़्दस में मख़्सूस दुआ किया करते और यूँ अर्ज़ करते "اَللّٰهُمَّ سَلِّمْنِىْ مِنْ رَمَضَانَ وَ سَلِّمْ رَمَضَانَ لِىْ وَ سَلِّمْهُ مِنِّى" ऐ अल्लाह! عزوجل! मुझे रमज़ान के लिए सलामती (सहत व तंदुरस्ती) अता फ़रमा और मेरे लिए रमज़ान (के अव्वल व आख़िर को बादल वग़ैरा से) महफ़ूज़ फ़रमा और मुझे इसमें अपनी नाफ़रमानी से महफ़ूज़ फ़रमा।

रंग मुबारक फ़क़ हो जाता

जब रमज़ानुल मुबारक आता तो इस ख़ौफ़ के पेशे नज़र कि कहीं किसी मुश्किल की वजह से इसमें हक़्क़े अबूदियत में कमी न हो जाए, आपका रंग मुबारक फ़क़ हो जाता। चुनान्चे उम्मुल मोमिनीन सैयदा आइशा सिद्दीक़ा رضی اللہ عنہا से रिवायत है कि रसूल ﷺ की यह कैफ़ियत थी "اِذَا دَخَلَ رَمَضَانُ تَغَيَّرَ لَوْنُهٗ" जब रमज़ानुल मुबारक शुरू होता तो आपका रंग फ़क़ हो जाता।

सहाबा को मुबारकबाद देते

जब यह मुक़द्दस व मुबारक माह अपनी रहमतों के साथ साया फ़गन होता तो ग़मख़्वारे उम्मत शफ़ीए रहमत ﷺ को उसकी आमद की मुबारकबाद देते, चुनान्चे इमाम अहमद और इमाम निसाई ने हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से आपका मुबारक मामूल इन अल्फ़ाज़ में नक़ल

किया है "كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُبَشِّرُ اَصْحَابَهٗ يَقُوْلُ جَآءَ كُمْ شَهْرُ رَمَضَانَ شَهْرٌ مُّبَارَكٌ كَتَبَ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ صِيَامَهٗ تُفْتَحُ فِيْهِ اَبْوَابُ الْجِنَانِ وَ تُغْلَقُ فِيْهِ اَبْوَابُ الْجَحِيْمِ وَ تُغَلَّقُ فِيْهِ الشَّيَاطِيْنُ فِيْهِ لَيْلَةٌ خَيْرٌ مِّنْ اَلْفِ شَهْرٍ مَّنْ حُرِمَ خَيْرَهَا فَقَدْ حُرِمَ" हुज़ूर ﷺ अपने सहाबा को यह करते हुए मुबारकबाद देते कि तुम पर रमज़ान का महीना जल्वा फ़गन हुआ है जो निहायत बाबर्कत है, उसके रोज़े तुम पर अल्लाह ने फ़र्ज़ फ़रमाए हैं, इसमें जन्नत के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं और दोज़ख़ के दरवाज़े बंद कर दिए जाते हैं, शैतानों को बांध दिया जाता है, इसमें एक रात है जो हज़ार महीनों से अफ़ज़ल है, जो इससे महरूम हो गया वह महरूम ही रहेगा।

इमाम जलालुद्दीन सियुती और शैख़ इब्ने रजब علیہما الرحمہ कहते हैं मस्अलाए मुबारकबाद के लिए यह हदीष बुनियाद है "هٰذَا الْحَدِيْثُ اَصْلٌ فِيْ تَهْنِئَةِ شَهْرِ رَمَضَانَ" रमज़ानुल मुबारक की मुबारकबाद पेश करने पर यह हदीष अस्ल है। (अलहावी लिलफ़तावा, 1.193)

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! वह माह मोमिन के लिए क्यों मुबारकबाद का सबब न होगा जिसमें जन्नत के दरवाज़े खुल जाऐं, शैतान पर पाबंदियाँ लग जाऐं और दोज़ख़ के दरवाज़े बंद कर दिए जाऐं। लिहाज़ा हमें भी अदाए सुन्नत की नियत से इस्लामी भाइयों, दोस्त व एहबाब को मुबारकबाद पेश करना चाहिए।

रमज़ानुल मुबारक को ख़ुश आमदिद कहते

सहाबा को मुबारकबाद और उसकी एहमियत वाज़ेह करने के साथ साथ रमज़ानुल मुबारक को ख़ुश आमदीद फ़रमाते। कंज़ुल उम्माल और मजमउज़-ज़वाइद में है, आप फ़रमाते "اَتَاكُمْ رَمَضَانُ سَيِّدُ الشُّهُوْرِ فَمَرْحَباً وَّ اَهْلاً" लोगो! तुम्हारे पास रमज़ान तमाम महीनों का सरदार आ गया, हम उसे ख़ुश आमदिद कहते हैं। (मजमउज़ ज़वाइद,3.140)

आमदे रमज़ान पर ख़ुत्बा इर्शाद फ़रमाते

जिस दिन रमज़ानुल मुबारक का चाँद तुलूअ होने की उम्मीद होती और शाबान का आख़री दिन होता तो आप मस्जिदे नबवी में सहाबाए किराम को जमा फ़रमा कर ख़ुत्बा इर्शाद फ़रमाते जिसमें रमज़ानुल मुबारक

के फ़ज़ाइल, वज़ाइफ़ और एहमियत को उजागर फ़रमाते ताकि उसके शब व रोज़ से ख़ूब फ़ायदा उठाया जाए और उसमें ग़फ़लत हरगिज़ न बरती जाए, उसके एक एक लम्हा को ग़नीमत जाना जाए।

हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ ने आपके इस एहम मामूल को अपने अल्फ़ाज़ में बयान है "لَمَّا حَضَرَ رَمَضَانُ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم قَدْ جَآئَكُمْ رَمَضَانُ شَهْرٌ مُّبَارَكٌ" जब रमज़ानुल मुबारक का माह आता तो आप फ़रमाया करते, तुम्हारे पास एक मुक़द्दस माह की आमद हो गई।

(मुस्नदे अहमद, 3. 158)

इस्तक़बालिया ख़ुत्बा की तफ़सील

कुतुबे अहादीस में रमज़ानुल मुबारक की आमद के मोक़े पर हुज़ूर ﷺ के फ़रमूदा ख़ुत्बा की तफ़सील भी मिलती है जिसका तर्जुमा हम तहरीर करते हैं।

हज़रत सलमान फ़ारसी رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि नबी-ए-अकरम ﷺ ने हम को शाबान के आख़री दिन ख़ुत्बा दिया, फ़रमायाः ऐ लोगो!

☆ एक बहुत ही मुबारक माह तुम पर साया फ़गन होने वाला है। इसमें एक रात ऐसी है जो हज़ार महीनों से बेहतर है।

☆ अल्लाह तआ़ला ने उसके रोज़ों को फ़र्ज़ और रात के क़याम को नफ़ल क़रार दिया है।

☆ जो शख़्स किसी नेकी के साथ अल्लाह तआ़ला की तरफ़ क़ुर्ब चाहे उसको इस क़दर षवाब होता है गोया उसने दूसरे माह में फ़र्ज़ अदा किया।

☆ जिसने रमज़ान में फ़र्ज़ अदा किया उसका षवाब इस क़दर है गोया उसने रमज़ान के अलावा दूसरे महीनों में सत्तर फ़र्ज़ अदा किए।

☆ वह सब्र का महीना है और सब्र का षवाब जन्नत है।

☆ वह लोगों के साथ ग़मख़्वारी का महीना है।

☆ इस महीना में मोमिन का रिज़्क़ बढ़ा दिया जाता है।

☆ जो इसमें किसी रोज़ादार को इफ़तार कराए उसके गुनाह माफ़

कर दिए जाते हैं और उसकी गर्दन आग से आज़ाद कर दी जाती है और उसको भी इसी क़दर षवाब मिलता है इससे रोज़ादार के सवाब में कुछ कमी नहीं आती।

इस पर सहाबा ने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल! ﷺ हम में से हर एक में यह ताक़त कहाँ के रोज़दार को सैर करके खिलाए। इस पर आपने फ़रमाया यह सवाब तो अल्लाह उसे भी अता फ़रमाएगा जो एक खजूर या एक घूंट पानी या एक घूंट दूध पिला दे।

☆ जिसने किसी रोज़ादार को इफ़्तारी के वक़्त पानी पिलाया अल्लाह तआ़ला (रोज़े क़यामत) मेरे होज़े कौषर से उसे वह पानी पिलाएगा जिसके बाद दख़ूले जन्नत तक प्यास नहीं लगेगी।

☆ यह ऐसा महीना है जिसका अव्वल रहमत है, उसके दर्मियान में बख़्शिश है और उसके आख़िर में आग से आज़ादी है।

☆ जो शख़्स इसमें अपने गुलाम का बोझ हलका करे अल्लाह तआ़ला उस्को बख़्श देता है और आग से आज़ाद कर देता है।

(मिशकात शरीफः स.173, 174)

रमज़ान का इस्तक़बाल किस तरह करें?

मस्नून है कि 29 शाबानुल मुअ़ज़्ज़म को बाद नमाज़े मग़रिब चाँद देखा जाए, चाँद नज़र आ जाए तो दूसरे दिन से रोज़ा रखा जाए और अगर नज़र न आए तो दूसरे दिन फिर चाँद देखें। अल्लाह तआ़ला ने इर्शाद फ़रमायाः "وَ يَسْئَلُوْنَكَ عَنِ الْاَهِلَّةِ قُلْ هِيَ مَوَاقِيْتُ لِلنَّاسِ وَ الْحَجِّ" "ऐ महबूब! लोग आपसे चाँद के बारे में पूछते हैं, आप फ़रमा दीजिए कि वह लोगों और हज के लिए वक़्त की अलामत है।" लिहाज़ा चाँद ही ज़रिया हमें रमज़ान की शुरूआत और इख़्तिताम का इल्म हो सकता है तो हमें चाँद देख कर ही रोज़ा रखना चाहिए।

जैसा कि नबी करीम ﷺ ने रमज़ान का ज़िक्र करते हुए इर्शाद फ़रमाया "لَا تَصُوْمُوْا حَتّٰى تَرَوُا الْهِلَالَ وَ لَا تُفْطِرُوْا حَتّٰى تَرَوْهُ فَإِنْ أُغْمِيَ عَلَيْكُمْ

"فَاقْدِرُوْا لَهٗ" चाँद देख कर रोज़ा रखो और चाँद देख कर इफ़्तार करो, अगर चाँद नज़र न आए तो तीस दिन पूरे करो। (बुख़ारी शरीफ़: 256)

चाँद नज़र आ जाए तो यह दुआ पढ़े "اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُمَّ اَهِلَّهٗ عَلَيْنَا بِالْاَمْنِ وَ الْاِيْمَانِ وَ السَّلَامَةِ وَ الْاِسْلَامِ وَ التَّوْفِيْقِ لِمَا تُحِبُّ وَ تَرْضٰى رَبِّىْ وَ رَبُّكَ اللّٰهُ" अल्लाहु अकबर, ऐ अल्लाह! हम पर यह चाँद अम्न व ईमान और सलामती व इस्लाम के साथ गुज़ार और उस चीज़ की तौफ़ीक़ के साथ जो तुझ को पसंद हो और जिस पर तू राज़ी हो, मेरा रब और तेरा रब अल्लाह है।

रोज़ा कब फ़र्ज़ हुआ?

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! रोज़ा एलाने नबुव्वत के पंद्रहवीं साल यानी दस शव्वाल 2 हि॰ में फ़र्ज़ हुआ।

अल्लाह तबारक व तआला का फ़रमान है "يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ" ऐ ईमान वालो! तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किए गए जैसे कि अगलों पर फ़र्ज़ हुए कि कहीं तुम्हें परहेज़गारी मिले। अल्लाह तआला ने इस आयत में बतौरे ख़ास ज़िक्र फ़रमाया कि यह इबादत सिर्फ़ तुम ही पर फर्ज़ नहीं की जा रही है बल्कि तुम से पहले लोगों पर भी फ़र्ज़ हो चुकी है।

(सूर: बक़र: प.2, आयत 183)

चुनान्चे तफ़्सीरे कबीर व तफ़सीरे अहमदी में है कि हज़रत आदम عليه السلام से लेकर हज़रत ईसा عليه السلام तक हर उम्मत पर रोज़े फ़र्ज़ रहे। चुनान्चे हज़रत आदम عليه السلام पर हर क़मरी महीने की तेरहवीं, चौदहवीं और पंद्रहवीं तारीख़ के रोज़े और हज़रत मूसा عليه السلام की क़ौम पर आशूरा का रोज़ा फ़र्ज़ रहा। बाज़ रिवायतों में है कि सबसे पहले हज़रत नूह عليه السلام ने रोज़ रखे।

सहरी और इफ़्तारी सहर क्या है?

सहर का माअ्ना है "पोशीदगी" जादू और फैफड़े को इसी लिए सहर कहते हैं कि वह छुपे होते हैं, सुब्ह सादिक़ को भी सहर कहने की यही वजह है कि उस वक़्त की रोशनी रात की तारीकी में छुपी होती है।

वक़्ते सहर गीरिया व ज़ारी

अल्लाह तबारक वतआ़ला ने कलामे मजीद में इर्शाद फ़रमाया "وَ الْمُسْتَغْفِرِيْنَ بِالْاَسْحَارِ" और पिछले पहर माफी मांगने वाले। बाज़ मुफस्सिरीन ने फ़रमाया कि इस आयत से नमाज़े तहज्जुद पढ़ने वाले मुराद हैं और बाज़ के नज़दीक इससे वह लोग मुराद हैं जो सुबह उठ कर इस्तिग़फ़ार पढ़ें चूंकि उस वक़्त दुनियावी शोर कम होता है, दिल को सुकून होता है, रहमते इलाही का नुज़ूल होता है। इसलिए उस वक़्त तौबा व इस्तिग़फ़ार, दुआ वग़ैरा बेहतर है।

सहर के वक़्त तौबा व अस्तग़फ़ार करना अल्लाह के बरगुज़ीदा बंदों की आदते करीमा रही है। रोज़ाना की मस्रूफ़ियतों की वजह से हमें सहर के वक़्त उठने का मोक़ा नहीं मिलता कि हम उस वक़्त बारगाहे समदियत में इस्तिग़फ़ार करें लेकिन माहे रमज़ानुल मुबारक में रोज़ाना सहरी के लिए हम बेदार होते हैं तो हमें चाहिए कि कम अज़ कम दो रकअ़त नफ़िल अदा करके बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में सर बसजूद हो जाऐं और इस्तिग़फ़ार करके सहर के वक़्त मग़फ़िरत तलब करने वालों में शामिल हो जाऐं।

तौबा और दुआ की कबूलियत के अव्क़ात

मेरे प्यारे आका ﷺ के प्यारे दीवानो! साल भर में बाज़ औक़ात ऐसे होते हैं जब अल्लाह की रहमत पुकारती है कि है कोई पुकारने वाला कि उसकी पुकार सुनी जाए, है कोई मांगने वाला कि उसका दामने मक़सूद भर दिया जाए! तो अगर कोई बंदा इन अव्क़ात में दुआ करता है तो उसकी दुआ बारगाहे यज़दी में मक़बूल हो जाती है। रात का पिछला पहर जिसे उमूमन तहज्जुद का वक़्त कहा जाता है इस वक़्त भी अल्लाह तबारक व तआ़ला अपने बंदों की दुआ क़ुबूल फ़रमाता है और यह वक़्त क़ुबूलियते दुआ का ख़ास वक़्त हो जैसा कि अल्लाह के प्यारे हबीब साहिबे लौलाक ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया, अल्लाह तबारक व तआ़ला रात के आख़री तिहाई हिस्से में आसमाने दुनिया की तरफ़ मुतवज्जह होता है और फ़रमाता है, "है कोई मांगने वाला जिसको

में अता करूँ! है कोई दुआ करने वाला जिसकी दुआ मैं कुबूल करूँ! है कोई बख़्शिश तलब करने वाला जिसे मैं बख़्श दूँ!'' हत्ता कि सुबह हो जाती है।

तहज्जुद भी पढ़ लें

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! नमाज़े तहज्जुद हुज़ूर रहमते आलम ﷺ की निहायत ही पसंदीदा सुन्नत है, आपने इस पर दवाम बरता है और निहायत ही पाबंदी के साथ इसको अदा फ़रमाया है। वैसे तो हमें भी इस सुन्नत की पाबंदी करने की हमेशा कोशिश करनी चाहिए लेकिन माहे रमज़ानुल मुबारक में उसकी अदाएगी का हमारे पास बेहतरीन मोक़ा है। और वह यह कि सहरी करने के लिए जब हम उठते हैं उससे चंद मिनट पहले उठ कर अल्लाह तआला की बारगाह में नमाज़े तहज्जुद की चंद रकआत पढ़ कर ख़िराजे बंदगी पेश कर दें। इंशा अल्लाहु तआला हमें उसकी बर्कत ज़रूर हासिल होगी।

तहज्जुद का माअ्ना

लफ़्ज़े तहज्जुद ''هَجْدٌ'' या ''هُجُوْدٌ'' से बना है, जिसका माअ्ना है ''कुछ देर सोना'' बाबे तफाउल में आकर इसमें सलबियत का माअ्ना पैदा हो गया, जिसकी वजह से इसमें तर्के नींद यानी जागने का माअ्ना पैदा हो गया है। इस माअ्ना के लिहाज़ से नमाज़े तहज्जुद इसलिए कहेंगे कि वह नींद से बेदार होकर पढ़ी जाती है यानी इसका वक़्त एक नींद सोने के बाद होता है।

नमाज़े तहज्जुद का वक़्त

नमाज़े तहज्जुद का वक़्त नमाज़े इशा के बाद से सहरी के वक़्त के ख़त्म होने तक है मगर उसके लिए शर्त है कि रात में कुछ देर सो कर उठने के बाद ही उसे पढ़ सकते हैं।

नमाज़े तहज्जुद की रकआत

हज़रत इब्ने उमर رضی اللہ عنہ बयान फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह ﷺ से नमाज़े तहज्जुद (की रकआत) के बारे में सवाल

किया तो आपने फ़रमाया, दो दो रकअ़त पढ़ो। (बुख़ारीः ज.1, स.153)

हज़रत इब्ने उमर رضی اللہ عنہما से पूछा गया, दो दो रकअत का क्या मतलब है? तो उन्होंने फ़रमाया, हर दो रकअत के बाद सलाम फैर दो।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! अल्लाह के प्यारे हबीब, रहमते आलम ﷺ ने मज़कूरा हदीष में रकआत की तादाद को किसी अदद के साथ मुक़ैयद न फ़रमाया, फ़क़्त इतनी वज़ाहत फ़रमाई कि दो दो रकअत पढ़ी जाए, कम अज़ कम हमें दो रकअत तो पढ़ ही लेनी चाहिए और अगर अल्लाह तौफ़ीक़ दे तो चार, छ, आठ या जितनी रकआत मुमकिन हों पढ़ लें।

नमाज़े तहज्जुद का फ़ायदा

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! तहज्जुद की नमाज़ अगर हम नमाज़ फ़ज्र से कुछ देर पहले पढ़ें तो इसका हमें एक बहुत ही एहम फ़ायदा मैयस्सर आएगा वह यह कि वह वक़्त फ़रिश्तों की डयूटी के बदलने का होता है, क्योंकि कुछ फ़रिश्ते सुबह फ़ज्र से अस्र तक ज़मीन पर रहते हें और कुछ फ़रिश्ते अस्र से फ़ज्र तक। इसी लिए अल्लाह तआ़ला ने जहाँ नमाज़ों की मुहाफ़िज़त का ज़िक्र फ़रमाया वहाँ नमाज़े अस्र का ख़ुसूसी ज़िक्र फ़रमाया जैसा कि फ़रमाने बारी तआ़ला है। "حَافِظُوْا عَلَى الصَّلَوَاتِ وَ الصَّلٰوةِ الْوُسْطٰى" नमाज़ की मुहाफ़िज़त करो और ख़ुसूसन बीच वाली (अस्र) की। तो जब हम तहज्जुद की नमाज़ पढ़ेंगे तो दिन और रात के दोनों फ़रिश्ते हमें मस्रूफ़े इबादत देखेंगे और दोनों के रजिस्टर में हमारी इबादत लिखी जाएगी। जैसा कि नबी करीम ﷺ ने इरशाद "فَاِنَّ صَلٰوةَ آخِرِ اللَّيْلِ مَشْهُوْدَةٌ" आखिर शब में नमाज़ पढ़ी जाए वह फ़रिश्तों की हाज़री का वक़्त है।

तहज्जुद की रकआत को लंबी करो

हज़रत जाबिर رضی اللہ عنہ कहते हैं कि रसूल ﷺ ने फ़रमायाः वह नमाज़ ज़्यादा फ़ज़ीलत वाली है जिसमें क़याम लंबा हो।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! इसमें हिकमत यह है कि हम क़याम जितना लंबा करेंगे उतनी ज़्यादा कुरआन करीम की आयतें तिलावत करेंगे और कुरआने करीम के हर एक लफ़्ज़ पर दस नेकियाँ

हमारे नाम-ए-आमाल में लिखी जाऐंगी। इस तोर पर हम ढेर सारी नेकियाँ अपने दामन में जमा कर सकेंगे जो कि क़यामत के होलनाक दिन में हमारे काम आ सकेंगी।

सहरी भी सुन्नते रसूल है

सहरी खाना हुज़ूर ﷺ की सुन्नत है। सहरी रोज़ा रखने के वक़्त से पहले आख़री वक़्त में खाई जाए। नबी करीम ﷺ ने इसकी ताकीद फ़रमाई है जैसा कि हज़रत अनस इब्ने मालिक رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं कि रसूले अकरम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया "تَسَحَّرُوْا فَاِنَّ فِی السُّحُوْرِ بَرَکَۃً" सहरी किया करो क्योंकि सहरी में बरकत है। (बुख़ारी शरीफ़, जि.1, स:257)

दूसरी हदीष में आक़ाए नामदार, मदीने के ताजदार ﷺ ने इस तरह फ़रमाया कि हमारे और एहले किताब के रोज़ों के दर्मियान फ़र्क़ सहरी खाने में है। (अबू दावूद, तिर्मिज़ी)

एक और हदीष में रसूल ﷺ ने फ़रमाया कि अल्लाह और उसके फ़रिश्ते सहरी खाने वालों पर दुरूद भेजते हैं।

इसी तरह अल्लाह के प्यारे हबीब ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया दोपहर को थोड़ी देर आराम करके क़यामुल लैल में सहूलत हासिल करो और सहरी खा कर दिन में रोज़े के लिए क़ुव्वत हासिल करो।

मेरे प्यारे ﷺ के प्यारे दीवानो! सहरी ज़रूर खाया करो कि इसमें दारैन की भलाई है, इत्तिबाए सुन्नत भी और रिज़्क़ में इज़ाफ़ा का सबब भी। और आशिक़े रसूल ﷺ के लिए इतना बस है कि फ़लाँ काम मेरे नबी ﷺ ने किया है। रब्बे क़दीर हम सब को अपने प्यारे हबीब ﷺ की प्यारी सुन्नतों पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

रोज़ा की नियत

खाने पीने वग़ैरा से रुक जाना कभी-कभी आदतन, कभी भूक के न होने की बिना पर, कभी मर्ज़ की वजह से और कभी रियाज़त की बिना पर और कभी इबादत के तौर पर होता है, इसलिए ज़रूरी ठहरा

कि रोज़ा रखते वक़्त रोज़ा की नियत कर ले ता कि ख़ालिस इबादत मुतअय्यन हो जाए।

नियत दिल के इरादा को कहते हैं, अगर किसी ने दिल से पक्का इरादा कर लिया कि मैं रोज़ा रख रहा हूँ तो इतना काफ़ी है लेकिन ज़बान से इन अल्फ़ाज़ का दोहरा लेना भी बेहतर है।

"نَوَيْتُ اَنْ اَصُوْمَ غَداً لِلّٰهِ تَعَالٰى مِنْ شَهْرِ رَمَضَانَ هٰذَا"

मैंने यह इरादा किया कि कल रोज़ा रखूँ अल्लाह तआ़ला के लिए इस रमज़ानुल मुबारक का।

रोज़ा के बातिनी आदाब

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! रोज़ा के ज़ाहिरी आदाब तो यही हैं कि सुबह सादिक़ से लेकर ग़ुरूबे आफ़ताब तक खाने पीने और जमअ़ से रुक जाऐं। लेकिन रोज़ा के कुछ बातिनी आदाब भी हैं जिनका लिहाज़ अशद ज़रूरी है। वह यह कि जिस्म के तमाम आज़ा को ख़िलाफ़े शरअ़ बातों के इरतिकाब से बचाया जाए जब भी हम सही मानों में रोज़ो के फ़वाइद से बेहरावर हो सकते हैं और फ़रमाने बारी तआ़ला "لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ" के मुज़द-ए-जाँफ़िज़ा से शाद काम हो सकते हैं लिहाज़ा अब जिस्म के आज़ा के रोज़े की तफ़सील मुलाहिज़ा करो और अमल की कोशिश करो।

झूट से बचो

झूट एक ऐसा गुनाह है कि इस्लाम ही नहीं बल्कि दुनिया के सारे बातिल मज़ाहिब की नज़र में भी उसे गुनाह तसव्वुर किया जाता है। वैसे तो हमें हर हाल में झूट से परहेज़ और गुरेज़ करना चाहिए लेकिन ख़ुसूसी तोर पर माहे रमज़ानुल मुबारक में रोज़े की हालत में हमें झूट से बचना चाहिए क्योंकि अगर हम रोज़ा रख कर भी झूट बोलते हैं तो गोया हमने रोज़ा के मक़सद को फ़रामोश कर दिया। जैसा कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया "مَنْ لَّمْ يَدَعْ قَوْلَ الزُّوْرِ وَ الْعَمَلَ بِهٖ فَلَيْسَ لِلّٰهِ حَاجَةٌ فِىْ اَنْ يَّدَعَ طَعَامَهٗ وَ شَرَابَهٗ" जो शख़्स झूट बोलना और उस पर अमल तर्क न करे तो अल्लाह को कोई ज़रूरत नहीं कि वह अपने खाने पीने को छोड़ दे। (बुख़ारी शरीफ: ज.1, स.255)

नाज़ेबा अल्फ़ाज़ भी ज़बान से अदा न हों

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! बाज़ मालिक अपने नौकरों को, अफसर अपने मातेहतों को, उस्ताज़ अपने शागिर्दों को, माँ-बाप अपनी औलाद को, औलाद अपने माँ-बाप को, बे तकल्लुफ़ दोस्त अपने दोस्तों को ख़्वाह मख़्वाह गालियाँ देने और बुरा भला कहने के आदी होते हैं, हत्ता कि आज के माहोल में उसे बुरा तक तसव्वुर नहीं किया जाता, बाज़ नोजवानों का तकिया कलाम ही गाली होता है, उनकी हर बात गाली गलोच और नाशाइस्ता अल्फ़ाज़ से शुरू होती है। मगर याद रखो! माहे रमज़ानुल मुबारक इन चीज़ों से भी हमें पाक करने के लिए आता है जिससे किसी मुसलमान को अदना दरजा की भी तकलीफ़ हो। माहे रमज़ानुल मुबारक में रोज़े की हालत में इन चीज़ों से परहेज़ करने की कोशिश करें, इंशाअल्लाह तआ़ला! उसी की बरकत से हमेशा के लिए इस क़िस्म के अल्फ़ाज़ से बचने का जज़्बा और ज़ौक़ दिल में पैदा होगा।

ग़ीबत से परहेज़

रसूले अकरम नूरे मुजस्सम ﷺ के ज़माना में दो औरतों ने रोज़ा रखा और ऐसा हुआ कि उन्हें इस क़दर प्यास लगी कि जान का ख़तरा पैदा हो गया, आख़िर रसूले अकरम ﷺ से रोज़ा तोड़ने की इजाज़त मांगी, आपने एक प्याला उनके पास भेजा और फ़रमाया कि उन्हें कहो जो कुछ खाया है वह इसमें क़ै कर दें, लिहाज़ा उनकी क़ै में ख़ून और जमे हुए ख़ून के टुकड़े थे। लोगों को इस पर बेहद तअज्जुब हुआ तो आपने फ़रमायाः इन दोनों औरतों ने उस चीज़ से सहरी की जिसे अल्लाह ने हलाल किया है और फिर उस चीज़ से तोड़ डाला जिसे अल्लाह ने हराम फ़रमाया है यानी ग़ीबत में मशग़ूल हो गईं।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! ग़ीबत ऐसा सख़्त तरीन गुनाह है कि अल्लाह तबारक व तआ़ला ने इसे ''अपने मुर्दार भाई का गोश्त खाने'' से ताबीर फ़रमाया है, जैसा कि फ़रमाने बारी तआ़ला "وَ لَا يَغْتَبْ بَّعْضُكُمْ بَعْضاً اَيُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ يَّاْكُلَ لَحْمَ اَخِيْهِ مَيْتاً فَكَرِهْتُمُوْهُ" और कोई शख़्स एक दूसरे की ग़ीबत न करे क्या तुम में से कोई यह पसंद करेगा

कि अपने मुर्दार भाई का गोश्त खाए, वह तो तुम्हें नापसंद है।

लिहाज़ा हमें हमेशा और ख़ुसूसन माहे रमज़ानुल मुबारक में रोज़े की हालत में ग़ीबत से बचने की कोशिश करनी चाहिए।

किसी का दिल न दुखाओ

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! रोज़ा रख कर हमें दिल आज़ारी से भी परहेज़ करना चाहिए। दिल आज़ारी कई तरीक़ों से होती है, किसी को उलटे सीधे नामों से पुकारना, किसी का मज़ाक़ उड़ाना, किसी पर जुमले कसना, किसी के ऐब के साथ उसे मंसूब करना, किसी का कोई सामान इधर-उधर करके सताना वग़ैरा यह सब दिल आज़ारी की सूरतें हैं। रोज़ा रख कर हमें इन सब चीज़ों से कोसों दूर रहने की कोशिश करनी चाहिए। क्योंकि रोज़ा का एक मक़सद "एक दूसरे की तकालीफ़ का एहसास" और "आपस में प्यार और महब्बत पैदा करना है"। कॉलेजों, स्कूलों और मदरसों के तलबा और फैक्ट्रियों में काम करने वाले मज़दूरों में यह वबा आम है कि वह एक दूसरे का ख़ूब तमस्ख़ुर उड़ाते हैं। इन्हें जानना चाहिए कि वह जो कुछ कर रहे हैं वह रोज़ा की रूहानियत के ख़िलाफ़ है।

अल्लाह عزوجل हम सब को ख़िलाफ़े शरअ़ कामों से बचाए। आमीन

कानों की हिफ़ाज़त करो

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! यूँ तो कानों को हर हाल में बुरी बातों को सुनने से बचाना लाज़िम है मगर रोज़ा की हालत में इसकी तरफ़ ख़ास तवज्जह देनी चाहिए। एक बुज़ुर्ग का क़ौल है कि जिस्म के हर अज़ू का रोज़ा होता है और कानों का रोज़ा यह है कि कान को बुरी और फ़ुज़ूल बातों के सुनने से बचाया जाए क्योंकि बुरी बातें सुनने का दिल पर बहुत गहरा अषर होता है जिससे इंसानी ख़्यालात में गुनाहों की तरफ़ रग़बत पैदा होती है। रोज़ादार के लिए ज़रूरी है कि ग़ीबत, झूटी बातें, लतीफ़े, फिल्मी स्टोरियाँ, फिल्मी गानें और फ़ुहश बातें न सुने क्योंकि शरीअत में जिन बातों का कहना जाइज़ नहीं उनका सुनना भी जाइज़ नहीं है। नअ़ते रसूल ﷺ और क़ुरआने

मुक़द्दस की तिलावत सुनें, सुनी इजतिमाआत में हाज़िर होकर ज़िक्रे ख़ुदा عزوجل व रसूल ﷺ सुनें। इंशाअल्लाह! दिल की दुनिया रोशन होगी और रोज़ा के रूहानी फायदे हासिल होंगे।

निगाहों की हिफ़ाज़त

जैसा मज़कूर हुआ कि असल रोज़ा जिस्म के हर अज़ू को गुनाहों से बचाना है, हालते रोज़ा में हमें अपनी निगाहों की भी हिफ़ाज़त करनी लाज़िम है। अपनी आंखों को ग़ैर महरम औरतों, टी.वी., नाच गाना, फ़िल्म, उरियाँ तसवीरें देखने से बचाना होगा क्योंकि इन चीज़ों को देखने से दिल में गुनाह करने का ख़्याल पैदा होता है और वह हमारे रोज़ा की रूहानियत को मुर्दा कर देता है। लिहाज़ा मज़कूरा बाला चीज़ों से अपनी निगाहों की हिफ़ाज़त करें। अगर कुछ देखना चाहें तो कुरआने मुक़द्दस को देखें, मुक़ामाते मुक़द्दसा की ज़ियारत करें, वालदैन को महब्बत भरी निगाह से देखें और पढ़ना चाहें तो कुरआने मुक़द्दस और दीनी किताबें पढ़ें। इंशाअल्लाहु तआ़ला बेशुमार दीनी व दुनियावी फ़वाइद हासिल होंगे।

दिल की हिफ़ाज़त

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! रोज़ा का तक़ाज़ा यह भी है कि हमारे दिल में हर तरह के गुनाह से बचने का जज़्बा पैदा हो। इंसान जो भी गुनाह करता है पहले इसका तसव्वुर उसके दिल में पैदा होता है और फिर वह उसे कर गुज़रता है। अल्लाह के प्यारे हबीब ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया, "इंसान के बदन में गोश्त का एक ऐसा टुकड़ा है कि अगर वह सही हो तो पूरा बदन सही रहेगा और अगर वह फ़ासिद हो जाए तो पूरा बदन फासिद हो जाएगा, वह दिल है।" लिहाज़ा हमें अपने दिल को ग़ल्त ख़्यालात और बुरे वसवसों से बचाना चाहिए।

इफ़तार का बयान

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! जब बंदा दिन भर सब्र व ज़ब्त का मुज़ाहेरा करके रोज़ा को मुकम्मल करता है और मग़रिब का

वक़्त आता है तो वह हलाल चीज़ें जो उसके लिए रोज़ा की हालत में हराम कर दी गई थीं अब फिर से हलाल हो जाती हैं, और मौला का बंदों पर इतना एहसान होता है कि माहे रमज़ानुल मुबारक में अपने बदों का रिज़्क़ बढ़ा देता है, इस माह में अमीर हों या ग़रीब सारे लोग इफ़तारी के लिए अच्छे से अच्छा एहतमाम करते हैं। अब इफ़तार के तअल्लुक़ से चंद बातें पेश की जाती हैं ताकि मज़ीद एहतेमाम के साथ इफ़तार करने और दूसरों को इफ़तार कराने का जज़्बा हमारे दिलों पैदा हो।

इफ़तार का माअ्ना

लफ़्ज़ इफ़तार या तो "فِطْرَة" से बना है जिसका माअ्ना है आदत, इस माअ्ना के लिहाज़ से उसे इफ़तार इसलिए कहेंगे कि इफ़तार के बाद इंसान को उसकी आदत के मुताबिक़ खाने पीने और दीगर आमाल करने की इजाज़त मिल जाती है जिन्हें वह हालते रोज़ा में नहीं कर सकता था।

या तो "فِطَرَة" से बना है जिसका माअ्ना है शिगाफ़ पड़ना, सुराख़ होना। इस माअ्ना के लिहाज़ से इफ़तार को इसलिए इफ़तार कहते हैं कि दो रोज़ों के दर्मियान इफ़तार के ज़रिये शिगाफ़ हो जाता है।

इफ़तार के वक़्त दुआ का एहतेमाम

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! यह कभी आपने सोचा कि बंदा पाँचों वक़्त नमाज़ के बाद दुआ करता है, जुम्अतुल मुबारक की नमाज़ और बड़ी रातों में दुआ करता है लेकिन दुआ की क़ुबूलियत का जो यक़ीन और एहतेमाम माहे रमज़ान शरीफ़ में इफ़तार के वक़्त होता है वह किसी और वक़्त में नहीं होता। आप देखते होंगे कि एक रोज़ादार तिजारत की मंडी में अगर बैठा है तो वह इफ़तार से चंद मिनट पहले सब काम छोड़ कर निहायत ही ख़ुशूअ़ और ख़ुज़ूअ के साथ मस्रूफ़े दुआ हो जाता है। इसी तरह घरों में ख़वातीन और बच्चे, मस्जिद में नमाज़ी और इमाम सबके सब दुआ में मस्रूफ़ हो जाते हैं। आख़िर वक़्ते इफ़तार दुआ का इतना एहतेमाम क्यों किया जाता है?

वजह ज़ाहिर है कि सुबह सादिक से लेकर ग़ुरूब आफ़ताब तक

ख़शिय्यते रब्बानी के तसव्वुर में डूब कर बंदे ने अपने वजूद को तीन चीज़ों से रोके रखा है, जो सिर्फ़ और सिर्फ अल्लाह की रज़ा की ख़ातिर और अल्लाह के ख़ौफ़ की वजह से उसके एहकाम की बजा आवरी में बंदा इख़लास के साथ यह वक़्त गुज़ारता है, इसी लिए बंदे को पूरा यक़ीन होता है कि मैंने फ़रमांबर्दारी में कोई कमी नहीं की तो अब इफ़तार के वक़्त में जो भी दुआ अपने रब से करूंगा मौला ज़रूर क़ुबूल फ़रमाएगा। जैसा कि हुज़ूर नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमायाः तीन आदमियों की दुआ रद्द नहीं की जाती। रोज़ादार की इफ़तारी के वक़्त, आदिल बादशाह की और मज़लूम की दुआ। (तिर्मिज़ी व इब्ने माज़ा)

इफ़तार और नबी करीम की सुन्नते मुबारका

सुन्नत यह है कि इफ़तार में जल्दी की जाए यानी जूँ ही इफ़तार का वक़्त हो जाए बिला ताख़ीर इफ़तार कर ली जाए। एक हदीष में है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमायाः जब रात आए और दिन चला जाए और सूरज पूरे तोर पर छुप जाए तो अब रोज़ादार अपना रोज़ा इफ़तार करे। (बुख़ारीः जि.1, स. 262)

एक और हदीष में है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फरमाया ''दीन उस वक़्त तक ग़ालिब रहेगा जब तक लोग इफ़तार में जल्दी करते रहेंगे क्योंकि यहूद व नसारा इफ़तार में ताख़ीर करते थे।''

(अबू दाऊदः स. 321)

एक और हदीष में है कि रसूले अकरम नूरे मुजस्सम ﷺ ने फ़रमायाः अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि मुझे अपने बंदों में सबसे ज़्यादा पसंद वह है जो इफ़तार में जल्दी करने वाला हो।

(तिर्मिज़ीः जि.1, स. 150)

इफ़तार की फ़ज़ीलत

हज़रत शम्सुद्दीन दारानी قدس سره फ़रमाते हैं कि मैं दिन को रोज़ा रखूँ और रात को हलाल लुक़मा से इफ़तार करूँ मुझे ज़्यादा महबूब है कि रात दिन नवाफ़िल पढ़ते गुज़ारूँ।

किस चीज़ से इफ़तार करे

हज़रत सलमान बिन आमिर رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसुलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमायाः जब तुम में कोई रोज़ा इफ़तार करे तो खजूर या छुआरे से इफ़तार करे (कि वह बरकत है) और अगर न मिले तो पानी से कि वह पाक करने वाला है।

(तिर्मिज़ीः 149, इब्ने माजाः123)

साईंस क्या कहती है?

हकीम मुहम्मद तारिक़ महमूद चुग़ताई "सुन्नते नबवी और जदीद साईंस" में लिखते हैंः चूँकि दिन भर रोज़े के बाद तवानाई कम हो जाती है इसलिए इफ़तारी ऐसी चीज़ से होनी चाहिए जो ज़ूद हज़म और मुक़व्वी हो।

खजूर का कीमयाई तजज़िया

Proteins	2.0	Fats	/
Carbohydrates	24.0	Calories	2.0
Sodium	4.7	Potassium	754.0
Calcium	67.9	Magnesium	58.9
Copper	0.21	Iron	1.61
Phosphorus	638.0	Sulphur	51.6
Chlorine	290.0		

इस के अलावा और जोहर (Peroxides) भी पाया जाता है। सुबह सहरी के बाद शाम तक कुछ खाया पिया नहीं जाता और जिस्म की कैलोरी (Calories) या हरारे मुसलसल कम होते रहते हैं इसके लिए खजूर एक ऐसी मोतदिल और जामे चीज़ है जिससे हरारत एतिदाल में आ जाती है और जिस्म गूनांगू अमराज़ से बच जाता है। अगर जिस्म की हरारत को कन्ट्रोल न किया जाए तो मंदरजा ज़ैल अमराज़ पैदा होने के ख़तरात होते हैंः

☆ लो ब्लड प्रेशर (Low Blood Pressure), फ़ालिज (Paralysis),

लक़वा (Facial Paralysis) और सर का चकराना वग़ैरा।

☆ ग़िज़ाईयत की कमी की वजह से ख़ून की कमी के मरीज़ों के लिए इफ़तार के वक़्त फ़ोलाद (Iron) की अशद ज़रूरत है और वह ख़जूर में क़ुदरती तोर पर मुयस्सर है।

☆ बाज़ लोगों को ख़ुश्की होती है ऐसे लोग जब रोज़ा रखते हैं तो उनकी ख़ुश्की बढ़ जाती है, इसके लिए खजूर चूँकि मोतदिल है इसलिए वह रोज़ादार के हक़ में मुफ़ीद है।

☆ गर्मियों के रोज़े में रोज़ादार को चूँकि प्यास लगी होती है और वह इफ़तार के वक़्त अगर फ़ौरन ठंडा पानी पी ले तो मेअ्दे में गैस, तबख़ीर और जिगर की वरम (Liver Inflamation) का सख़्त ख़तरा होता है, अगर यही रोज़ादार खजूर खा कर पानी पी ले तो बेशुमार खतरात से बच जाता है। (हिस्सा अव्वल स. 186)

इफ़तार के बाद की दुआ

इफ़तार करने के बाद यह दुआ पढ़े **"اَللّٰھُمَّ لَکَ صُمْتُ وَبِکَ اٰمَنْتُ وَعَلَیْکَ تَوَکَّلْتُ وَعَلٰی رِزْقِکَ اَفْطَرْتُ فَتَقَبَّلْ مِنِّیْ"** ऐ अल्लाह! मैंने तेरे लिए रोज़ा रखा और तुझ पर ईमान लाया और तुझ पर भरोसा किया और तेरे दिए हुए से इफ़तार किया तो तू मुझ से इसको क़ुबूल फ़रमा।

इफ़तार कराने की फ़ज़ीलत

निसाई व इब्ने ख़ज़ीमा ज़ैद बिन ख़ालिद जहनी رضی اللہ عنہ से रावी हैं कि फ़रमाया जो रोज़ादार का रोज़ा इफ़तार कराए या ग़ाज़ी का सामान कर दे तो उसे भी उतना ही सवाब मिलेगा। (निसाई शरीफ)

रोज़ा के फ़ज़ाईल अहादीष की रोशनी में

मुश्क से ज़्यादा ख़ुश्बूदार

हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया "وَالَّذِیْ نَفْسِیْ بِیَدِہٖ لَخُلُوْفُ فَمِ الصَّائِمِ اَطْیَبُ عِنْدَ اللّٰہِ مِنْ رِیْحِ الْمِسْکِ" क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़-ए-क़ुदरत में मेरी जान है, रोज़ादार के मुंह की बू अल्लाह के नज़दीक मुश्क से ज़्यादा बेहतर है।

(बुख़ारी शरीफ़)

मैं ही इसका बदला दूँगा

हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमायाः अल्लाह तबारक व तआ़ला फ़रमाता है "اَلصِّیَامُ لِیْ وَاَنَا اَجْزِیْ بِہٖ وَالْحَسَنَۃُ بِعَشْرِ اَمْثَالِھَا" रोज़े मेरे लिए है और मैं ही इनका बदला दूँगा और दूसरी नेकियों का अजर दस गुना कर दूँगा।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! नमाज़, हज व ज़कात यह इबादतें भी बंदा अल्लाह ही के लिए करता है लेकिन इन आमाल की जज़ा हुसूले रज़ाए इलाही का ज़रिया तो है लेकिन मौला का हुसूल सिर्फ रोज़े की जज़ा में है, आख़िर ऐसा क्यों?

इसकी चंद वजहें हैं:

☆ बंदा जब नमाज़ पढ़ता है तो उसकी अदायगीए सलात को लोग देखते हैं, हज करता है तो उसके अरकान की अदायगी को लोग देखते हैं, ज़कात देता है तो उससे भी लोग बाख़बर होते हैं लेकिन रोज़ा एक ऐसी इबादत है कि उसका इल्म रोज़ादार और परवरदिगार के अलावा किसी और को नहीं होता। बंदा वक़्ते सेहर घर वालों के साथ सहरी कर भी ले लेकिन लोगों की नज़रों से ओझल होकर दिन के उजाले में अगर खा ले तो किसी को उसकी क्या ख़बर?

लेकिन बंदा अपने मौला की ख़ुशी की ख़ातिर और उसके ख़ौफ़ से न छुप कर खाता है और न अपनी पियास को बुझाने की कोशिश करता है बल्कि दामने सब्र को थाम कर अपने मौला की रज़ा की ख़ातिर ख़्वाहिशाते नफ़्स को पूरी नहीं करता तो अल्लाह عزوجل को बंदे का यह अमल इतना पसंद आता है कि रब जज़ा और सिला में ख़ूद अपनी ज़ात को पेश फ़रमा देता है। इसलिए कि रोज़ा में राई के दोने के बराबर भी रिया का दख़ल नहीं होता और अल्लाह की बारगाह में वही इबादत क़ाबिले क़ुबूल है जो रिया से पाक हो।

☆ इस्तग़ना अल्लाह तआ़ला की सिफ़त है और बंदा रोज़ा रख कर इस्तग़ना की सिफ़त को अपनाता है तो वह एक गुनाँ सिफ़ते ख़ुदावंदी का मज़हर हो जाता है।

☆ बातिल ख़ुदाओं की इबादत क़याम, रुकू, सुजूद, तवाफ़, नज़र व नियाज़ और उनकी ख़ातिर लड़ाई भी की गई लेकिन किसी बातिल ख़ुदा के लिए कभी रोज़ा नहीं रखा गया इसलिए अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि "रोज़ा ख़ुसूसन मेरे लिए है।

☆ क़यामत के दिन दीगर इबादात लोगों के हक़ में हक़दारों को दे दी जायंगे लेकिन रोज़ा किसी को नहीं दिया जाएगा जैसा कि एक हदीष क़ुदसी में है कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है "كُلُّ الْعَمَلِ كَفَّارَةٌ اِلَّا الصَّوْمَ، اَلصَّوْمُ لِىْ وَ اَنَا اُجْزِىْ بِهٖ" बनी आदम का हर अमल उसके गुनाहों का कफ्फ़ारा बन जाता है सिवाए रोज़ा के, रोज़ा मेरे लिए है और मैं उसका बदला दूंगा।

मक़अदे सिदक़ में

ग़मख़्वारे उम्मत नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमायाः जब फ़रिश्ता रोज़ा लेकर बारगाहे इलाही में हाज़िर होता है तो अल्लाह तआ़ला रोज़े से मुख़ातिब होकर फ़रमाता है, क्या मेरे बंदे ने तेरी तकरीम व ताज़ीम की? रोज़ा अर्ज़ करता है, इलाही! इसने मुझे अपने नफ़्स के निहायत ही आला मुक़ाम में रखा, मुझे नमाज़ व तरावीह से राहत बहम पहुंचाई और मेरी ख़िदमत के लिए तमाम दिन कमर बस्ता रहा, अपनी

निगाह को हराम से बचाया, कान को बातिल की आवाज़ से बाज़ रखा। तो अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है, हम उसे मक़अदे सिदक़ में उतार कर उसकी इ़ज़्ज़त व क़द्र अफ़ज़ाई करेंगे।

बेहसाब व किताब जन्नत में

हज़रत कअ़ब رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं कि जो शख़्स रमज़ान शरीफ़ के रोज़े पूरे करे और उसकी नियत यह भी हो कि रमज़ान के बाद भी गुनाहों से बचता रहूँगा वह बग़ैर हिसाब व किताब और बग़ैर सवाल व जवाब के जन्नत में दाख़िल होगा।

रोज़ादार कहाँ हैं?

हज़रत सहल رضی اللہ عنہ ने नबी करीम ﷺ से रिवायत की है कि आपने फ़रमाया, जन्नत का एक दरवाज़ा जिसे "रय्यान" कहा जाता है, उससे सिर्फ़ रोज़ेदार दाख़िल होंगे, इनके सिवा कोई और दाख़िल न होगा। क़यामत के दिन निदा दी जाएगी कि रोज़ेदार कहाँ हैं?! तो वह आऐंगे और जब दाख़िल हो जाऐंगे तो दरवाज़ा बंद हो जाएगा और फिर इससे कोई दूसरा दाख़िल न हो सकेगा। (बुख़ारीः जि.1, स.254)

पूरे साल रोज़े की तमन्ना

नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया, अगर अल्लाह तआ़ला के बंदे रमज़ान की फ़ज़ीलत जान लें तो मेरी उम्मत तमाम साल रोज़ा से रहने की ख़्वाहिशमंद होती। (बैहक़ी)

रोज़े ढाल हैं

हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि आक़ाए कौनैन व मकाँ ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया اَلصِّيَامُ جُنَّةٌ यानी रोज़े ढाल हैं।

(मुस्लिमः स.363)

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! मुहद्दिषीन किराम ने इस हदीष की वज़ाहत करते हुए फ़रमाया हैः

☆ रोज़ेदार के सामने जब किसी गुनाह का मुहर्रिक आता है तो रोज़ा उसके लिए ढाल बन जाता है और वह इस गुनाह से रुक जाता है।

☆ जहन्नम की आग के लिए रोज़ा ढाल बन जाएगा और रोज़ादार की मग़फ़िरत करा देगा।

☆ रोज़ा के सबब से इंसान अपने नफ़्स के शर से मेहफ़ूज़ रहता है और अपने नफ़्स और बदन को गुनाहों से बचाता है इसलिए फ़रमाया गया रोज़ा ढाल है।

सत्तर साल की मुसाफ़त पर

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी رضی اللہ عنہ से रिवायत है वह कहते हैं कि रसूलुल्लह ﷺ ने इर्शाद फ़रमायाः जो शख़्स भी एक दिन अल्लाह तआ़ला की राह में रोज़ा रखेगा अल्लाह तआ़ला जहन्नम की आग को उसके चेहरे से सत्तर साल की मुसाफ़त तक दूर रखेगा। (मुस्लिमः स.364)

सेहतमंद होने का नुसख़ा

हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लह ﷺ ने इर्शाद फ़रमायाः اُغْزُوْا تَغْنِمُوْا، وَ صُوْمُوْا تَصِحُّوْا، وَ سَافِرُوْا تَسْتَغْنُوْا जिहाद करो माले ग़नीमत पाओगे और रोज़ा रखो सेहतमंद हो जाओगे और सफ़र करो मालदार हो जाओगे। (अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीबः 83.2)

रोज़ादार के लिए दो ख़ुशियाँ

हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया, "रोज़ादार के लिए दो ख़ुशियाँ हैः (1) जब वह इफ़्तार करता है तो ख़ुश होता है (2) जब वह अपने रब से मुलाक़ात करता है तो ख़ुश होता है। (बुख़ारी शरीफ़, स.255)

अल्लाह का दुश्मन

नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जिसने तीन चीज़ों की हिफ़ाज़त की वह यक़ीनन अल्लाह का दोस्त है और जो इन तीनों को ज़ाएए कर देता हैः यक़ीन जानो कि वह अल्लाह का दुश्मन है। वह तीन चीज़ें यह हैंः रोज़ा, नमाज़ और ग़ुस्ले जनाबत। (रूहुल बयानः 2,107)

चार आदमियों की मुश्ताक़

अल्लाह की तमाम बहिश्तें चार आदमियों की मुश्ताक़ रहती हैं, वह चार क़िस्म के लोग यह हैं।

☆ रमज़ान के रोज़े रखने वाले
☆ कुरआन की तिलावत करने वाले
☆ ज़बान की हिफ़ाज़त करने वाले
☆ भूखे हमसायों को खाना खिलाने वाले (रूहुल बयानः 107,2)

रोज़ादार का इस्तक़बाल

जब क़यामत में अल्लाह तआ़ला एहले क़ुबूर को क़ब्रों से उठने का हुक्म देगा तो मलाइका को फ़रमाएगाः

ऐ रिज़वान! मेरे रोज़दारों से आगे चल कर मिलो क्योंकि वह मेरी ख़ातिर भूखे, प्यासे रहे। अब तुम बहिश्त की ख़्वाहिशात की तमाम अश्या लेकर उनके पास पहुंच जाओ। उसके बाद वह रिज़वान ज़ोर से पुकार कर कहेगा, ऐ जन्नत के ग़िलमान व वलदान! नूर के बड़े बड़े थाल लाओ, उसमें दुनिया की रेत के क़तरात, बारिश की बूंदों, आसमान के सितारों और दरख़्तों के पत्तों के बराबर मेवाजात और खाने पीने की लज़ीज़ अश्या जमा करके रोज़दारों के सामने रख दी जाऐंगी और उनसे कहा जाएगा जितनी मर्ज़ी हो खाओ पियो, यह उन रोज़ों की जज़ा है जो तुम ने दुनिया में रखे। (रूहुल बयानः 108.2)

एक अजीबुल ख़िल्क़त फ़रिश्ता

हुज़ूरे अकरम ﷺ ने इर्शाद फ़रमायाः

मैंने शब मेअ्राज में सिदरतुल मुंतहा पर एक फ़रिश्ता देखा जिसे मैंने इससे क़ब्ल नहीं देखा था, इसके तूल व अर्ज़ की मुसाफ़त लाख साल के बराबर थी, उसके सत्तर हज़ार सर थे और हर सर में सत्तर हज़ार मुंह और हर मुंह में सत्तर हज़ार ज़बानें और हर सर पर सत्तर हज़ार नूरानी चोटियां थीं और हर चोटी के सर पर बाल में लाख लाख मोती लटके हुए थे, हर एक मोती के पेट के अंदर बहुत बड़ा दरिया है और हर दरिया के अंदर बहुत बड़ी मछलियाँ हैं और हर मछली का तूल दो साल की मुसाफ़त के बराबर और हर मछली के पेट में लिखा है "لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ" और इस फ़रिश्ते ने अपना सर अपने एक हाथ पर रखा है और दूसरा हाथ उसकी पीठ पर है और वह "خَطِيْرَةُ الْقُدْس" यानी बहिश्त में है। जब वह अल्लाह की तसबीह

पढ़ता है तो उसकी प्यारी आवाज़ से अर्शे इलाही ख़ुशी में झूम उठता है। मैंने जिब्रइल علیہ السلام से उसके मुतअल्लिक़ पूछा तो उन्होंने अर्ज़ किया कि यह वह फ़रिश्ता है जिसे अल्लाह तआ़ला ने आदम علیہ السلام से दो हज़ार साल पहले पैदा किया था। फिर मैंने कहा, उसकी लम्बाई और चोडाई कहाँ से कहाँ तक है, जिब्रइल ने अर्ज़ किया, अल्लाह तआ़ला ने बहिश्त में एक चरागाह बनाई है और यह इसी में रहता है उस फ़रिश्ते को अल्लाह तआ़ला ने हुक्म फ़रमाया है कि वह आपके और आपकी उम्मत के हर उस शख़्स के लिए तस्वीह पढ़े जो रोज़ा रखते हैं।

मैंने उस फ़रिश्ते के आगे दो संदूक़ देखे और दोनों पर हज़ार नूरानी ताले थे।

मैंने पूछा जिब्रइल! यह क्या है? उन्होंने कहा, इस फ़रिश्ते से पूछिए? मैंने उस अजीब व ग़रीब फ़रिश्ते से पूछा कि यह संदूक़ें कैसी हैं? उसने जवाब दिया कि उसमें आपकी रोज़ा रखने वाली उम्मत के बरात (छुटकारा) का ज़िक्र है। आपको और आपकी उम्मत के रोज़ा रखने वालों को मुबारक हो। (रूहुल बयानः 108.3)

रोज़ा और दीगर इबादात में फ़र्क़

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! अगर हम दीगर इबादात का जाइज़ा लें तो यह बात वाज़ेह होती है कि नमाज़, हज, ज़कात वग़ैरा कुछ करने का नाम है, मषलन नमाज़ क़याम, रुकूअ़, सुजूद वग़ैरा की अदाएगी का नाम है, हज अल्लाह عزوجل की रज़ा के लिए तवाफ़े काबा, वुक़ूफ़े मिना व अरफ़ा, सई वग़ैरा का नाम है।

लेकिन रोज़ा खाने पीने और जमा से बचने का नाम है आख़िर ऐसा क्यों?

दर हक़ीक़त अल्लाह عزوجل अपने बंदों की तर्बियत फ़रमाना चाहता है कि मेरे बंदो! तुम्हारे पास भले ही हलाल खाना हो और हलाल मशरूबात हों और तुम्हारी बीवी नज़र के सामने हो फिर भी माहे रमज़ानुल मुबारक में मेरी ख़ुशी की ख़ातिर इन चीज़ों से सुब्ह सादिक़ से ग़ुरूब आफ़ताब तक रुके रहो। अगर बंदा अल्लाह عزوجل की रज़ा की ख़ातिर इन चीज़ों से अपने आपको रोके रखता है तो अल्लाह عزوجل अपनी इस

इताअत के ऐवज़ उसके सोने जागने को भी इबादत क़रार देता है और बवक़्ते इफ़तार उसकी दुआ को शर्फ़े क़बूलियत से नवाज़ता है।

जब एक बंदा सुब्ह सादिक़ से लेकर ग़ुरूब आफ़ताब तक हलाल खाने पीने का आदी हो जाता है तो वही बंदा माहे रमज़ानुल मुबारक के गुज़र जाने के बाद हराम खाने की तरफ़ और हराम पीने की तरफ़ और ग़ैर महरम औरतों की तरफ़ अपनी तबिअत को माईल नहीं करता बल्कि माहे रमज़ानुल मुबारक की तर्बियत उसे याद दिलाती है कि जब तंहाई में भूख और प्यास मिटाने के लिए माकूलात व मशरूबात निगाहों के सामने मौजूद होते हुए भी अल्लाह के देखने के तसव्वुर से और उसके ख़ौफ़ से अपने आपको रोके रखा तो अब माहे रमज़ानुल मुबारक के गुज़र जाने के बाद हराम की तरफ़ मैं कैसे बढ़ूं क्योंकि जो ख़ुदा माहे रमज़ानुल मुबारक में हमारे घर की तंहाई को देख रहा था वही ख़ुदा आज भी देख रहा है। और बस बंदा अपने आपको ख़ौफ़े ख़ुदा की वजह से हराम माकूलात व मशरूबात और ग़ैर महरम की तरफ़ ग़लत क़दम उठाने से रोक लेता है।

याद रखें! अगर माहे रमज़ानुल मुबारक की इस तर्बियत का फ़ायदा हमने न उठाया और रोज़ा के फ़लसफे को हम न समझे तो हम से बड़ा कम अक़्ल कोई नहीं। बज़ाहिर रोज़ा मज़कूरा तीन चीज़ों से अपने आपको रोकने का नाम है लेकिन उसके अलावा भी रोज़े की हिफ़ाज़त के हवाले से रहमते आलम ﷺ के इर्शादात मौजूद हैं, हमें चाहिए कि इन इर्शादात को पेशे नज़र रखते हुए अपने रोज़ों की हिफ़ाज़त करें और ख़ूब से ख़ूब रोज़े की बर्कतें हासिल करें।

रोज़ा के फ़वाइद

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! अल्लाह तआ़ला अलीम व हकीम है, इसके हर काम और हर हुक्म में कोई न कोई हिकमत ज़रूर शामिल होती है, यह और बात है कि इंसान का ज़हन उसको न समझ सके मगर उसका कोई भी हुक्म हिकमत से ख़ाली नहीं है। उसने हमें रोज़े रखने का हुक्म फ़रमाया। बज़ाहिर इसमें कोई फ़ायदा नज़र नहीं आ रहा है, लेकिन इसमें ज़रूर फ़ायदे हैं। जैसा कि मुफ़स्सरीने किराम ने

बयान फ़रमाया है:-

(1)अल्लाह तबारक वतआ़ला ने रोज़ा का एक फ़ायदा तक़वा बयान फ़रमाया है। "يَـٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ كُتِبَ عَلَيْكُمُ ٱلصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى ٱلَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ" ऐ ईमान वालो! तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किए गए जैसा कि तुम से अगलों पर फ़र्ज़ किए गए थे, इस उम्मीद पर कि तुम्हें परहेज़गारी मिले। हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने तीन बार सीने की तरफ़ इशारा करके फ़रमाया "اَلتَّقْوٰی هٰهُنَا" तक़वा यहाँ है।

तक़वा दिल की उस कैफ़ियत का नाम है जिसके हुसूल के बाद इंसान गुनाह करने से डरता है और ख़ौफ़े इलाही की वजह से गुनाह से झिजक महसूस करता है।

इंसान के दिल में गुनाहों की अकषर ख़्वाहिशात हैवानी कुव्वत की ज़्यादती से पैदा होती हैं, रोज़ा रखने से हेवानी कुव्वत कम हो जाती है, यही वजह है कि जो नौजवान माली मजबूरियों की वजह से निकाह नहीं कर सकते और साथ ही नफ़सानी ख़्वाहिशात पर क़ाबू भी नहीं रखते उनका इलाज रसूलुल्लाह ﷺ ने रोज़ा बताया है और फ़रमाया है कि शहवत को तोड़ने और कम करने के लिए रोज़ा बेहतरीन चीज़ है।

(2)जिस तरह हर चीज़ अपनी ज़िद से पहचानी जाती है इसी तरह खाने पीने की क़द्र भी रोज़ा रखने से होती है, शिकम सैर हो कर खाना खाने वाले अमीरों को रोज़ा रखने से यह पता चलता है कि जब चंद घण्टों की इख़्तियारी भूक की यह कैफ़ियत है तो जो ग़रीब हैं उनकी हफ़्तों की इज़्तिरारी भूख का क्या आलम होगा?!

लिहाज़ा रोज़ा इसलिए फ़र्ज़ किया गया कि साहिबे इस्तिताअत मुसलमानों को ग़ैर मुसततीअ इंसानों की भूख और प्यास का अंदाज़ा हो सके और वह उनकी इमदाद व इआनत पर आमदा हो सकें।

(3)ग़रीब और फ़ाक़ा कश लोग सारा साल भूख और प्यास में गुज़ारते हैं, अल्लाह तआ़ला ने उनकी मुशाबेहत क़ायम करने के लिए एक माह सारे मुसलमानों पर भूख और प्यास की कैफ़ियत तारी कर दी।

(4)अल्लाह तआ़ला ने इंसानों को बेशुमार नेअ्मतों से नवाज़ा है, इन नेअ्मतों में से खाना, पानी और बीवी यह ऐसी नेअ्मतें हैं जो इंसानों

की रोज़ाना की ज़रूरतें हैं। अल्लाह तआ़ला इन्हीं नेअ्मतों के ज़रिये मुसलमानों की आज़माइश करना चाहता है कि कितने लोग अल्लाह की इताअत में चंद साअत इन नेअ्मतों के इस्तेमाल से हाथ रोक कर अल्लाह की बंदगी और अल्लाह की महब्बत में सारी चीज़ें कुर्बान करने का जज़्बा-ए-सादिक़ रखते हैं।

रोज़ा साइन्स की नज़र में

हकीम मुहम्मद तारिक़ महमूद चुग़ताई अपनी तस्नीफ़ ''सुन्नते नबवी और जदीद साईंस'' में रक़मतराज़ हैं: प्रोफेसर मोर पार्ल्ड ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी की पहचान हैं, उन्होंने अपना वाक़िआ बयान किया कि मैंने इस्लामी उलूम का मुताला किया और रोज़े के बाब पर पहुंचा तो चौंक पड़ा कि इस्लाम ने अपने मानने वालों के लिए कितना अज़ीम फारमुला दिया है, अगर इस्लाम अपने मानने वालों को और कुछ न देता सिर्फ यही रोज़े का फारमुला ही देता तो फिर भी इससे बढ़ कर उनके पास और कोई नेअ्मत न होती। मैंने सोचा कि इसको आज़माना चाहिए। फिर मैंने रोज़े मुसलमानों के तर्ज़ पर रखना शुरू कर दिए। मैं अरस-ए-दराज़ से मेअ्दे के वरम "Stomatch Inflammation" में मुबतिला था। कुछ दिनों के बाद ही मैंने मेहसूस किया कि इसमें कमी वाक़ेअ हो गई है। मैंने रोज़ों की मश्क़ जारी रखी। फिर मैंने जिस्म में कुछ और तबदीली भी मेहसूस की। और कुछ अरसा बाद मैंने अपने जिस्म को नार्मल पाया। हत्ता कि मैंने एक माह के बाद अपने अंदर इंक़िलाबी तबदीली महसूस की।

पॉप एफ. गाल का तजज़िया

यह हालैंड का बड़ा पादरी गुज़रा है। उसने रोज़े के बारे में अपने तजुर्बात बयान किए हैं, मुलाहिज़ा हो।

मैं अपने रूहानी पैरोकारों को हर माह तीन रोज़े रखने की तलक़ीन करता हूँ। मैंने इस तरीक़ा-ए-कार के ज़रिया जिस्मानी और वज़नी हमआहंगी महसूस की। मेरे मरीज़ मुझ पर मुसलसल ज़ोर देते हैं कि मैं उन्हें कुछ और तरीक़ा बताऊँ लेकिन मैंने यह उसूल वज़ेअ कर

लिया कि इन में वह मरीज़ जो लाइलाज हैं उनको तीन योम नहीं बल्कि एक माह तक रोज़े रखवाए जाऐं। (ऐज़न)

रोज़ा और मिस्वाक का इसतेमाल

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! रमज़ानुल मुबारक के बाबर्कत महीना में हमें अपने लिए मिस्वाक को लाज़िम करने की कोशिश करनी है, हदीषे पाक और साईंस नीज़ वाक़िआत इस बात की शहादत देते हैं कि मिस्वाक में बेशुमार फ़ाइदे हैं और सबसे बड़ा फ़ायदा तो यह है कि यह हमारे प्यारे नबी ﷺ की प्यारी सुन्नत है। रमज़ानुल मुबारक में हमें पाबंदी से उसका इस्तेमाल करके आइंदा भी उसके इस्तेमाल के लिए अज़्मे मसम्म करना है।

मुनासिब मालूम होता है इख़्तिसार के साथ मिस्वाक के फ़ज़ाइल व फ़वाइद पर रोशनी डाल दूँ ताकि मिस्वाक की महब्बत और उसके इस्तेमाल का जज़्बा क़ारेईन के दिलों में बैठ जाए।

मिस्वाक के हवाले से नबी करीम ﷺ ने बे इंतिहा ताकीद फ़रमाई है। यहाँ तक कि सहाबाए किराम यह ख़्याल करते थे कि अंक़रीब उसके मुतअल्लिक़ आयत नाज़िल होगी।

एक हदीष में है कि नबीए कौनेन साहिबे क़ाब क़ौसैन ﷺ ने फ़रमायाः "لَوْ لَا اَنْ اَشُقَّ عَلٰى اُمَّتِىْ لَاَمَرْتُهُمْ بِالسِّوَاكِ عِنْدَ كُلِّ صَلٰوةٍ" अगर मैं अपनी उम्मत पर दुश्वार न जानता तो मिस्वाक को उनके लिए फ़र्ज़ क़रार देता। (इब्ने माजाः स. 25)

एक रिवायत में इस तरह हैः-

हज़रत हुज़ैफ़ा رضی اللہ عنہ कहते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ जब रात को नमाज़े तहज्जुद के लिए उठते तो अपने दहने मुबारक को मिस्वाक से साफ़ फ़रमाते (बुख़ारीः 1-38)

और हज़रते अब्दुल्लाह इब्ने उमर رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि आपने फ़रमाया كَانَ لَا يَنَامُ اِلَّا وَالسِّوَاكُ عِنْدَهٗ فَاِذَا اسْتَيْقَظَ بَدَاَ بِالسِّوَاكِ. नबी-ए-करीम ﷺ जब सोते तो आपके पास मिस्वाक होती, फिर जब आप बेदार होते तो (आपका पहला काम) मिस्वाक करना होता। यानी सो कर उठने के बाद सबसे पहले मिस्वाक फ़रमाया करते।

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा رضی اللہ عنہا से रिवायत है कि नबी-ए-करीम रऊफ व रहीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : فَضْلُ الصَّلٰوةِ بِالسِّوَاكِ عَلَى الصَّلٰوةِ بِغَيْرِ سِوَاكٍ سَبْعُوْنَ ضِعْفاً जो नमाज़ मिस्वाक करके पढ़ी जाए वह सत्तर दर्जा अफ़ज़ल है उस नमाज़ पर जो बग़ैर मिस्वाक के पढ़ी जाए।

मिस्वाक के फ़वाइद एक नज़र में

हदीषे पाक और साईंस दानों के तजुर्बा के मुताबिक़ मिस्वाक के बेशुमार फ़वाइद हैं, अल्लामा शामी رحمۃ اللہ علیہ ने मिस्वाक के बारे में तहरीर फ़रमाया है कि मिस्वाक करने वाले के लिए मिस्वाक के मंजदरजा ज़ैल फ़वाइद हैं:-

★ बुढ़ापे में ताख़ीर करती है।
★ बसारत को तेज़ करती है।
★ मिस्वाक की बेहतरीन ख़ूबियों में से यह है कि वह हर बीमारी के लिए शिफ़ा है सिवाए मौत के।
★ पुल सिरात पर चलने में तेज़ी बख़्शती है।
★ मुंह की सफ़ाई का ज़रिया है।
★ रब तआ़ला की रज़ा का सबब है।
★ मलाइका को ख़ुश करती है।
★ मुंह की गंदगी को दूर करती है और कीड़े लगे हुए दांतों को सहीह करती है।
★ दांतों को चमकदार करती है।
★ बसारत को जिला बख़्शती है।
★ मसूढ़ों को मज़बूत करती है।
★ खाने को हज़म करती है।
★ बलग़म को काटती है।
★ नमाज़ के अज्र व षवाब को बढ़ाती है।
★ कुरआन के रास्ते यानी मुंह को साफ़ करती है।
★ फसाहत को बढ़ाती है।
★ मेअदा को कुव्वत देती है।
★ शैतान को नाराज़ करती है।

★ नेकियों में इज़ाफ़ा करती है।
★ सुफ़रा (एक ज़र्द रंग का कड़वा माद्दा) को काटती है।
★ बालों की जड़ों को मज़बूत करती है।
★ रूह के निकलने को आसान करती है।

इसी तरह अल्लामा हसन बिन अम्मार رحمۃ اللہ علیہ मिस्वाक के फ़वाइद के बारे में तहरीर फ़रमाते हैं।

★ मिस्वाक करना फ़रिश्तों को ख़ुश करता है।
★ फ़रिश्ते मिस्वाक करने वाले के चेहरे के नूर के सबब इससे मुसाफ़ा करते हैं।
★ फ़रिश्ते मिस्वाक करने वाले के साथ चलते हैं जब वह नमाज़ के लिए निकलता है।
★ हामेलीने अर्श फ़रिश्ते उसके लिए इस्तिग़फ़ार करते हैं जब वह मस्जिद से निकलता है।
अंबिया और रुसुल علیہم السلام भी उसके लिए इस्तिग़फ़ार करते हैं।
★ आमाल नामा सीधे हाथ में दिया जाएगा।
★ मिस्वाक करना अल्लाह तआ़ला की इताअत व फ़रमांबर्दारी पर बदन को कुव्वत देता है।
★ जिस्म से मुज़िर हरारत का इज़ाला करता है।
★ क़ज़ाए हाजत पर मदद करता है।
★ मिस्वाक करने वाले के लिए क़ब्र कुशादा हो जाती है।
★ लहद में मूनिस व ग़मख़्वार होती है।
★ मिस्वाक पर मुदावमत करने वाले के लिए उस दिन का भी अज्र लिखा जाता है जिस दिन उसने किसी मजबूरी की वजह से मिस्वाक नहीं की।
★ जन्नत के दरवाज़े खोले जाते हैं।
★ फ़रिश्ते मिस्वाक करने वाले के मुतअल्लिक़ कहते हैं कि यह अंबिया علیہم السلام की पैरवी करने वाला और उनके तरीक़े पर चलने वाला है।

★ जहन्नम के दरवाज़े उस पर बंद कर दिए जाते हैं।

★ मिस्वाक करने वाला इस दुनिया से पाकीज़गी की हालत में निकलता है।

★ हज़रत मलकुल मौत عليه السلام मिस्वाक करने वाले की रूह क़ब्ज़ करने के वक़्त उसी सूरत में आते हैं जिस सूरत में अंबिया व औलिया के पास आते हैं।

★ दुनिया से रुख़सत होते वक़्त नबी-ए-मुकर्रम रसूले मोहतरम ﷺ ने होज़ से सैराब किया जाता है और वह रहीक़े मख़तूम (ख़ालिस शहद का मेहर शुदा मशरूब) है।

किन अवक़ात में मिस्वाक करें?

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! मंदरजा ज़ैल पाँच अवक़ात में मिस्वाक करना मस्नून व मुस्तहब है।

(1) नमाज़ पढ़ने के वक़्त ख़्वाह पहले से बावुज़ू हो।

(2) वुज़ू करने के वक़्त

(3) क़ुरआन मजीद की तिलावत के वक़्त

(4) नींद से बेदार होने के वक़्त

(5) जब मुंह की बू मुतग़य्यर हो ख़्वाह खाने पीने से या किसी बदबूदार चीज़ खाने से या ज़्यादा देर ख़ामोश रहने की वजह से या ज़्यादा बातें करने की वजह से।

मिस्वाक के ज़रिये इलाज

हकीम एस.एम. इक़बाल लिखते हैं:

मेरे पास एक मरीज़ आया जिसके दिल की झिल्लियों में पीप भरी हुई थी और दिल का इलाज करते रहे इफ़ाक़ा न हुआ, आख़िर दिल का ऑप्रेशन करके पीप निकाल ली गई। कुछ अरसे के बाद फिर पीप भर गई। थक हार कर मेरे पास आए तो मैंने तशख़ीस की तो पता चला कि उसके मसूढ़े ख़राब हैं और उनमें पीप पड़ी हुई है और वह पीप दिल को नुक़सान पहुंचा रही है। इस तशख़ीस को डॉक्टरों ने भी तस्लीम किया है।

अब इसका पहला इलाज दांतों और मसूढ़ों का किया गया। खाने के लिए कुछ और, और यह पीलू का मिस्वाक इस्तेमाल करने के

लिए दिया गया। बहुत जल्द मरीज़ ने इफ़ाक़ा महसूस किया।

डा. महमूद चुग़ताई लिखते हैं:

अरब मुल्क से एक मरीज़ ने लिखा कि दांतों के एक देरीना मर्ज़ में मुबतिला हूँ और इसके इलाज पर अब तक 10 हज़ार दिरहम लगा चुका हूँ लेकिन इफ़ाक़ा न हुआ। ख़त में जवाब दिया कि आप मिस्वाक सिर्फ़ पीलू का इस्तेमाल करें। और दो माह मुस्तक़िल दिन में पांच बार नमाज़ों में और एक बार तहज्जुद में किसी क़िस्म की दवाई इस्तेमाल न करें। الحمد मरीज़ हैरत अंगेज़ तरीक़े से तंदुरुस्त हो गया, लेकिन मिस्वाक ताज़ा हो। (सुन्नते नबवी और जदीद साईंस)

मिस्वाक साइंस की नज़र में

मिस्वाक दाफ़ेए तअ़फ़ुन (Anti-septic) है। जब भी इसको मुंह में इस्तेमाल किया जाता है तो यह अंदर के जरासीम क़त्ल कर देता है जिससे इंसान बेशुमार अमराज़ से बच जाता है। हत्ता कि बाज़ जरासीम सिर्फ़ और सिर्फ़ मिस्वाक के अंदर ऐंटी सेप्टिक मवाद ही की वजह से मरते हैं।

दर असल मिस्वाक के अंदर फ़ासफोरस (Phosphorus) होता है। तहक़ीक़ात के मुताबिक़ जिस ज़मीन में कैल्शियम और फ़ासफोरस की ज़्यादती होगी वहाँ पीलू का दरख़्त ज़्यादा पाया जाएगा चूंकि क़ब्रस्तान की मिट्टी में केल्शियम और फासफोरस इंसानी हड्डियों के गलने की वजह से ज़्यादा होता है यही वजह है कि यहाँ पीलू का दरख़्त भी ज़्यादा होता है और दांतों के लिए केल्शियम और फ़ासफोरस अहम ग़िज़ा हैं। और ख़ास तोर पर पीलू की जड़ में यह अजज़ा आम तोर पर होते हैं। (ऐज़न)

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! मिस्वाक के फ़ज़ाइल और फ़वाइद लिखने के लिए क़लम उठाया जाए तो मुकम्मल एक किताब तैयार हो जाए। लेकिन यहाँ पर बिल् इख़्तिसार ज़िक्र कर दिया गया है बस इस उम्मीद पर कि इस किताब को पढ़ने वाले कम अज़ कम रमज़ानुल मुबारक की बर्कत से एक अज़ीम सुन्नत पर अमल करने का जज़बा अपने दिल में पैदा करेंगे और इस पर हमेशगी बरतने की कोशिश करेंगे।

मसाइले रोज़ा

जिन चीज़ों से रोज़ा नहीं टूटता

मस्अलाः भूल कर खाना खाया, पिया, जिमअ़ किया रोज़ा न टूटा। ख़्वाह रोज़ा फ़र्ज़ हो या नफ़्ल।

मस्अलाः मक्खी, धुवाँ, गुबार, हलक़ में जाने से रोज़ा नहीं टूटता, ख़्वाह वह गुबार आटे का ही क्यों न हो जो चक्की पीसने से उड़ता है।

मस्अलाः तेल, सुर्मा लगाया तो रोज़ा न टूटा अगरचे तेल या सुर्मा का मज़ा हलक़ में महसूस होता हो। बल्कि थूक में सुर्मा का रंग भी दिखाई देता हो तब भी रोज़ा नहीं टूटा।

मस्अलाः एहतिलाम हो जाने, या हम बिस्तरी करने के बाद गुस्ल न किया और उसी हालत में पूरा दिन गुज़ार दिया तो वह नमाज़ों के छोड़ देने के सबब सख़्त गुनहगार होगा मगर रोज़ा अदा हो जाएगा।

मस्अलाः इंजेक्शन ख़्वाह रग में लगाया जाए या गोश्त में इससे रोज़ नहीं टूटता क्योंकि रोज़ा उस चीज़ से टूटता है जो जोफ़े दिमाग़ या जोफ़े मेअदा तक मंफ़ज़ से पहुंचे और इंजेक्शन से गोश्त या रग में जो दवा पहुंची वह ग़ैर मंफ़ज़ से है लिहाज़ा यह मुफ़्सिदे सौम नहीं।

मस्अलाः ख़ून निकलवाने या कहीं ज़ख़्म हो जाने से रोज़ा नहीं टूटता है, हाँ! रोज़ा की हालत में ख़ून नहीं निकलवाना चाहिए कि रोज़ा की हालत में ऐसा काम मकरूह है जिससे कमज़ोरी आए। रग के ज़रिये ख़ून चढ़ाने से भी रोज़ा न टूटेगा।

मस्अलाः मंजन करना रोज़ा की हालत में मकरूह है बल्कि इसका कोई ज़र्रा हलक़ से नीचे चला गया तो रोज़ा टूट जाएगा।

मस्अलाः बोसा लिया मगर इंज़ाल न हुआ तो रोज़ा नहीं टूटा।

मस्अलाः औरत की तरफ़ बल्कि उसकी शर्मगाह की तरफ नज़र की

मगर हाथ न लगाया और इंज़ाल हो गया या बार बार जिमअ़ के ख़्याल से इंज़ाल हो गया तो रोज़ा नहीं टूटा।

मस्अलाः तिल या तिल के बराबर कोई चीज़ चबाई और थूक के साथ हलक़ से उतर गई तो रोज़ा न टूटा मगर उस चीज़ का मज़ा हलक में मेहसूस होता हो तो रोज़ा टूट जाएगा।

जिन चीज़ों से रोज़ा टूट जाता है

मस्अलाः हुक़्क़ा, सिगार, सिग्रेट, पान, तम्बाकू, पीने खाने से रोज़ा टूट जाता है। अगर्चे पान या तंबाकू की पीक थूक दी हो, क्योंकि इसके बारीक अजज़ा ज़रूर हलक में पहुंचते हैं।

मस्अलाः दूसरे का थूक निगल लिया या अपना ही थूक हाथ पर लेकर निगल लिया तो रोज़ा टूट गया।

मस्अलाः औरत को बोसा लिया, छुआ, मुबाशरत की, या गले लगाया, और इंज़ाल हो गया तो इन हालतों में रोज़ा टूट गया।

मस्अलाः क़सदन मुंह भर क़ै की और रोज़ादार होना याद है तो रोज़ा टूट जाएगा और अगर मुंह भर क़ेय न हो तो रोज़ा नहीं टूटेगा।

मस्अलाः सोते में पानी पी लिया, कुछ खा लिया, या मुंह खुला था पानी का क़तरा हलक में चला गया तो रोज़ा टूट जाएगा।

जिन सूरतों में सिर्फ़ क़ज़ा लाज़िम है।

मस्अलाः यह गुमान था कि अभी सुबह नहीं हुई इसलिए खा लिया या पिया या ज़िमअ़ कर लिया और बाद में मालूम हुआ कि सुबह हो चुकी थी तो क़ज़ा लाज़िम है। यानी उस रोज़े के बदले बाद रमज़ान एक रोज़ा रखना पड़ेगा।

मस्अलाः मुसाफ़िर ने इक़ामत की, हैज़ व नफ़ास वाली औरत पाक हो गई, मरीज़ था अच्छा हो गया, काफ़िर था मुसलमान हो गया, मजनून को होश आ गया, नाबालिग़ था बालिग़ हो गया इन सब सूरतों में जो कुछ दिन का हिस्सा बाक़ी रह गया हो उसे रोज़ा की मिष्ल गुज़ारना वाजिब है।

मस्अलाः हैज़ व नफ़ास वाली औरत सुबह सादिक़ के बाद पाक हो गई अगर्चे ज़हव-ए-कुबरा से पेश तर हो और रोज़ा की नियत कर ली तो आज का रोज़ा न हुआ न फ़र्ज़ न नफ़िल और मरीज़ या मुसाफ़िर ने नियत कर ली या मजनून था होश में आकर नियत कर ली तो इन सब का रोज़ा हो गया।

मस्अलाः सुबह से पहले या भूल कर जिमअ़ में मशग़ूल था, सुबह होते ही याद आने पर फ़ौरन जुदा हो गया तो कुछ नहीं। और उसी हालत पर रहा तो क़ज़ा वाजिब, कफ़्फ़ारा नहीं।

मस्अलाः मय्यत के रोज़े क़ज़ा हो गए थे तो उसका वली उसकी तरफ़ से फ़िदया अदा करे यानी जबकि वसियत की और माल छोड़ा हो वरना वली पर ज़रूरी नहीं, कर दे तो बेहतर है।

मस्अलाः रोज़ा तोड़ने का कफ़्फ़ारा यह है कि मुमकिन हो तो एक रक़बा यानी बांदी या ग़ुलाम आज़ाद करे और यह न कर सके मपलन उसके पास न लौंडी, ग़ुलाम है न इतना माल कि ख़रीदे या माल तो है मगर रक़बा मैयस्सर नहीं जैसे आज कल यहां हिन्दुस्तान में, तो पै दर पै साठ रोज़े रखे। यह भी न कर सके तो साठ मसाकीन को भर-भर पेट दोनों वक़्त खाना खिलाए और रोज़े की सूरत में अगर दर्मियान में एक दिन का भी छूट गया तो अब से साठ रोज़े रखे, पहले के रोज़े महसूब (शुमार) न होंगे अगर्चे उंसठ रख चुका था अगर्चे बीमारी वग़ैरा किसी उज़्र के सबब छूटा हो मगर औरत को हैज़ आ जाए तो हैज़ की वजह से जितने नाग़े हुए यह नाग़े नहीं शुमार किए जाऐंगे, यानी पहले के रोज़े और हैज़ के बाद वाले दोनों मिल कर साठ हो जाने से कफ़्फ़ारा अदा हो जाएगा। (बहारे शरीअ़त)

मस्अलाः अगर दो रोज़े तोड़े तो दोनों के लिए दो कफ़्फ़ारे दे। अगर्चे पहले का अभी कफ़्फ़ारा अदा न किया हो यानी जबकि दोनों दो रमज़ान के हों और अगर दोनों रोज़े एक ही रमज़ान के हों और पहले का कफ़्फ़ारा अदा न किया हो तो एक ही कफ़्फ़ारा दोनों के लिए काफ़ी है। (बहारे शरीअ़त)

जिन सूरतों में कफ़्फ़ारा भी लाज़िम है

मस्अलाः जिस जगह रोज़ा तोड़ने का कफ़्फ़ारा लाज़िम आता है उसमें शर्त यह है कि रात ही को रोज़ा-ए-रमज़ान की नियत की हो अगर दिन में नियत की और तोड़ दिया तो लाज़िम नहीं।

मस्अलाः कफ़्फ़ारा लाज़िम होने के लिए यह भी ज़रूरी है कि रोज़ा तोड़ने के बाद कोई ऐसा अम्र वाकिअ़ न हुआ हो जो रोज़ा के मनाफ़ी हो या बग़ैर इख़्तियार ऐसा अम्र न पाया गया हो जिसकी वजह से रोज़ा इफ़्तार करने की रुख़सत होती। मष्लन औरत को उसी दिन हैज़ या निफ़ास आ गया या रोज़ा तोड़ने के बाद उसी दिन ऐसा बीमार हो गया जिसमें रोज़ा न रखने की इजाज़त है तो कफ़्फ़ारा साक़ित हो जाएगा।

मस्अलाः सहरी का निवाला मुंह में था कि सुबह तुलूअ़ हो गई या भूल कर खा रहा था तो निवाला मुंह में था कि याद आ गया और निगल लिया दोनों सूरत में कफ़्फ़ारा वाजिब। अगर मुंह से निकाल कर फिर खाया हो तो सिर्फ क़ज़ा वाजिब होगी कफ़्फ़ारा नहीं।

नोटः रोज़ा के मुतअल्लिक़ तफ़सीली मालूमात के लिए बहारे शरीअ़त का मुतालआ़ करें।

नुज़ूले कुरआन

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! माहे रमज़ानुल मुबारक के नाम व फ़ज़ाइल और उसके लिए रसूले आज़म ﷺ की तैयारियों के बारे में आप ने मालूम कर लिया। इसी माहे मुक़द्दस में कुरआने अज़ीम का नुज़ूल हुआ जो बनी नूअ़े इंसान के लिए सरापा हिदायत है लिहाज़ा अब आइये नुज़ूले कुरआने मुक़द्दस के हवाले से चंद बातें मुलाहिज़ा करते हैं।

माहे रमज़ानुल मुबारक जिस तरह से अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त का बहुत बड़ा इनाम है इसी तरह इस माहे मुबारक में कुरआने मुक़द्दस का

नुज़ूल भी मोमिनीन के लिए बहुत बड़ी दोलत है, कुरआन पाक वह नुस्ख़-ए-कीमीया है जो हमें ज़िंदगी के हर मोड़ पर उसूल व क़वानीन अता फ़रमाता है और कामयाब ज़िंदगी गुज़ारने का सलीक़ा सिखाता है।

लफ़्ज़े कुरआन के मअ़नी और अल्लाह عزوجل की इस मुक़द्दस किताब का नाम कुरआन क्यों रखा गया है उसे भी समझ लें ताकि अज़मते कुरआने मुक़द्दस दिल में बैठ जाए और फिर कुरआने मुक़द्दस किस तरह नाज़िल हुआ? कितनी मुद्दत में नाज़िल हुआ? इसे भी समझने की कोशिश करें ताकि कुरआने मुक़द्दस दिल के निहाँ ख़ाना में घर कर जाए।

लफ़्ज़े कुरआन के मअ़ानी और वजह तसमिया

लफ़्ज़े कुरआन या तो "قُرْءٌ" से बना है या "قِرَاءَةٌ" से। "قُرْءٌ" का माअ़ना जमा होना है, इस माअ़ना के लिहाज़ से 'कुरआन' को कुरआन कहने की चंद वजहें हैं।

☆ कुरआन सारे अव्वलीन व आख़रीन के उलूम का मजमूआ है, दीन व दुनिया का कोई भी ऐसा इल्म नहीं जो कुरआने करीम में न हो, जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया "وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ تِبْيَانًا لِّكُلِّ شَيْءٍ" हमने तुम पर एक किताब नाज़िल की जो हर चीज़ का रोशन बयान है।

☆ कुरआन सूरतों और आयतों का मजमूआ

☆ कुरआन तमाम बिखरे हुओं को जमा करने वाला है। देखो! हिंदी, सिंधी, अरबी, अजमी लोग, इनके लिबास, तआम, ज़बान, तरीक़े ज़िंदगी सब अलग हैं, कोई सूरत न थी कि यह अल्लाह तआ़ला के बिखरे हुए बंदे जमा होते लेकिन कुरआने करीम ने इन सब को जमा फरमाया और इनका नाम मुसलमान रखा, ख़ूद फ़रमाया "سَمّٰكُمُ الْمُسْلِمِيْنَ" इसने तुम्हारा नाम मुसलमान रखा।

और अगर "قِرَاءَةٌ" से बना है तो इसका माअ़ना है 'पढ़ी हुई चीज़।' इस मअ़ना के एतबार से भी इसको कुरआन कहने की चंद सूरतें हैं।

☆ दीगर अंबियाए किराम को किताबें या सहीफ़े हक़ तआ़ला की तरफ़ से लिखे हुए अता फ़रमाए गए लेकिन कुरआन करीम पढ़ा हुआ उतरा, इस तरह कि हज़रत जिब्रील अमीन علیہ السلام हाज़िर होते ओर पढ़

कर सुना जाते।

☆ जिस क़दर कुरआने करीम पढ़ा गया और पढ़ा जाता है इस क़द्र कोई दीनी व दुनियावी किताब दुनिया में न पढ़ी गई, क्योंकि जो आदमी कोई किताब बनाता है वह थोड़े से लोगों के पास पहुंचती है और वह भी एक आध बार पढ़ते हैं और फिर कुछ दिनों के बाद खत्म हो जाती हैं, इसी तरह पहली आसमानी किताबें भी ख़ास ख़ास जमाअतों में और कुछ दिनों रह कर अव्वलन तो बिगड़ीं फिर खत्म हो गईं।

मगर कुरआने करीम की शान यह है कि सारे आलम की तरफ़ आया और सारी खुदाई में पहुंचा। सबने पढ़ा, बार बार पढ़ा और दिल न भरा। अकेले में पढ़ा, जमाअतों के साथ पढ़ा। पुर लुत्फ़ बात तो यह है कि अपनों ने भी पढ़ा और कुफ़्फ़ार ने भी पढ़ा।

(तफ़्सीरे नईमीः जि.अव्वल मुलख़्ख़सन)

नुज़ूल का मआ्ना

नुज़ूल का माआ्ना है ऊपर से नीचे उतरना। कुरआने मुक़द्दस दो तरीक़ों से नाज़िल हुआ, (1) जिब्रीले अमीन आते थे और आकर सुनाते थे, यह नुज़ूल बज़रिया क़ासिद हुआ। (2) कुरआने करीम की बाज़ आयतें मेअराज में बग़ैर वास्त-ए-जिब्रीले अमीन नबी करीम ﷺ को अता की गईं। जैसा कि मिश्कात शरीफ़ बाबुल मेअराज में है कि सूरए बक़रा की आख़री आयतें हुज़ूर ﷺ को मेअराज में अता की गईं। लिहाज़ा कुरआन का नुज़ूल दूसरी आस्मानी किताबों के नुज़ूल से शानदार है कि वह लिखी हुई आईं और यह बोला हुआ आया और लिखने और बोलने में बड़ा फ़र्क़ है क्योंकि बोलने की सूरत में बोलने के तरीक़े से इतने मआ़नी बन जाते हैं कि जो लिखने से हासिल नहीं हो सकते। मषलन एक शख़्स ने हम को लिख कर दिया "तुम दिल्ली जाओ गे" तो इस लिखी हुई इबारत से हम एक ही मतलब हासिल कर सकते हैं, लेकिन इस जुमले को अगर वह बोले तो पाँच छः तरीक़ों से बोल कर इसके पाँच छः माआ्ना पैदा कर सकता है। ऐसे लहजों से बोल सकता है जिससे सवाल, हुक्म, तअज्जुब, तमस्ख़ुर वग़ैरा के माआ्ना पैदा हो जाऐं। (तफ़्सीरे नईमीः जि. अव्वल)

नुज़ूले कुरआन कितनी बार हुआ

कुरआने मुक़द्दस का नुज़ूल चंद बार हुआ, अव्वलन लोहे मेहफ़ूज़ से पहले आसमान की तरफ़ नुज़ूल हुआ कि यकबारगी माहे रमज़ान की शबे क़द्र में हुआ। इसी के बारे में कुरआने करीम में इर्शाद हुआ "شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِیْ اُنْزِلَ فِیْهِ الْقُرْآنُ" फिर नबी करीम ﷺ पर तेईस साल के अरसे में थोड़ा थोड़ा बक़द्रे ज़रूरत आता रहा और बाज़ आयतें दो दो बार भी नाज़िल हुई हैं, जैसे सूरह फ़ातिहा वग़ैरा। (कुतुबे तफ़ासीर)

खुलासा यह हुआ कि हुज़ूर علیہ الصلوٰۃ والسلام पर कुर्आन का नुज़ूल कई तरीक़ों से हुआ लेकिन एहकाम इस नुज़ूल से जारी फ़रमाए जाते थे जो बज़रिया जिब्रील अमीन थोड़ा थोड़ा आता था।

कुरआन मजीद और दीगर आस्मानी किताबों के नुज़ूल में फ़र्क़

कुरआन मजीद और दीगर आसमानी किताबों के नुज़ूल में तीन तरह का फ़र्क़ है।

☆ वह किताबें लिखी हुई आईं और कुरआन मुक़द्दस पढ़ा हुआ। यानी वह सब तहरीरी और कुरआन तक़रीरी शक्ल में आया।

☆ वह सब किताबें पैग़म्बरों को किसी ख़ास जगह बुला कर दी गईं मगर कुरआनी आयात अरब के गली कूचों बल्कि हुज़ूर ﷺ के बिस्तर शरीफ़ में आईं ताकि हिजाज़ का हर ज़र्रा अज़मत वाला हो जाए कि वह कुरआने मुक़द्दस का जाए नुज़ूल है।

☆ वह किताबें यकबारगी उतरीं और कुरआने मुक़द्दस तेईस साल में, ताकि हुज़ूर ﷺ से हमेशा हमकलामी होती रहे और मुसलमानों के लिए अमल करना आसान हो, क्योंकि यकदम सारे एहकाम पर अमल करना मुश्किल होता है। देखो बनी इस्राईल यकदम तोरात मिलने से घबरा गए और बोले "سَمِعْنَا وَ عَصَیْنَا" हम ने सुना और ना फ़रमानी की।

तिलावते कुरआन

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! रमज़ानुल मुबारक के साथ कुरआने मजीद का जो गहरा तअल्लुक़ है वह किसी पर मख़फ़ी नहीं, उसका नुज़ूल उसी माह में नबी अकरम ﷺ के क़ल्बे अक़दस पर शुरू हुआ, इस तअ़ल्लुक़ को रसूलुल्लाह ﷺ से बढ़ कर कौन जान सकता है। रमज़ान व कुरआन का तअल्लुक़ इस इर्शादे नबवी से भी वाज़ेह हो जाता है जो हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہ से मरवी है कि नबी अकरम ﷺ ने इर्शाद फ़रमायाः

रोज़ा और कुरआन क़यामत के दिन बंदे की शफ़ाअत करेंगे, रोज़ा कहेगा, ऐ अल्लाह! मैंने इसे खाने और ख़्वाहिशात से दिन में रोके रखा। कुरआन कहेगा, मैंने इसे रात को सोने से रोके रखा, मैं इसकी शफ़ाअत करता हूँ हमारी शफ़ाअत क़ुबूल फ़रमा। चुनान्चे दोनों की सिफ़ारिश क़ुबूल कर ली जाएगी। (मिश्कातः स.173)

लिहाज़ा हमें भी कुरआने मुक़द्दस की तिलावत को अपना मामूल बनाना चाहिए ताकि कुरआने मुक़द्दस के फ़ज़ाइल व फ़वाइद से हम भी बेहरावर हो सकें।

तरतील के साथ पढ़ो

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! इर्शादे रब्बानी है "وَ رَتِّلِ الْقُرْاٰنَ تَرْتِیْلًا" और कुरआन ख़ूब ठहर ठहर कर पढ़ो।

हज़रत अली رضی اللہ عنہ ने बयान फ़रमाया कि तरतील का माअ्ना है "تَجْوِیْدُ الْحُرُوْفِ وَ مَعْرِفَةُ الْوُقُوْفِ" हुरूफ़ को उनके मख़ारिज व सिफ़ात की सही अदाएगी के साथ पढ़ना और वक़्फ़ (ठहरने) की जगहों को पहचानना।

कुरआने मुक़द्दस को तरतील के साथ पढ़ना वाजिबे शरई है और इसका सीखना भी हर मुसलमान पर लाज़िम है। अगर कोई शख़्स तरतील का लिहाज़ किए बग़ैर कुरआने मुक़द्दस की तिलावत करे तो उसको षवाब के बजाए गुनाह होगा। लिहाज़ा हमें अपने बच्चों को दीनी

तालीम के लिए ऐसे असातज़ा और ऐसे मदारिस का इंतिख़ाब करना चाहिए जहाँ तरतील के साथ कुरआने मुक़द्दस पढ़ना सिखाया जाता हो और असातज़ा को भी ख़ास तोर पर अपने पास पढ़ने वाले तलबा के मख़ारिज व सिफ़ात दुरुस्त कराने की कोशिश करनी चाहिए वरना रोज़े क़यामत जवाबदेह होना पड़ेगा।

अल्लाह के प्यारे रसूल का मामूल

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद رضی اللہ عنہ को यह शर्फ़ हासिल है कि हुज़ूर नबी अकरम ﷺ उन्हें हर साल रमज़ानुल मुबारक में सारा कुरआन मजीद सुनाते और विसाल के साल दो बार कुरआन मजीद सुनाया।

जिब्रीले अमीन के साथ कुरआन मजीद का दौर

रमज़ानुल मुबारक में तिलावते कुरआन का यह आलम था कि हज़रत जिब्रीले अमीन علیہ الصلوٰۃ والسلام रमज़ानुल मुबारक में सिदरह छोड़ कर हुजरा-ए-नबवी में आ जाते, एक रमज़ान से दूसरे रमज़ान तक जो हिस्सा-ए-कुरआन नाज़िल हो चुका होता उसका हुज़ूर ﷺ से दोर करते, यानी जिब्रीले अमीन आपको कुरआन सुनाते और आप जिब्रीले अमीन को।

अल्लाह व रसूल से मुहब्बत का तक़ाज़ा

हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि जो शख़्स यह पसंद करता कि वह अल्लाह और उसके रसूल ﷺ से मुहब्बत करे पस वह कुरआने मजीद की तिलावत करे।

और नबी अकरम ﷺ ने इर्शाद फ़रमायाः बेशक! अल्लाह तआ़ला के कुछ दोस्त होते हैं। जब पूछा गया कि वह लोग कौन हैं? तो फ़रमाया, कुरआन वाले एहलुल्लाह हैं और ख़ास लोग हैं।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! नबी करीम ﷺ की ज़बाने मुक़द्दस से निकलने वाले अल्फ़ाज़ कभी ग़लत नहीं हो सकते। हम में से हर शख़्स अल्लाह से मुहब्बत का दावा करता है लेकिन जिसे ज़बाने नबी ﷺ अल्लाह का दोस्त कह दे फिर उसकी अज़मतों का क्या कहना। लिहाज़ा अगर अल्लाह से दोस्ती के दावा में अपने आपको

सच्चा साबित करना है तो कुरआन मुक़द्दस की तिलावत, उसके एहकाम पर सख़्ती से अमल करने को अपना मामूल बनाना होगा। अल्लाह عزوجل हमें इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन

अल्लाह की रस्सी

कुरआने मजीद जिसे कायनात के रुश्द व हिदायत के लिए अल्लाह तआ़ला ने नाज़िल फ़रमाया उसके तअल्लुक़ से हज़रत अबू सईद رضی اللہ عنہ बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया अल्लाह की किताब अल्लाह की रस्सी है जो आसमान से ज़मीन की तरफ़ ममदूद (खिंची हुई) है।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! इस हदीष से यह बात वाज़ेह होती है कि अगर कोई मअ्रफते ख़ुदावंदी हासिल करना चाहता है तो उसे कुरआने मुक़द्दस का सहारा लेना होगा, क्योंकि इस हदीष में उसे अल्लाह की रस्सी कहा गया है यानी उसके ज़रिया रब तक रसाई मुमकिन है। इसी मफ़हूम की एक और हदीष अल्लाह के प्यारे हबीब ﷺ से मन्क़ूल हैः आपने फ़रमाया, ''कुरआन का एक किनारा अल्लाह तआ़ला के दस्ते कुदरत में है और दूसरा किनारा तुम्हारे हाथों में, पस उसको मज़बूती से थाम लो बेशक! उसके बाद न तुम हलाक होगे और न ही गुमराह होगे।''

हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि ताजदारे मदीना ﷺ ने इर्शाद फ़रमायाः اِنَّ اللّٰہَ تَعَالٰی قَرَأَطٰہٰ وَیٰسٓ قَبْلَ اَنْ یَخْلُقَ السَّمٰوٰتِ وَالاَرْضَ بِاَلْفِ عَامٍ فَلَمَّا سَمِعَتِ الْمَلٰئِکَۃُ الْقُرْاٰنَ قَالَتْ طُوْبٰی لِاُمَّۃٍ یُنْزَلُ ھٰذَا عَلَیْھَا وَطُوْبٰی لِاَجْوَافٍ تَحْمِلُ ھٰذَا وَطُوْبٰی لِاَلْسِنَۃٍ تَتَکَلَّمُ بِھٰذَا तर्जुमाः बिलाशुबा अल्लाह عزوجل ने आसमान व ज़मीन को पैदा करने से एक हज़ार साल पहले सूरह "طٰہٰ و یٰسٓ" पढ़ी। जब फ़रिश्तों ने कुरआन सुना तो उन्होंने कहा, उस उम्मत को बशारत हो जिस पर कुरआन नाज़िल होगा और उन सीनों के लिए ख़ैर व ख़ूबी हो जो उसे अपने अंदर महफ़ूज़ करेंगे और उन ज़बानों के लिए ख़ुशख़बरी हो जिन से कुरआनी अल्फ़ाज़ अदा होंगे। (अह्याउल उलूम)

मुक़र्रब फ़रिश्तों में तज़किरा

एक मुक़ाम पर कुरआने मुक़द्दस के दर्स की मेहफ़िल में शरीक होने के हवाले से और अल्लाह के घर में तिलावत करने के हवाले से रहमते आलम ﷺ का फ़रमान पढ़िए और अपनी बेक़रारी को दूर करके सुकून की दौलत से माला माल हो जाइए।

अल्लाह के प्यारे रसूल ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया, जो क़ौम अल्लाह तआ़ला के घरों में से किसी घर में जमा होकर कुरआने मजीद की तिलावत करे और मुदारसत और दौर करे तो अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से उन पर सकीनत नाज़िल होती है, अल्लाह तआ़ला की रहमत उनको ढांप लेती है और फ़रिश्ते उनको घेर लेते हैं और उनका अेहाता कर लेते हैं और अल्लाह ﷻ उनका तज़किरा अपने मुक़र्रब फ़रिश्तों के पास करता है, और जिसने अमल करने में सुस्ती की उसका नसब नामा उसको फ़ायदा नहीं देगा। (सहीहुल जामेअ व मुख़्तसर मुस्लिम)

कुरआन की शफ़ाअत

बज़्ज़ाज़ की रिवायत है कि कुरआन का पढ़ने वाला जब इंतिक़ाल कर जाता है और उसके एहल ख़ाना तजहीज़ व तकफ़ीन में मस्रूफ़ होते हैं उस वक़्त कुरआन हसीन व जमील शक्ल में आता है और उस कुरआन पढ़ने वाले के सर के पास उस वक़्त तक खड़ा रहता है जब तक वह कफ़न में लपेट न दिया जाए। फिर जब वह कफ़न में लपेट दिया जाता है तो कुरआन कफ़न के क़रीब उसके सीने पर होता है। फिर जब उसको क़ब्र के अंदर रख दिया जाता है और मिट्टी डाल दी जाती है और उससे इसके ख़ेश व अक़ारिब रुख़सत हो जाते हैं तो उसके पास मुनकर नकीर आते हैं और उसको क़ब्र में बिठाते हैं इतने में कुरआन आता है और इस मय्यत और उन फ़रिश्तों के दर्मियान हाइल हो जाता है। वह दोनों फ़रिश्ते कुरआन से कहते हैं, हटो ताकि हम इससे सवाल करें! तो कुरआन कहता है कि रब्बे काबा की क़सम! यह नहीं हो सकता। बिला शुबा यह मेरा साथी और दोस्त है और उसकी हिमायत व हिफ़ाज़त से किसी हाल में बाज़ नहीं आ सकता (इसकी पूरी

हिमायत करता रहूंगा।) अगर तुम्हें किसी और चीज़ का हुक्म दिया गया है तो तुम उस हुक्म की तामील के लिए जाओ और मेरी जगह छोड़ दो, क्योंकि मैं जब तक इसे जन्नत में दाख़िल न कर लूंगा इससे रुख़सत नहीं हो सकता। उसके बाद कुरआन अपने साथी की तरफ़ देखेगा, और कहेगा कि मैं कुरआन हूँ जिसे तुम आवाज़ या बिला आवाज़ पढ़ते थे।

हर हर्फ़ के एवज़ रुत्बा बुलंद होगा

कुरआने पाक की तिलावत करने वाले की फ़ज़ीलत में एक और हदीष हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमर رضی اللہ عنہ से मंकूल है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमायाः-

क़यामत के दिन क़ारी कुरआन से कहा जाएगा कि पढ़ और सीड़िया चढ़ता चला जा, और जिस तरह तू दुनिया में तरतील के साथ पढ़ता था आज भी पढ़, तेरी मंज़िल वहाँ है जहाँ तू आख़री आयत पढ़ेगा।

इससे बढ़ कर कोई षवाब नहीं

कुरआने मुक़द्दस ऐसी किताब है कि उसका देखना, तिलावत करना, उसे याद करना, इसके माअ्नी में ग़ौर करना यह सारी चीज़ें इबादत में शुमार होती हैं, कुरआन मुक़द्दस की तिलावत करने पर अल्लाह عزوجل इतना सवाब अता फ़रमाता है जो हमारी अक़्ल से वरा है, जैसा कि रसूलुल्लाह ﷺ फ़रमाते हैं "مَنْ قَرَاَ الْقُرْاٰنَ ثُمَّ رَاٰی اَنَّ اَحَدًا اُوْتِیَ اَفْضَلَ مِمَّا اُوْتِیَ فَقَدِ اسْتَصْغَرَ مَا اَعْظَمَهُ اللّٰهُ تَعَالٰی" जिसने कुरआन पढ़ा फिर उसने यह समझा कि उसको जो सवाब मिला है उससे बढ़ कर किसी को सवाब मिल सकता है तो उसने यक़ीनन उसको मामूली समझा जिसको अल्लाह तआ़ला ने अज़ीम किया है।

ताजे करामत

हज़रत अबु हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है कि ताजदारे कायनात ﷺ ने फ़रमायाः

"یُجِیْٓءُ صَاحِبُ الْقُرْاٰنِ یَوْمَ الْقِیَامَةِ فَیَقُوْلُ یَا رَبِّ حُلَّهُ فَیُلْبَسُ تَاجَ الْکَرَامَةِ ثُمَّ یَقُوْلُ یَارَبِّ زِدْهُ فَیُلْبَسُ حُلَّةَالْکَرَامَةِ ثُمَّ یَقُوْلُ یَارَبِّ اِرْضَ عَنْهُ فَیُقَالُ لَهُ اِقْرَأْ وَارْقِ وَیُزْدَادُ بِکُلِّ اٰیَةٍ

"حَسَنَةٌ" यानी कुरआने पाक की तिलावत करने वाला क़यामत के दिन आएगा, कुरआन कहेगाः ऐ परवरदिगार! इसे आरास्ता फ़रमा दे। चुनान्चे उसे इज़्ज़तो शर्फ़ का ताज पहनाया जाएगा। फिर वह कहेगा, ऐ परवरदिगार! इसे और नवाज़ दे। उसके बाद उसे इज़्ज़त व शर्फ़ का जोड़ा पहनाया जाएगा। फिर वह कहेगा, ऐ रब! इससे राज़ी हो जा। अल्लाह तआ़ला इससे राज़ी हो जाएगा। फिर कुरआने मुक़द्दस की तिलावत करने वाले से कहा जाएगा, तुम कुरआन पढ़ते जाओ और बुलंदी पर चढ़ते जाओ! यहाँ तक कि वह हर आयत के साथ एक दरजा बढ़ता चला जाएगा। (तिर्मिज़ीः ज.2, स.119)

दिलों का ज़ंग

जब दिल ख़्वाहिशात में डूब जाते हैं और तरह तरह के गुनाह करने लगते हैं और वह अल्लाह عزوجل याद से ग़ाफ़िल हो जाते हैं और अपना मक़सदे ज़िंदगी फ़रामोश कर जाते हैं, उनकी कैफ़ियत यह हो जाती है कि उन पर तह ब तह ज़ंग चढ़ जाता है और यह ज़ंग पूरे जिस्म के फ़साद का सबब बन जाता है। जैसा कि ताजदारे कायनात ﷺ ने इर्शाद फ़रमायाः "اِنَّ هٰذِهِ الْقُلُوْبَ تَصْدَأُ كَمَا يَصْدَأُ الْحَدِيْدُ اِذَا اَصَابَهُ الْمَاءُ" बेशक! दिलों को भी ज़ंग लग जाता है जिस तरह लोहे को ज़ंग लग जाता है जब उसे पानी लग जाए। अब इस ज़ंग को कैसे साफ़ किया जाए, अपने दिल को कैसे सैक़ल किया जाए, वह कौन सी चीज़ है जिसके ज़रिये दिल पर लगे हुए ज़ंग को दूर किया जाए? सहाब-ए-किराम के दिलों में भी इस क़िस्म के सवालात पैदा हुए थे, उन्होंने मुअल्लिमे इंसानियत ﷺ की बारगाह में अर्ज़ किया "يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْكَ وَ سَلَّمَ وَمَا جِلَاؤُهَا قَالَ كَثْرَةُ ذِكْرِ الْمَوْتِ وَتِلَاوَةِ الْقُرْآنِ" उनकी सफ़ाई किस तरह होती है? फ़रमायाः मौत को कसरत से याद करना और कुरआन की तिलावत करना। (मिशकातः 189)

अस्लाफ़े किराम की तिलावत का अंदाज़

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! रसूले आज़म ﷺ से लेकर सहाब-ए-किराम علیہم الرحمۃ والرضوان और ताबेईन से लेकर आज तक के ओलिया किराम علیہم الرحمۃ والرضوان की ज़िंदगी का मुताला करें तो हमें सबके

सब तिलावते कुरआन के साथ दिल को हाज़िर रखने वाले ही मिलेंगे, तरग़ीब के लिए इन बुजुर्गों के चंद वाक़िआत नक़ल कर रहे हैं ताकि हम भी वक़्ते तिलावत अपने दिलों को हाज़िर रख सकें और हम पर खुशूअ व खुज़ूअ की कैफ़ियत तारी रहे।

हज़रत उमर رضی اللہ عنہ नमाज़ में ऐसी सूरतें पढ़ते जिनमें क़यामत की होलनाकियों का ज़िक्र या खुदा की अज़मत व जलालत का बयान होता और इन चीज़ों से आप इस क़दर मुतास्सिर होते कि रोते रोते हिचकी बंध जाती, चुनान्चे हज़रत इमाम हसन رضی اللہ عنہ बयान करते हैं कि हज़रत उमर رضی اللہ عنہ एक बार नमाज़ पढ़ रहे थे, जब इस आयत पर पहुंचे "اِنَّ عَذَابَ رَبِّکَ لَوَاقِعٌ مَّا لَهٗ مِنْ دَافِعٍ" बिला शक व शुब्हा तेरे रब का अज़ाब वाक़ेअ होकर रहेगा, इसका कोई देफ़अ करने वाला नहीं। तो इस क़दर रोए कि रोते रोते आंखें वरम कर आईं।

कंज़ुल उम्माल में है कि एक नमाज़ में आप ने यह आयत पढ़ी "وَاِذَآ اُلْقُوْا مِنْهَا مَكَانًا ضَيِّقًا مُّقَرَّنِيْنَ دَعَوْا هُنَالِكَ ثُبُوْرًا" और जब उसकी किसी तंग जगह में डाले जाएंगे ज़ंजीरों में तो वहां मौत मांगेंगे।

यह आयत पढ़ कर आप पर ऐसा ख़ौफ़ व खुशू तारी हुआ और आपकी हालत इतनी ग़ैर हुई कि अगर लोगों को यह मालूम न होता कि आप पर इस तरह की आयतों का ऐसा असर हुआ करता है तो समझते कि आप वासिले बहक़ हो गए।

इसी तरह ज़दा इब्ने औफ़ी رضی اللہ عنہ का भी वाक़िआ है जो सहाबी थे, एक मर्तबा इमामत कर रहे थे और क़िरात में एक आयत पढ़ी तो वह बेहोश हो गए और बाद में इंतिक़ाल कर गए।

इसी तरह अबू जहीर رضی اللہ عنہ जो ताबेई थे, उनके सामने सालेह अल्मरी ने तिलावते कुरआन की तो वह बेहोश होकर रहलत कर गए।

तिलावते कुरआन के फ़वाइद

जहाँ कुरआने मुक़द्दस की तिलावत से हमारा नामा-ए-आमाल नेकियों से भरता रहता है वहीं इसमें दुनियावी फ़वाइद भी हैं, इस कलाम में शिफ़ा भी है जैसा कि अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया "وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ" और हम कुरआन में उतारते हैं वह

चीज़ जो ईमान वालों के लिए शिफ़ा और रहमत है।

यानी कुरआने मुक़द्दस की तिलावत से शिफ़ा मिलती है और मरीज़ को राहत हो जाती है। बेशुमार वाक़िआत हमें किताबों में मिलेंगे जिसमें कुरआने मुक़द्दस की आायत से ऐसे ऐसे मरीज़ों को शिफ़ा मिली है जिनकी आफ़ियत और सेहत याबी एक मुश्किल अम्र था।

जैसा कि हकीम मोहम्मद तारिक़ महमूद चुग़ताई अपनी तस्नीफ़ ''सुन्नते नबवी और जदीद साईंस'' में लिखते हैं:

दिल को जाने वाली ख़ून की रगों में रुकावट आने से दौरा पड़ता है, सांस की नालियां बंद हो जाऐं तो सांस लेने में तकलीफ़ होती है यह दोनों बीमारियां छाती में घुटन से पैदा होती हैं। कुरआने मुक़द्दस की आयत ने इस बाब में अपनी इफ़ादियत का बड़ा एहम तज़किरा फ़रमाया है "قَدْ جَاءَكُمْ مَّوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَ شِفَاءٌ لِّمَا فِي الصُّدُوْرِ" तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से हिदायत का सर चश्मा आया है जो कि सीने के अंदर के मसाइल के लिए शिफ़ा है।

इस आयते मुबारका को सुबह व शाम तीन मर्तबा पढ़ कर मरीज़ अपने ऊपर फूंक ले तो इन मसाइल से नजात हो जाती है।

एक बुज़ुर्ग के साहबज़ादे को दिल का दौरा पड़ा उन्होंने किसी डा. से रुजूअ करने के बजाए अपने बेटे पर कुरआने मजीद की यह आयत पढ़ कर सुबह व शाम दम किया, यह नौजवान तंदरुस्त हो गया। "وَلَقَدْ نَعْلَمُ اَنَّكَ يَضِيْقُ صَدْرُكَ بِمَا يَقُوْلُوْنَ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَ كُنْ مِّنَ السَّاجِدِيْنَ وَ اعْبُدْ رَبَّكَ حَتّٰى يَاْتِيَكَ الْيَقِيْنُ" उन बुज़ुर्ग को मालूम होने पर हम अपने दिल और दमा के मरीज़ों को पिछले दस सालों से यह मुबारक आयत सुबह व शाम तीन मर्तबा पढ़ने और नमाज़ पढ़ने से इन बीमारियों का एक भी मरीज़ ज़ाए न हुआ। यह अल्लाह का फ़ज़्ल और कुरआन मजीद की बरकत ही है।

एक दो साल बच्चा शदीद दमा में मुबतिला था, उसको दवाएं देने के बजाए कुरआने मजीद की यह आयत सुबह व शाम तीन-तीन बार पढ़ कर फूंकने की हिदायत की और गर्म पानी में शहद देने की हिदायत की। उस बच्चे को पिछले दो माह से दमा का एक भी दौरा

नहीं पड़ा। الحمد لله कुरआने मजीद हर हाल में शिफा है।''

मेरे प्यारे आका ﷺ के प्यारे दीवानो! इसके अलावा और भी बहुत से वाकि़आत उन्होंने अपनी तस्नीफ़ में तहरीर फ़रमाया है, यहाँ इसी पर इख़्तिसार किया जाता है। इन फ़वाइद को मद्दे नज़र रखते हुए हमें कुरआने मुक़द्दस की तिलावत की कोशिश करनी चाहिए और दिन में कम अज़् कुछ आयतें ज़रूर पढ़ लेनी चाहिए कि इसमें बेशुमार फ़वाइद व फ़ज़ाइल हैं। अल्लाह عزوجل की बारगाह में दुआ है कि हमें इस की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन

समाअते कुरआन मजीद

मेरे प्यारे आपका ﷺ के प्यारे दीवानो! कुव्वते समाअ़त भी अल्लाह عزوجل की बहुत बड़ी नेअ़मत है, इंसान के पास अगर कुव्वते समाअत न हो तो भली बात भी नहीं सुनता बल्कि अज़ान व कुरआन जैसी मुक़द्दस आवाज़ें भी नहीं सुन सकता। ऐसा शख़्स जो कुव्वते समाअत से महरूम हो वह अपने दिल में हज़ारहा आरज़ुएं लिए रहता है कि काश! अल्लाह मुझे सुनने की कुव्वत अता फ़रमाता तो मैं भी अच्छे कलाम सुनता। लेकिन बहुत से ऐसे भी बंदे हैं जो कुव्वते समाअत से माला माल तो हैं लेकिन उनको अज़ान व कुरआन और नअ़त के बजाए गाने और म्यूज़िक वग़ैरा से दिलचस्पी है और वह अपनी गाड़ियों से लेकर दुकानों व मकान सब में गानों, ग़ज़लों और म्यूज़िक ही को सामाने तसकीन समझते हैं।

माहे रमज़ानुल मुबारक ऐसे लोगों को भी कुरआने मुक़द्दस की तिलावत सुनने पर आमादा कर देता है और वह भी कुरआन मुक़द्दस तरावीह में सुन कर अपनी रूह को मुनव्वर कर लेते हैं, आइए समाअते कुरआन की बरकतें और कुरआन सुनने वालों की कैफ़ियत कुरआन मुक़द्दस की रोशनी में समझें ताकि समाअते कुरआन का जज़्बा भी पैदा हो और कैफ़ियते सुरूर हो।

सामईने कुरआन के तबक़ात

कुरआने मुक़द्दस सुनने वालों के मुख़्तलिफ़ तबक़े हैं और हर तबक़ा समाअत का एक तरीक़ रखता है, सबसे पहले हम उस तबक़े का ज़िक्र कर रहे हैं जिन्होंने फ़क़त कुरआने मुक़द्दस की समाअत को इख़्तियार

किया और मंदरजा ज़ैल आयात से इस्तिदलाल किया।

"اَلَّذِيْنَ يَسْتَمِعُوْنَ الْقَوْلَ فَيَتَّبِعُوْنَ اَحْسَنَهٗ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ هَدٰهُمُ اللّٰهُ وَ اُولٰٓئِكَ هُمْ اُولُوا الْاَلْبَابِ" जो कान लगा कर बात सुनें फिर उसके बेहतर पर चलें, यह हैं जिनको अल्लाह ने हिदायत फ़रमाई और यह हैं जिनको अक़ल है।

वह लोग जिन्होंने समाअत कुरआन को अपने लिए इख़्तियार फ़रमा कर बतौरे हुज्जत मज़कूरा आयतें पेश कीं इसके अलावा भी आयात व अहादीष का ज़ख़ीरा समाअ़ते कुरआन से मुतअल्लिक़ है।

समाअते कुरआन से मुतअल्लिक़ मज़कूरा तबक़ा ने आयात के साथ साथ अहादीषे से भी इस्तिशहाद किया है, जैसा कि हुज़ूर रिसालत मआब ﷺ ने हज़रत मसऊद رضی اللہ عنہ ने अर्ज़ किया, मैं क्यों कर आपके सामने तिलावत की जसारत करूँ कि आप पर कुरआन उतरा है, हुज़ूर रहमते आलम ﷺ ने फ़रमाया, मैं अपने अलावा दूसरे से तिलावते कुरआन सुनना पसंद करता हूँ। (मिश्कातः स.190)

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! मज़कूरा हदीषे मुबारका से हुज़ूर ﷺ की पसंद का इल्म हुआ कि कुरआने मुक़द्दस सुनना हुज़ूर ﷺ को पसंद है, तिलावते कुरआने मुक़द्दस के सुनने पर हुज़ूर रहमते आलम ﷺ और सहाबाए किराम علیہم الرحمۃ والرضوان पर अजीब सी कैफ़ियत तारी होती जैसा कि क़ौले रसूल ख़ैरुलअनाम ﷺ है। ''मुझे सूरए हूद और उस जैसी सूरतों ने, जिनमें अज़ाबे इलाही का ज़िक्र है बूढ़ा कर दिया।''

कुरआने मुक़द्दस में सामेअ़ की दो क़िस्में बयान की गई हैं, एक क़िस्म के बारे में यूँ इर्शाद हुआ "وَ مِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُ اِلَيْكَ حَتّٰٓى اِذَا خَرَجُوْا مِنْ عِنْدِكَ قَالُوْا لِلَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ مَاذَا قَالَ اٰنِفًا" और उनमें से बाज़ तुम्हारे इर्शाद सुनते हैं, यहाँ तक कि जब तुम्हारे पास से निकल कर जाऐं, इल्म वालों से कहते हैं कि अभी उन्होंने क्या फ़रमाया।

यह तो वह लोग जो कुरआन को अपने कानों से सुनते हैं मगर उनके दिल हाज़िर नहीं होते, वह लोग जो कुरआन सुनते हैं और उनका दिल ग़ैर हाज़िर रहता है, कुरआन ही ने उनकी मुज़म्मत की है और उन लोगों से ख़िताब फ़रमाया "وَ لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ قَالُوْا سَمِعْنَا وَ هُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ"

और उन जैसे न होना जिन्होंने कहा हमने सुना और नहीं सुनते।

और दूसरी क़िस्म कुरआन सुनने वालों की वह है जिनका ज़िक्र इस आयते करीमा में आया, अल्लाह इर्शाद फ़रमाया है "وَاِذَا سَمِعُوْا مَا اُنْزِلَ اِلَى الرَّسُوْلِ تَرٰى اَعْيُنَهُمْ تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ مِمَّا عَرَفُوْا مِنَ الْحَقِّ" और जब सुनते हैं वह जो रसूल की तरफ़ उतरा तो उनकी आंखें देखो कि आंसूओं से उबल रही हैं, इसलिए कि वह हक़ को पहचान गए हैं।

यह आयत उन लोगों के बारे में नाज़िल हुई जो पहले नसरानी थे, जब कुरआने करीम की आयतें नाज़िल हुईं और उन्होंने सुना तो उनके दिल की दुनिया बदल गई और आंखों से आंसू जारी हो गए और उन्होंने मज़हबे इस्लाम को क़ुबूल कर लिया। अगर हम ईमान के साथ कुरआने मुक़द्दस के सुनने के आदी हो जाएं तो इन्शाअल्लाह हमारे दिलों की दुनिया भी बदल जाएगी और हमारे दिल में ईमान की वह रोशनी पैदा होगी कि हम बुराइयों से इज्तिनाब करके नेकियों की तरफ़ माइल हो जाऐंगे।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! मंदरजा बाला सुतूर में समाअते कुरआन और कुरआन शरीफ़ के अफ़रात से मुतअल्लिक़ आपने पढ़ा, यह बातें इसलिए क़लमबंद की गईं ताकि माहे रमज़ानुल मुबारक में सिर्फ़ कुरआने मुक़द्दस यूँ ही न सुना जाए बल्कि हुज़ूरी ये क़ल्ब के साथ सुनने का जज़्बा पैदा हो और कोशिश करें कि जिन आयतों को तरावीह में क़ारी ने तिलावत किया है उनके माअ्ना और मफ़हूम को तर्जुमा और तफ़सीर में पढ़ लें। इंशाअल्लाह अजीब सी लज़्ज़त पैदा होगी और ईमान में इज़ाफ़ा होगा। हालते नमाज़ में पूरे कुरआन मुक़द्दस को सुनने का मोक़ा सिर्फ और सिर्फ माहे रमज़ानुल मुबारक में ही आता है लिहाज़ा इस वक़्ते सईद को ज़ाएअ् होने से बचाएं और हमातन गोश होकर कुरआने मुक़द्दस समाअत फ़रमाएं।

समाअते कुरआन की फ़ज़ीलत

हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमायाः जो कुरआन मजीद की आयत सुनता है अल्लाह عزوجل उसके लिए इज़ाफ़ा की हुई नेकी लिख देता है और जो उसकी तिलावत करता है तो यह आयत क़यामत के दिन इसलिए नूर होगी।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! मज़कूरा हदीष शरीफ़ समाअते कुरआन की फ़ज़ीलत को जामेअ् है कि अल्लाह عزوجل सामईने कुरआन को इज़ाफ़ा की हुई नेकी लिखता है। उस नेकी में कितना इज़ाफ़ा किया जाता है उसका ज़िक्र न फ़रमाने में यह हिकमत पोशीदा है कि अल्लाह तआ़ला करीम है वह अपनी शाने करीमी के एतबार से उस नेकी में इज़ाफ़ा फ़रमाता है। हमें तो समाअते कुरआन के लिए सिर्फ इतना ही काफ़ी है कि हमारे नबी ﷺ ने समाअते कुरआन का एहतमाम फ़रमाया है और कुरआन सुनना भी हुज़ूर ﷺ की सुन्नते है।

अल्लाह عزوجل की बारगाह में दुआ है कि हमें इसकी तौफीक़ अता फ़रमाए।

माहे रमज़ान और तरावीह का एहतेमाम

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! अल्लाह के प्यारे महबूब दानाए ग़ुयूब ﷺ ने इर्शाद फ़रमायाः रमज़ान मेरी उम्मत का महीना है।

इस हदीष की एक तशरीह यह भी की गई है कि रमज़ान अल्लाह तआ़ला ने मेरी उम्मत को इसलिए अता फ़रमाया है ताकि वह इसमें ख़ूब-ख़ूब इबादत करें और रज़ाए इलाही हासिल करें, दिन में रोज़ा रखें, रात में नवाफ़िल अदा करें, कुरआने मुक़द्दस की तिलावत करें, अल्लाह की राह में अपने माल को ख़र्च करें, ग़रीबों, यतीमों और मिस्कीनों की मदद करके अल्लाह की रहमतों के हक़दार बन जाऐं।

चूंकि पूरे साल मज़कूरा बाला आमाल का करना एक मुश्किल अम्र है इसलिए अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों को एक ऐसा महीना अता फ़रमाया कि कम अज़ कम मुसलमान इस महीने में अल्लाह तआ़ला की इबादत पर ख़ुसूसी तवज्जह दें।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! जिस तरह दीगर सारी इबादतें एक एहम मुक़ाम रखती हैं इसी तरह नमाज़े तरावीह की भी बेशुमार फ़ज़ीलतें अहादीष में मंक़ूल हैं और नबी करीम रऊफ़ व रहीम ﷺ का इस पर मदावमत करना भी मंक़ूल है। इसका बग़ोर मुताला करें और नमाज़े तरावीह को अदा करने के लिए अपने आपको तैयार करें।

तरावीह का माअ्ना

लफ़्ज़े तरावीह "تَـــرْوِيْـحَةٌ" की जमा है जिसका माअ्ना है "कुछ देर आराम करना" चूंकि इस नमाज़ में हर चार रकआत के बाद उसी की मिक़्दार बैठते हैं इसी वजह से उसे तरावीह कहते हैं।

नबी-ए-अकरम नूरे मुजस्सम का मामूल

नबी करीम ﷺ से भी तरावीह का सुबूत मंक़ूल है जैसा कि हज़रत इब्ने अब्बास رضی اللہ عنہما बयान फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ रमज़ान में बीस रकआत तरावीह पढ़ते थे।

(मुसन्निफ़ इब्ने अबी शैबा, जि.2, स.394)

तरावीह पर सहाबाए किराम की मुदावमत

नबी करीम ﷺ के दोर में तरावीह अदा की जाती थी मगर उस दोर में इसका एहतमाम नहीं किया जाता था जैसा अब किया जाता है, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब رضی اللہ عنہ के दोरे ख़िलाफ़त में तरावीह के बीस रकआत होने पर इजमाअ़ हुआ और आज तक इस पर एहले इस्लाम का अमल है। जैसा कि एक रिवायत हज़रत अब्दुल रहमान बिन अब्द क़ारी से है, उन्होंने बयान फ़रमाया कि मैं रमज़ानुल मुबारक में हज़रत उमर बिन ख़ताब رضی اللہ عنہ के साथ मस्जिद में गया, वहाँ लोग अलग अलग नमाज़ पढ़ रहे थे, हज़रत उमर ने कहा, बख़ुदा! मैंने सोचा है कि अगर इन तमाम लोगों को एक क़ारी की इक़्तिदा में जमा कर दूँ तो बेहतर होगा। फिर हज़रत उबेय बिन कअ़ब की इक़्तिदा में उनको जमा कर दिया। फिर एक रात देखा कि लोग अपने क़ारी की इक़्तिदा में नमाज़ पढ़ रहे थे, हज़रत उमर ने फ़रमाया कि यह अच्छी बिदअत है और लोग तरावीह अव्वल वक़्त में पढ़ते थे।

तरावीह की रकआ़त

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! तरावीह बीस रकआत सहाबा-ए-किराम رضوان اللہ تعالیٰ علیہم اجمعین ही के दोर से पढ़ी जा रही है।

मुतअद्दिद अहादीषे करीमा में यह बात मज़कूर है कि सहाबा किराम बीस रकआत तरावीह पढ़ा करते थे, इसी सिलसिले की चंद अहादीष हम ज़िक्र कर रहे हैं।

हज़रत यज़ीद बिन रूमान رضی اللہ عنہ बयान करते हैं कि كَانَ النَّاسُ يَقُوْمُوْنَ فِي زَمَنِ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ فِيْ رَمَضَانَ بِثَلٰثٍ وَّ عِشْرِيْنَ رَكْعَةً" हज़रत उमर बिन ख़ताब رضی اللہ عنہ के दौर में लोग (बशमूले वित्र) तेईस रकअ़त पढ़ते थे। (मोअत्ता)

इसी तरह एक और रिवायत इब्ने नसर ने साइब से की है कि सहाबाए किराम रमज़ान में बीस रकआत क़याम करते थे और हज़रत उमर के एहद में (शिद्दते क़याम से) लाठियों से टेक लगा लिया करते थे।

इसी तरह एक और रिवायत हज़रत अली رضی اللہ عنہ के बाज़ असहाब से है कि हज़रत अली رضی اللہ عنہ रमज़ानुल मुबारक में बीस रकआत तरावीह पढ़ाते और तीन रकअ़त वित्र।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! मज़कूरा बाला रिवायतें और उनके अलावा भी रिवायतें हैं जिन से तरावीह की रकआ़त के बीस होने का सुबूत मिलता है।

तरावीह की फ़ज़ीलत

हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमायाः "مَنْ قَامَ رَمَضَانَ اِيْمَاناً وَّ اِحْتِسَاباً غُفِرَ لَهٗ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهٖ जिस शख़्स ने रमज़ान में ईमान के साथ और सवाब की नियत से क़याम किया उसके पिछले गुनाह बख़्श दिए जाते हैं। (बुख़ारी, जि.1, स.269)

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! अल्लामा नौवी رحمۃ اللہ علیہ फ़रमाते हैं कि इस हदीष में क़यामे रमज़ान से मुराद तरावीह है। एहनाफ़ के नज़दीक तरावीह की नमाज़ सुन्नते मोअक्किदा है।

मज़कूरा हदीष में अल्लाह के प्यारे हबीब ﷺ ने बयान फ़रमाया, तरावीह पढ़ना गुनाहों की माफी का ज़रिया है क्योंकि तरावीह नफ़्ली इबादत है और अल्लाह तआ़ला का इर्शादि पाक है। "اِنَّ الْحَسَنَاتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّئَاتِ' बेशक नेकियाँ बुराइयों को ख़त्म कर देती हैं। हम जाने अंजाने

में बेशुमार गुनाह कर बैठते हैं। अल्लाह के प्यारे हबीब ﷺ ने गुनाहों की माफ़ी का एक बेहतरीन नुस्ख़ा हमें अता फ़रमाया, ऐसे में हमारी ज़िम्मेदारी है कि माहे रमज़ानुल मुबारक में तरावीह का एहतेमाम करके अपने गुनाहों को माफ़ कराएं।

मगर एक बात और याद रहे कि मज़कूरा हदीष शरीफ़ में गुनाहों की माफ़ी से मुराद सग़ीरा गुनाहों की माफ़ी या कबीरा गुनाहों में तख़फ़ीफ़ है। क्योंकि कबाइर की माफी या तौबा से होती है या शफाअत से या अल्लाह के फ़ज़ले महज़ से। अल्लाह عزوجل की बारगाह में दुआ है कि हमें माहे रमज़ानुल मुबारक में ख़ूब से ख़ूब इबादत करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

तरावीह में ख़त्मे कुरआन

मुस्तहब यह है कि रमज़ानुल मुबारक में तरावीह में कम अज़ कम एक मर्तबा कुरआने मुक़द्दस का ख़त्म किया जाए। रिवायात में सहाबा-ए-किराम رضوان اللہ تعالیٰ علیہم اجمعین का इस पर मामूल भी मंक़ूल है और इस पर ताकीद भी आई है। जैसा कि हज़रत हसन رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि जो शख़्स रमज़ान में इमामत करे वह मुक़्तदियों पर आसानी करे अगर वह आहिस्ता क़िराअत हो तो रमज़ानुल मुबारक में एक कुरआन ख़त्म करे और अगर दर्मियानी क़िराअत करता हो तो डेढ़ कुरआन ख़त्म करे और अगर तेज़ क़िराअत करता हो तो रमज़ानुल मुबारक में दो ख़त्म करे।

मज़कूरा बाला रिवायत से यह बात साबित होती है कि कम अज़ कम तरावीह में एक ख़त्म करना चाहिए। इसी तरह एक और रिवायत में हज़रत अबू उष्मान बयान करते हैं कि हज़रत उमर رضی اللہ عنہ रमज़ान में तीन क़ारी नमाज़ पढ़ाने के लिए मुक़र्रर फ़रमाते, जो सबसे तेज़ क़िराअत करने वाला होता उसको (एक रकअत में) तीस आयात पढ़ने का हुक्म देते, दर्मियानी रफ़्तार से क़िराअत करने वाले को पच्चीस आयात पढ़ने का हुक्म देते और आहिस्ता क़िराअत करने वाले को बीस आयात पढ़ने का हुक्म देते।

लिहाज़ा हमें भी कम अज़ कम तरावीह में एक ख़त्म कुरआन

कर ही लेना चाहिए और अल्लाह तआ़ला तौफ़ीक़ दे तो दो या तीन ख़त्म कर लें। अल्लाह तआ़ला की बारगाह में दुआ है कि हमें उसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन

हुज़ूर नबी-ए-रहमत ﷺ और माहे रमज़ान का आख़री अशरा

रमज़ानुल मुबारक के पूरे महीने में नबीए कौनेन साहिब क़ाब कौसेन ﷺ ख़ूब-ख़ूब इबादत किया करते थे लेकिन रमज़ानुल मुबारक के आख़री अशरा में दीगर उमूर से अपनी तवज्जोह हटा कर ख़ुसूसी तौर पर इबादत में लग जाते। जैसा कि एक हदीष में है कि महबूबे रब्बुल आलमीन ﷺ रमज़ान के आख़री दस दिनों के अंदर जितनी इबादत करते थे दूसरे अय्याम के मुक़ाबला में बहुत ज़्यादा होती।

इसी तरह एक हदीष हज़रते आइशा सिद्दीक़ा رضی اللہ عنہا से मरवी है वह फ़रमाती हैं "كَانَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِذَا دَخَلَ الْعَشْرَ شَدَّ مِئْزَرَهٗ وَ اَحْيٰى لَيْلَهٗ وَ اَيْقَظَ اَهْلَهٗ" जब माहे रमज़ान का आख़री अशरा आता था तो हुज़ूरे अक़दस ﷺ अपने तहबंद को मज़बूत बांध लेते थे और रात भर इबादत करते थे और अपने घर वालों को इबादत के लिए जगाते थे। (बुख़ारीः जि.1 स.271, मिश्कात 182)

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! मज़कूरा हदीष शरीफ़ में उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा رضی اللہ عنہا ने जो यह फ़रमाया कि ''माहे रमज़ानुल मुबारक के आख़री अशरा में हुज़ूर रहमते आलम ﷺ तहबंद कस लेते थे'' उलमाए किराम इसकी कई तौज़ीहात और मतालिब बयान फ़रमाते हैं। तहबंद कस लेने का एक मतलब तो यह कि ख़ूब मेहनत और कोशिश से इबादत करते थे और शब भर जागते थे और आराम वग़ैरा का ख़्याल न फ़रमाते थे, और इसका दूसरा मतलब यह लिया गया है कि माहे रमज़ानुल मुबारक के आख़री अशरा में रहमते आलम ﷺ अपनी अज़वाज के क़ुर्ब से भी गुरेज़ करते क्योंकि सारी रात इबादत में गुज़र जाती थी और एतेकाफ़ भी होता था।

मज़कूरा हदीष पाक में एक लफ़्ज़ "اَيْقَظَ اَهْلَهٗ" भी आया है। इसका मतलब यह है कि माहे रमज़ानुल मुबारक के आख़री अशरा में रहमते आलम ﷺ ख़ूद भी इबादत करते और अपने एहल व अयाल

को भी इबादत के लिए जगाते थे। मालूम यह हुआ कि माहे रमज़ानुल मुबारक के आख़री अशरा में हमें ख़ूद भी इबादत करना चाहिए और अपने एहल व अयाल को भी इबादत के लिए आमादा करना चाहिए।

आज हमारा हाल यह है कि हम माहे रमज़ानुल मुबारक के आख़री अशरा में सिर्फ़ 27 वीं शब के इंतिज़ार में होते हैं और 27 वीं के बाद तो मस्जिद में ऐसा लगता है कि जैसे माहे रमज़ानुल मुबारक रुख़सत हो गया हो! तरावीह व नमाज़ वग़ैरा में लोगों की तादाद घट जाती है और बाज़ारों में चलने की जगह नहीं होती। याद रखें! रसूले आज़म ﷺ की मज़कूरा सुन्नत पर भी अमल की कोशिश हम सब को करनी चाहिए ताकि माहे रमज़ानुल मुबारक की बरकतों से सहीह तौर पर फ़ैज़याब हो सकें। मैं यह नहीं कहता कि माहे रमज़ानुल मुबारक में अपने और अपनी औलाद वग़ैरा के लिए ख़रीद व फ़रोख़्त न करें बल्कि मक़सूद यह है कि सिर्फ उसी में अपना वक़्त ज़ाएअ् न करें बल्कि इबादत व रियाज़त के लिए भी वक़्त निकालें और आख़री अशरा में ख़ूब से ख़ूब इबादत व रियाज़त करने की कोशिश करें, और इस बात का भी ख़्याल रहे कि सिर्फ़ तंहा इबादत करके अपनी औलाद को खेल कूद के लिए न छोड़ दें! बल्कि उनको इबादत के लिए आमादा करें, जगाएं, क़ुरआन शरीफ की तिलावत, तौबा व इस्तिग़फार, नवाफ़िल की कषरत वग़ैरा पर आमादा करें। इंशाअल्लाह यह तर्बियत हमारी औलाद के लिए और हमारे लिए भी मुफ़ीद होगी और हमारे मरने के बाद औलाद अगर इस पर क़ायम रही तो इंशाअल्लाह उसका फ़ायदा हमें भी ज़रूर पहुंचेगा।

माहे रमज़ान और सख़ावत

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! माहे रमज़ानुल मुबारक के आते ही लोगों के दिलों में जज़बा-ए-सख़ावत बेदार हो जाता है। ग़रीब हो या अमीर हर कोई सख़ावत के जज़बे से सरशार हो जाता है। वक़्ते इफ़तार ग़रीब से ग़रीब इंसान भी कुछ न कुछ मस्जिद में लेकर आता है और इफ़तार कराने में ख़ुशी महसूस करता है। इसी तरह सरमायादार भी हर तरफ़ नेअ्मते ख़ुदावंदी को तक़सीम करके सवाब कमाने में मसरूफ़ होता है और ग़रीबों की झोलियों को भरने में लग

जाता है। अल्लाह عزوجل माहे रमज़ानुल मुबारक की बरकतें हर एक पर बिखेरता है। देखिए जो नेअ्मतें ग़रीब साल भर चख नहीं सकता वह नेअ्मतें ग़रीब के दस्तरख़्वान पर भी नज़र आती हैं। आख़िर यह बरकतें माहे रमज़ानुल मुबारक में क्यों कर मयस्सर आती हैं?

वजह ज़ाहिर है कि जब अल्लाह عزوجل के फ़रमान पर उसके बंदों में से 80 फ़ीसद मुस्लिम बंदे अमल पैरा हों तो अल्लाह عزوجل क्यों कर बरकतें नाज़िल न फ़रमाएगा? मैं यक़ीन के साथ कहता हूँ अगर उम्मते मुस्लिमा साल भर एहकामे ख़ुदावंदी और फ़रमाने रिसालते मआब ﷺ की बजा आवरी में मस्रूफ़ रहे तो साल भर बरकत ही बरकत नज़र आएगी। इंशाअल्लाह!

बहुत सारे आमाल बंदे जज़ा व सज़ा से बेख़बर होकर यूँ ही कर गुज़रते हैं हांलाकि कुरआने मुक़द्दस इन आमाल की जज़ा व सज़ा का तसव्वुर पेश करता है। आइए हम कुरआने मुक़द्दस की रोशनी में अल्लाह की राह में उसकी रज़ा की ख़ातिर ख़र्च करने की फ़ज़ीलत मालूम करें ताकि आज के बाद जब अल्लाह की रज़ा की ख़ातिर कोई चीज़ ख़र्च करें तो मौला का फ़रमान पेशे नज़र हो। अल्लाह तबारक व तआ़ला कुरआने मुक़द्दस में इर्शाद फ़रमाता है "يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْفِقُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا كَسَبْتُمْ" ऐ ईमान वालो! अपनी पाक कमाइयों में से कुछ दो।

सख़ावत, जूद, बुख़्ल और शुह में फ़र्क़

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! सख़ावत यह है कि अपना माल अपने ऊपर भी ख़र्च करे और दूसरों पर भी ख़र्च करे। जूद यह है कि ख़ूद फ़ायदा न उठाए बल्कि सिर्फ दूसरों को अपने माल से फ़ायदा पहुंचाए। बुख़्ल यह है कि अपने माल से ख़ूद मुतमत्तअ् हो और दूसरों को इससे फ़ायदा न पहुंचाए। शुह यह है कि न ख़ुद मुतमत्तअ् हो न दूसरों को मुतमत्तअ़ होने दे।

इंफ़ाक़ की दो क़िस्में

अल्लाह عزوجل की राह में जाइज़ कमाई को ख़र्च करने को इंफ़ाक़ कहते हैं, इंफ़ाक़ की दो क़िस्में हैं। इंफ़ाक़े वाजिबा, इंफ़ाक़े

नाफ़िला। इंफ़ाक़े वाजिबाः इसमें ज़कात, उश्र, सदक़ा-ए-फ़ित्र और दीगर ऐसे सदक़ात शामिल हैं जिनका अदा करना साहिबे निसाब पर फ़र्ज़ या वाजिब होता है। इंफ़ाक़े नाफ़िलाः इसमें सदक़ाते वाजिबा के अलावा इंफ़ाक़ की तमाम जाइज़ सूरतें शामिल हैं।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! कुरआन मुक़द्दस में इंफ़ाक़ पर बेहद ज़ोर दिया गया है और इंफ़ाक़ के फ़ज़ाइल मुख़्तलिफ़ अंदाज़ से बयान किए गए नीज़ बेहिसाब फ़वाइद का ज़िक्र भी किया गया है ताकि एक बंदा-ए-मोमिन इंफ़ाक़ के ज़रिया मौला की रहमतों का हक़दार बन सके और गुरबा की दुआऐं लेकर अपनी तक़दीर को संवार सके।

कितना ख़र्च करें?

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! अल्लाह तबारक व तआ़ला ने ईमान वालों को अपनी पाकीज़ा कमाई में दूसरों को भी शरीक करने का हुक्म फ़रमाया है। ज़ाहिर सी बात है यह ख़्याल हर एक के दिल में पैदा हो सकता है कि कितना दूसरों पर ख़र्च किया जाए, सहाबा-ए-किराम علیہم الرحمہ وارضوان के दिलों में भी यह ख़्याल आया और उन्होंने बारगाहे रिसालत मआब ﷺ में दर्याफ़्त कर ही लिया जिसको कुरआन मजीद बयान करता है।

" وَيَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ قُلِ الْعَفْوَ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُوْنَ فِى الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةِ" और तुम से पूछते हैं क्या ख़र्च करें, तुम फ़रमाओ जो फ़ाज़िल बचे, इसी तरह अल्लाह तुम से आयतें बयान फ़रमाता है कि कहीं तुम दुनिया और आख़िरत के काम सोच कर करो।

मज़कूरा आयते करीमा में इंफ़ाक़ से मुतअल्लिक़ किसी हद का तअय्युन नहीं किया गया बल्कि अपनी ज़रूरतों में जो कुछ ज़्यादा हो उसे अल्लाह عزوجل की रज़ा की ख़ातिर ख़र्च करना है।

इंफ़ाक़ का हुक्म क्यों हुआ?

अब आप सोचते होंगे कि बंदा मेहनत से ख़ूद कमाए और उसे दूसरों पर खर्च करे! आख़िर ऐसा क्यों?

तो अच्छी तरह से याद रखें कि अल्लाह عزوجل ने अपने बंदों में

से बाज़ बंदों को बाज़ मामलात में फ़ोक़ियत अता फ़रमाई है। मिषाल के तोर पर इल्म की वजह से आलिम को जाहिल पर फ़ोक़ियत दी। अब साहिबे इल्म के लिए ज़रूरी है कि अपने इल्म से ख़ूद ही इस्तिफ़ादा न करे बल्कि दूसरों को भी जहालत की तारीकी से निकालने की कोशिश करे। इसी तरह साहिबे माल को चाहिए कि वह महरूमे मईशत और ज़रूरियाते ज़िंदगी से मेहरूम लोगों पर अपनी कमाई को ख़र्च करे बल्कि सफेद पोश बाइज़्ज़त हज़रात अपनी ग़ुर्बत व इफ़लास को अपनी ग़ैरत में छुपा रखते हैं उन्हें तलाश करके उन पर ख़र्च करे ताकि उनका वक़ारे नफ़्स मजरूह न होता कि दिल की गहराई से निकलने वाली दुआ बाबे इजाबत से टकरा कर दोज़ख़ से दूरी का सबब बन जाए।

किस पर ख़र्च किया जाए?

मौजूदा दौर में इलाक़ाई असबियत और अक़रबा परवरी का ज़ोर व शोर है ऐसे में अकसर यह सवाल ज़हन में उभरता है कि इंफ़ाक़ कहाँ से शुरू किया जाए? तो आइए क़ुरआने मुक़द्दस की एक दूसरी आयत में इसकी तफ़सील पढ़ते हैं। "يَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ قُلْ مَا اَنْفَقْتُمْ مِّنْ خَيْرٍ فَلِلْوَالِدَيْنِ وَ الْاَقْرَبِيْنَ وَ الْيَتٰمٰى وَ الْمَسٰكِيْنِ وَ ابْنِ السَّبِيْلِ وَ مَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ" तुम से पूछते हैं क्या ख़र्च करें? तुम फ़रमाओ जो कुछ माल नेकी में ख़र्च करो तो वह माँ बाप और क़रीब के रिश्तेदारों और यतीमों और मोहताजों और राहगीर के लिए है और जो भलाई करो बेशक! अल्लाह उसे जानता है। (सूरए: बक़र पारा: 2, आयत 15)

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! मज़कूरा आयते करीमा में अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने हुज़ूर ﷺ से इंफ़ाक़ से मुतअल्लिक़ सवाल किए जाने पर जवाब देने का हुक्म फ़रमाया और इसमें वाज़ेह फ़रमा दिया गया कि जो भी ख़र्च करोगे नेकी में शुमार होगा। अलबत्ता वालिदेन, अक़रबा, यतीमों, मिस्कीनों, हाजतमंदों और मुसाफ़िरों पर ख़र्च करो और तुम जो कुछ भी नेकी करो वह अल्लाह से पोशीदा नहीं।

याद रखें! वालिदेन, एहल व अयाल वग़ैरा पर इफ़तारी और सहरी पर जो ख़र्च किया जाए उसका हिसाब तक मौला नहीं लेगा। ख़र्च के सिलसिले में वालदैन सब पर मुक़द्दम हैं। याद रखें! यह इंफ़ाक़

नाफ़िला से मुतअल्लिक़ है। अक़रबा में अगर ग़रीब मोहताज और नादार हों तो उनको तलाश करके दिया जाए कि उनका हक़ कुरआन ने दूसरे ज़रूरत मंदों पर मुक़द्दम रखा, इसी तरह यतामा व मसाकीन और मुसाफ़िर जिसमें ख़ास तौर पर वह तलबा जो हुसूले इल्मे दीन की ख़ातिर अपना वतने अज़ीज़ और वालिदेन की शफ़्क़तों को छोड़ कर हुज़ूर ﷺ के मेहमान होते हैं उन पर ख़र्च किया जाए। इससे मुराद यह नहीं कि सब कुछ देकर हाथ पर हाथ बांध कर बैठा जाए बल्कि हुज़ूर ﷺ ने एक सवाल के जवाब में वाज़ेह लफ़्ज़ों में यह भी इर्शाद फ़रमाया कि बेहतर सदक़ा वही है जो ज़रूरत के मुताबिक़ बचा कर किया जाए या ग़िनाए नफ़्स के साथ किया जाए।

अल्लाह के दस्ते कुदरत में

कभी-कभी बंदा यह तसव्वुर करता है कि मैं जो सदक़ात दे रहा हूँ एक ग़रीब के और मुस्तहिक़ के हाथों में दे रहा हूँ, लेकिन अगर कुरआन की रोशनी में हम देखें तो कभी यह सदक़ात दस्ते कुदरत वसूल करता नज़र आता है और कभी दस्ते रसूल ﷺ उसे वसूल करते हैं। एक आयते करीमा में इसकी वज़ाहत कुरआन मजीद में फ़रमाई गई "اَلَمْ يَعْلَمُوْا اَنَّ اللّٰهَ هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَ يَاْخُذُ الصَّدَقَاتِ وَ اَنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ وَ قُلِ اعْمَلُوْا فَسَيَرَى اللّٰهُ عَمَلَكُمْ وَ رَسُوْلُهٗ وَ الْمُؤْمِنُوْنَ" क्या इन्हें ख़बर नहीं कि अल्लाह ही अपने बंदों की तौबा क़ुबूल करता और सदक़े ख़ूद अपने दस्ते कुदरत में लेता है और यह कि अल्लाह ही तोबा क़ुबूल करने वाला मेहरबान है और तुम फ़रमाओ, काम करो अब तुम्हारे काम देखेगा और अल्लाह और उसके रसूल और मुसलमान (सूरए: तौबा पार: 11, आयत 104)

मज़कूरा आयते करीमा में अल्लाह عزوجل ने अपने बंदों को यह बताया कि अल्लाह ही तौबा क़ुबूल करने वाला है और साथ ही यह भी फ़रमाया कि तुम जो सदक़ात मुस्तहिक़ीन को देते हो दर हक़ीक़त वह मुस्तहिक़ के हाथों में नहीं बल्कि वह अल्लाह عزوجل ख़ूद अपने दस्ते कुदरत से वुसूल करता है और इसके बंदों के साथ किया जाने वाला हमदर्दाना सुलूक उसको इतना महबूब है कि इस इंफ़ाक़ की बुनियाद पर अल्लाह عزوجل ख़ताओं को माफ़ फ़रमाता है और ख़र्च करने वाले पर

अपनी रहमतों की बारिश नाज़िल फ़रमाता है। साथ ही साथ खर्च करने वालों को अपने महबूब ﷺ के ज़रिये यह मुजद-ए-जाँफ़िज़ा सुनाता है कि ऐ मेरे ग़रीब और नादार बंदों की ख़िदमत करने वाले! उनकी ज़रूरतों और परेशानियों को महसूस करने वाले कोई तेरे इस अमले ख़ैर को देखता हो या न देखता हो, सुन तेरा मोला, तेरे रसूल और मोमिनीन अंक़रीब ज़रूर देख लेंगे।

अंदाज़ा लगाइये कि ज़रूरत मंदों के दर्द को महसूस करके उनकी परेशान ज़ुल्फ़ों को सँवारने वाला किसी की नज़र में आए या न आए अल्लाह عزوجل व रसूलुल्लाह ﷺ के नज़दीक वह साहिबे क़द्र व मंज़िलत हो जाता है फिर सबसे बड़ी परेशानी यानी आख़िरत की परेशानी से छुटकारा पा लेता है। सच कहा है किसी शाइर नेः-

जो तेरी निगाह में आ गया
वह बड़ी पनाह में आ गया

हुज़ूर नबीए रहमत की दुआ

एक मुक़ाम पर अल्लाह عزوجل ने अपने हबीब ﷺ को मोमिनों से सदक़ात वुसूल करने का हुक्म फ़रमाते हुए इर्शाद फ़रमायाः "خُذْ مِنْ اَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَ تُزَكِّيْهِمْ بِهَا وَ صَلِّ عَلَيْهِمْ اِنَّ صَلٰوتَكَ سَكَنٌ لَّهُمْ وَ اللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ" ऐ महबूब! उनके माल में से ज़कात तहसील करो जिससे तुम उन्हें सुथरा और पाकीज़ा कर दो और उनके हक़ में दुआए ख़ैर करो, बेशक! तुम्हारी दुआ उनके दिलों का चैन है और अल्लाह सुनता जानता है। (सूरएः तौबा पाराः 11, आयत 103)

मज़कूरा आयते करीमा में सिर्फ़ वसूल करने का हुक्म ही हुज़ूर ﷺ को नहीं दिया गया बल्कि सदक़ात वसूल करके उसके ज़रिया उनको पाक करने के लिए भी फ़रमाया। और क़ुरबान जाइए कि उसके आगे अल्लाह की राह में खर्च करने वाले के लिए ख़ूद अल्लाह عزوجل ने अपने महबूब ﷺ से दुआ करने के लिए फ़रमाया। यक़ीनन! एक मोमिन के लिए इससे बढ़ कर सआदत और क्या हो सकती है कि हुज़ूर ﷺ ख़ूद उसके लिए दुआ फ़रमा दें। बिला शुबा दुआए रसूल ﷺ मोमिनों के लिए सामाने तस्कीन है।

आज पूरी दुनिया का मुसलमान सुकून चाहता है, यक़ीनन दौलते सुकून, बेक़रार उम्मत की ज़रूरतों की तकमील और हाजत मंदों की राजन बरारी, मरीज़ों की तीमारदारी, ग़रीबों की दस्तगीरी, अक़रबा परवरी और मआशी बदहाली की शिकार उम्मत के ग़मों के आंसूओं को पोंछ कर उनके दिलों को राहत पहुंचा कर ही हासिल कर सकते हैं।

ग़रीब की मदद न करने का अंजाम

हमने अपने कानों को ग़रीबों के नालों को सुनने और मजबूरों की आह और बेसहारों की चीख व पुकार सुनने से बंद कर लिया और साज़ व तर्ब की आवाज़ों में ऐसे गुम हो गए गोया यही हमारे लिए सामाने तस्कीन हैं। हाशा व कल्ला! ऐसा हो ही नहीं सकता, बल्कि इस्तिताअत होने के बावजूद मजबूरों की मदद न करना और भूखों की भूख न मिटाना और परेशान हाल के दर्द को महसूस न करना यह तो गुनाह है ही लेकिन एक ऐसी आयत के पढ़ने के बाद आप ख़ुद अंदाज़ा लगा सकेंगे कि भूखों की भूख को दूर करने के लिए अगर जद्दो जहद न की जाए तो अंजाम कितना भयानक होगा। इस इर्शादे रब्बानी को पढ़ो और लरज़ जाओ! "خُذُوْهُ فَغُلُّوْهُ ثُمَّ الْجَحِيْمَ صَلُّوْهُ ثُمَّ فِيْ سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُوْنَ ذِرَاعاً فَاسْلُكُوْهُ اِنَّهٗ كَانَ لَا يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ وَ لَايَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ" इसे पकड़ो फिर उसे तौक़ डालो फिर उसे भड़कती आग धंसाओ फिर ऐसी ज़ंजीर में जिसका नाप सत्तर हाथ है उसे पिरो दो, बेशक! यह अज़मत वाले अल्लाह पर ईमान न लाता था और मिस्कीन को खाना देने की रग़बत न देता था। (सूरएः हाक़ा, पाराः 29, आयत 30 ता 33)

मज़कूरा आयते करीमा में भूखों को खाना खिलाने की तर्ग़ीब न दिलाने के सबब और अल्लाह पर ईमान न लाने की वजह से गले में तोक़, सत्तर गज़ लंबी ज़ंजीर और आग में डालने का क़यामत में मौला फ़रिश्तों को हुक्म देगा। इसलिए याद रखें! ख़ूद भी ग़रीबों का ख़्याल रखें और भूखों को खाना खिलाने की तरग़ीब दिलाते रहें।

मज़कूरा आयाते करीमा के ज़िक्र और उनकी वज़ाहत से सख़ावत की तर्ग़ीब दिलाना ही मक़सूद है जो माहे रमज़ानुल मुबारक में बड़ी आसानी के साथ अंजाम देकर हम अपने गुनाहों को माफ़ करा सकते हैं और हुज़ूर

ﷺ की दुआऐ तस्कीन के हक़दार भी बन सकते हैं।

आइऐ अब चंद इर्शादाते मुस्तफ़ा ﷺ पढ़ते हैं और माहे रमज़ानुल मुबारक में रहमते आलम ﷺ की जूद व सख़ा के जल्वे तसव्वुर की आंखों से देखते हैं।

यह भी इंफ़ाक़ फ़ी सबीलिल्लाह हैं

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! माल, औलाद, इल्म, मअरेफ़त सब ही रिज़्क़ हैं। अल्लाह की रज़ा के लिए माल देना भी इंफ़ाक़ और अल्लाह की रज़ा के लिए औलाद वक़्फ़ कर देना भी इंफ़ाक़। मषलन बच्चे को दीनी तालीम दिलाना, हाफ़िज़े क़ुरआन बनाना, दावत इल्लल्लाह के लिए रवाना करना, मख़लूक़े ख़ुदा की ख़िदमत पर आमादा करना और ख़िदमत करना। अलमुख़्तसर हर जाइज़ चीज़ को अल्लाह ﷻ और उसके रसूल ﷺ की रज़ा के लिए ख़र्च करना ख़्वाह वह माल की शक्ल में हो या औलाद की शक्ल में या इल्म की शक्ल में हो, वह इंफ़ाक़ फ़ी सबीलिल्लाह में शामिल है। जैसा कि ख़ूद रहमते आलम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया "كُلُّ مَعْرُوْفٍ صَدَقَةٌ" यानी हर नेक काम सदक़ा है। (बुख़ारीः 2.890 व मुस्लिम)

बेहिसाब ख़र्च करो

एक और मुक़ाम पर रहमते आलम ﷺ ने इंफ़ाक़ की तरफ़ रग़बत दिलाते हुए उसकी एहमियत को उजागर फ़रमाया, इर्शाद फ़रमाते हैं, बेहिसाब ख़र्च करो अल्लाह तुम्हें बेहिसाब अता फ़रमाएगा और अल्लाह की राह में ख़र्च करने से गुरेज़ न करो वरना अल्लाह तुम पर रोक लगा देगा, जितनी इस्तिताअत हो सदक़ा करो'' (बुख़ारी व मुस्लिम)

एक और मुक़ाम पर मेरे आक़ा ﷺ ने इर्शाद फ़रमायाः ऐ इब्ने आदम! ख़र्च करो तुम पर फ़र्राख़ी की जाएगी। (बुख़ारी व मुस्लिम)

सख़ावत की फ़ज़ीलत बयान करते हुए रसूले आज़म ﷺ ने यह भी इर्शाद फ़रमाया इसे पढ़िए और अपने हाथ सख़ावत के लिए खोल दीजिए।

जन्नत से क़रीब

हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ की रिवायत है कि हुज़ूर ﷺ का इर्शाद है: सख़ी अल्लाह से क़रीब, जन्नत से क़रीब और लोगों से क़रीब है और दोज़ख़ से दूर है, जबकि बख़ील अल्लाह से दूर, जन्नत से दूर और लोगों से दूर है और सख़ी जाहिल अल्लाह को आबिद बख़ील से ज़्यादा महबूब है। (मिश्कात स. 164)

आग से बचो

हज़रत अदी बिन हातिम رضی اللہ عنہ ने बयान फ़रमाया कि हुज़ूर علیہ الصلوٰۃ والسلام फ़रमाते हैं "اِتَّقُوْا النَّارَ وَلَوْ بِشِقِّ تَمْرَةٍ" आग से बचो, ख़्वाह खजूर का एक टुकड़ा भी ख़र्च करके। (बुख़ारी, जि. 1/190)

यानी अगर किसी के पास राहे ख़ुदा में ख़र्च करने के लिए ज़्यादा माल न भी हो सिर्फ एक खजूर का टुकड़ा भी हो तो अल्लाह की राह में देने को हक़ीर न समझे बल्कि इतना भी ख़र्च कर सकता हो तो करे, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त खजूर के इस टुकड़े के ख़र्च करने के ऐवज़ उसको आग से बचा लेगा।

हुज़ूर रहमते आलम की जूद व सख़ा का अंदाज़

फ़य्याज़ी और सख़ावत आपका इम्तियाज़ी वस्फ़ है, जो कुछ आता राहे ख़ुदा में क़ुरबान फ़रमा देते यहाँ तक कि क़ुरआने करीम ने फ़रमाया: "وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسْطِ فَتَقْعُدَ مَلُوْماً مَّحْسُوْراً" और न हाथ पूरा खोल दें कि फिर बैठे रहें मलामत किए हुए, थके हुए।

दरियाए सख़ावत की तलातुम ख़ेज़ी का यह हाल था कि "مَا سُئِلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ شَيْءٍ قَطُّ فَقَالَ لَا" जब कभी भी कोई सवाल किया गया हुज़ूर علیہ الصلوٰۃ والسلام ने 'नहीं' नहीं फ़रमाया।

(बुख़ारी शरीफ़ जि. 2, स. 892)

इसी हदीषे पाक की तर्जुमानी करते हुए आरिफ़ बिल्लाह आशिक़े रसूल सैयदना इमाम अहमद रज़ा علیہ الرحمہ फ़रमाते हैं।

मांगेंगे मांगे जाएंगे मुंह मांगी पाएंगे
सरकार में न ला है न हाजत अगर की है

मंगता का हाथ उठते ही दाता की दैन थी
दूरी क़ुबूल व अर्ज़ में बस हाथ भर की है

हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया कि तुम मुझे बख़ील नहीं पाओगे।

(बुख़ारी शरीफ़)

हज़रत अनस رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि एक शख़्स ने आपसे दो कोहसारों के दर्मियान भरी हुई बेशुमार बकरियाँ तलब की पस आपने उसे अता कर दिया। वह आदमी अपनी क़ौम में आया और पुकार कर कहने लगा, मुसलमान हो जाओ। "فَوَاللّٰہِ اِنَّ مُحَمَّداً لَیُعْطِیْ عَطَاءً مَّا یَخَافُ الْفَقْرَ" ख़ुदा की क़सम! मुहम्मद ﷺ इतना अता करते हैं कि फ़क़ीरी का ख़ौफ़ नहीं रखते। (बुख़ारी व मुस्लिम)

हज़रत सहल رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं कि एक ख़ातून आपके लिए बड़ी ख़ूबसूरत चादर लेकर आई, आपने क़ुबूल फ़रमा लिया। सहाबा किराम رضی اللہ عنہم में से एक आदमी कहने लगे, या रसूलुल्लाह! ﷺ यह मुझे पहना दें। फ़रमाया ''अच्छा''! फिर आप उठ कर तशरीफ़ ले गए तो एहबाब ने उस आदमी को मलामत की कि तुम ने ठीक नहीं किया, सरकारे आलम ﷺ को चादर की ज़रूरत थी और तुम यह भी जानते हो कि कभी ज़बाने नबुव्वत पर इंकार का लफ़्ज़ नहीं आया। वह सहाबी बोले, मैं चादर की बरकत का उम्मीदवार हूँ और चाहता हूँ कि इसी में कफ़न दिया जाऊँ क्योंकि यह आपके जिस्म अतहर से मंसूब हो चुकी है। (बुख़ारी किताबुल अदबः जि 2, स. 892)

न रफ़्त ''ला'' बज़बाने मुबारकश हरगिज
मगर बअश्हदु अल्-ला इलाह इल्लल्लाह।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं कि हुज़ूर ﷺ लोगों को फ़ायदा देने में चलने वाली हवा से भी ज़्यादा फ़य्याज़ थे।

(मुत्तफ़िक़ इलैह.)

यह सिलसिला-ए-फ़ैज़ जारी है और जारी रहेगा। ख़ालिके मुतलक़ عزوجل ने इर्शाद फ़रमाया "واما السائل فلا تنھر" और किसी सवाली को झिड़कना नहीं। आपकी सारी उम्र इस फ़रमाने आलीशान की मज़हर हो कर रह गई, जिसको दिया दुन्या व माफ़ीहा से बेनियाज़ कर दिया। जिसको दुन्या दी, ज़माने का ताजदार बनाया, जिसको दीन दिया ज़माने

का ग़ौषे आज़म, मुजद्दिदे आज़म, मलजाए बेकसाँ, ख़्वाजा-ए-ख़्वाजगान और आला हज़रत बना दिया। दो जहाँ मेरे आक़ा के दर पर मज़े लूट रहे हैं। सच है:

मेरे करीम से गर क़तरा किसी ने मांगा
दरया बहा दिए हैं, दुरे बेबहा दिए हैं

मजाल है जो इस दरियाए सख़ावत की जोलानियों में कमी वाक़ेअ हो जाए। हुज़ूर ﷺ तो उम्मीदों, आरज़ूओं और उमंगों से भी फ़ुज़ूँ तर नवाज़ते हैं।

आगे रही अता वह बक़दरे तलब तो क्या
आदत यहाँ उम्मीद से भी बेशतर की है
मोमिन हूँ मोमिनों पे रऊफ़ व रहीम हो
साइल हूँ साइलों को ख़ुशी 'ला नहर' की है

(हदाइक़े बख़्शिश)

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! आपने महसूस कर लिया होगा कि सख़ावत का कितना बड़ा फ़ायदा है और अल्लाह عزوجل और उसके प्यारे मेहबूब ﷺ के नज़दीक सख़ावत की क्या एहमियत है। यह तो आम महीनों में ताजदारे कायनात ﷺ का मामूल था। माहे रमज़ानुल मुबारक में ताजदारे कायनात ﷺ का मामूल क्या था और सख़ावत का दरिया कितना जोश मारता था मुलाहिज़ा फ़रमाएं।

माहे रमज़ानुल मुबारक के नामों में एक नाम "شَهْرُ الْمُوَاسَات" भी है यानी ग़मख़्वारी का महीना। जैसा कि ख़ुतबाए नबविया ﷺ में गुज़रा। ग़रीबों की इमदाद व इआनत माहे रमज़ान के कामों में एक निहायत ही ज़रूरी काम है जैसा कि ताजदारे कायनात ﷺ की आदत करीमा और इर्शादि मुबारक से वाज़ेह है। क़ासिमे नेअ्मत ﷺ के हवाले से फ़रमाया गया कि जब रमज़ान का महीना आ जाता तो हुज़ूर ﷺ हर क़ैदी को आज़ाद फ़रमा देते थे और हर साईल को अता फ़रमा देते थे।

(मिश्कात: 174)

एक और मुक़ाम पर रहमते आलम अरवाहुना फिदाहु ﷺ के हवाले से फ़रमाया गया "كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَجْوَدَ النَّاسِ بِالْخَيْرِ وَ كَانَ اَجْوَدَ مَا يَكُوْنُ فِي رَمَضَانَ حِيْنَ يَلْقَاهُ جِبْرِيْلُ وَ كَانَ جِبْرِيْلُ يَلْقَاهُ كُلَّ لَيْلَةٍ فِي رَمَضَانَ

حَتّٰى يَنْسَلِخَ يَعْرِضُ عَلَيْهِ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْقُرْآنَ فَاِذَا لَقِيَهُ جِبْرِيْلُ كَانَ اَجْوَدَ بِالْخَيْرِ مِنَ الرِّيْحِ الْمُرْسَلَةِ" हुज़ूरे अक़दस ﷺ सब लोगों से ज़्यादा सख़ी थे और हुज़ूर ﷺ की सख़ावत रमज़ानुल मुबारक में तमाम अय्याम से ज़्यादा हुआ करती थी। जब हज़रत जिब्रइल علیہ السلام उनसे मुलाक़ात करते। रमज़ान में हर रात को हज़रत जिब्रइल अलैहिस्सलाम आपसे मुलाक़ात करते थे यहाँ तक कि माहे रमज़ान गुज़र जाता, और आप ﷺ उनको कुरआन शरीफ़ पढ़ाते थे। जब हुज़ूर ﷺ से जिब्रइल मुलाक़ात करते थे तो हुज़ूर ﷺ उस हवा से भी ज़्यादा सख़ी हो जाते थे जो ताज़गी लाती है। (बुख़ारी, 1-255)

अपने सदक़ात ज़ाएअ न करो

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! रसूले आज़म ﷺ के मामूलात को ज़हन में रखते हुए रमज़ानुल मुबारक में भरपूर सख़ावत का मुज़ाहिरा करो और ख़बरदार! ग़रीबों और ज़रूरत मंदों पर अपना माल ख़र्च करके उन पर एहसान न जताओ वरना याद रखो सब कुछ बातिल व अकारत हो जाएगा, ज़ाएअ हो जाएगा। ख़ूद अल्लाह عزوجل ने कुरआने मुक़द्दस में ईमान वालो को ताकीद फ़रमाई "يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُبْطِلُوْا صَدَقٰتِكُمْ بِالْمَنِّ وَ الْاَذٰى كَالَّذِيْ يُنْفِقُ مَالَهٗ رِئَآءَ النَّاسِ وَ لَا يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ" ऐ ईमान वालो! न ज़ाएअ करो अपनी ख़ैरातें एहसान जता कर और तकलीफ़ पहुंचा कर उसकी तरह जो अपना माल लोगों के दिखावे के लिए ख़र्च करता है और अल्लाह और क़यामत पर ईमान नहीं रखता।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! ग़रीबों और मुस्तहिक़ों की मदद करके कुछ सरमायादार उन पर एहसान का इतना बड़ा बोझ रख देते हैं कि वह बेचारा उठ ही न सके। कुरआन साहिबे ईमान को आगह फ़रमाता है कि एहसान जताना यह उन लोगों की आदत है जो अल्लाह और यौमे आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, तुम तो मोमिन हो, अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर ईमान रखते हो फिर बंदों पर एहसान जता कर उनकी दिल आज़ारी करना यह तुम्हारा काम नहीं है और अगर तुम ने एहसान जताया तो तुम्हारा ख़ैरात व सदक़ात करना

ज़ाएअ और बातिल ठहरेगा, इसलिए कि सदक़ात की क़बूलियत का दारोमदार उस पर है कि जिसको सदक़ा दिया जाए उस पर न तो एहसान जताया जाए और न ही किसी क़िस्म की तकलीफ़ पहुंचाई जाए।

हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया "لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ مَنَّانٌ وَّ لَا عَاقٍ وَّ لَا مُدْمِنُ خَمْرٍ" एहसान जताने वाला, वालिदैन का नाफ़रमान और हमेशा शराब पीने वाला जन्नत में दाख़िल नहीं होंगे।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! आज तक हम यह तो जानते थे कि शराब एक नजिस और नापाक चीज़ है जिसे हुज़ूर ﷺ ने उम्मुल ख़बाईस (बुराइयों की जड़) फ़रमाया और वालिदैन के हवाले से भी हम जानते हैं कि उनको उफ़ कहना भी सख़्त जुर्म है लेकिन एहसान जताने को हम गुनाह नहीं समझते थे और इस गुनाह के मुर्तकिब होते चले जाते थे। मज़कूरा हदीष शरीफ़ ने वाज़ेह कर दिया कि जिस तरह वालिदैन का नाफ़रमान और शराबी के लिए जन्नत का दाख़ला ममनूअ़ है इस तरह एहसान जताने वाले के लिए भी जन्नत का दाख़ला मम्नूअ है। अल्लाह इस आफ़त से बचाए और हम सब की ग़लतियों को माफ़ फ़रमाए।

एक और हदीष शरीफ़ पढ़िए और एहसान जताना कितना बड़ा गुनाह है अंदाज़ा लगाइए। हज़रत अबू ज़र رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया "ثَلٰثَةٌ لَّا يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَلْمَنَّانُ الَّذِىْ لَا يُعْطِى شَيْئًا اِلَّا مَنَّهٗ وَالْمُنْفِقُ سِلْعَتَهٗ بِالْحَلْفِ الْفَاجِرِ وَالْمُسْبِلُ اِزَارَهٗ" तीन शख़्सों से अल्लाह तआ़ला क़यामत के दिन कलाम नहीं फ़रमाएगा। एक वह शख़्स जो हर नेकी का एहसान जतलाता है, दूसरा वह शख़्स जो झूटी क़सम खा कर अपना माल फ़रोख़्त करता है, तीसरा वह शख़्स जो तकब्बुर की वजह से अपने तहबंद या पायजामा को लटका कर चलता है।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! एहसान जताने के बजाए अल्लाह عزوجل का शुक्र अदा करें कि परवरदिगार ने अपने बंदों की ख़िदमत का मोक़ा अता फ़रमा कर सवाब हासिल करने की सआदत अता फ़रमाई। याद रखें! कि माहे रमज़ानुल मुबारक में ख़ूब से ख़ूब ग़ुरबा, यतीमों और मिस्कीनों की ख़िदमत करें लेकिन सबसे पहले अपने

रिश्तेदारों में मुस्तहिक़ तलाश करें और उनकी ख़िदमत करके दोहरे अजर के हक़दार बनें। फिर ग़ुरबा, यतामा, मसाकीन, दीनी इदारे वग़ैरा में मदद करके माहे रमज़ानुल मुबारक में रसूले आज़म ﷺ की सुन्नत को ज़िंदा करें। अल्लाह عزوجل हम सब को अपने प्यारे महबूब ﷺ के सदक़ा व तुफ़ैल जज़बाए सख़ावत माअ इख़्लास अता फ़रमाए और माहे रमज़ान की बरकतों से माला माल फ़रमा कर दोज़ख़ से बचाए। आमीन

यह तो ज़ाहिरी शर्त है और बातिनी शर्त यह है कि सदक़े का मक़सद अल्लाह की रज़ा का हुसूल हो कि सदक़ा सिर्फ और सिर्फ रज़ाए इलाही के लिए हो, न कि अपनी दौलत मंदी और सख़ावत के चरचे के लिए और न बड़ाई के लिए और न ग़रीबों को ग़ुलाम बनाने के लिए।

आख़िर एहसान जताना अल्लाह को इस हद तक नापसंद क्यों है कि सदक़े का षवाब ज़ाए फ़रमा देता है? तो उसकी वजह अच्छी तरह समझो ता कि अपनी नियत दुरुस्त कर सको।

एक वजह तो यह है कि जब कोई शख़्स किसी की मदद करता है तो एहसान जता कर उस ग़लत ख़्याल का इज़हार करता है कि वही इस कमज़ोर का सहारा बना। अगर वह मुसीबत के वक़्त या ज़रूरत के वक़्त मदद न करता तो उसकी परेशानी दूर न होती। जब कि उसको ज़हन में यह बात रखनी चाहिए कि अल्लाह عزوجل का इस पर बहुत बड़ा फ़ज़्ल व एहसान है कि उस कमज़ोर बंदे की ख़िदमत व मदद का मौक़ा उसे अता फ़रमाया वरना वह जिससे चाहता मदद करवा देता। इसलिए कि हक़ीक़ी मददगार व कारसाज़ तो अल्लाह ही है बंदा तो मोहताजे महज़ है। अल्लाह عزوجل का शुक्र अदा करना चाहिए कि उसने लेने वाला बनाने के बजाए देने वाला बनाया।

अमीरों पर ग़रीबों का एहसान

हज़रत मसअ़ब बिन सअ़द رضی اللہ عنہ रिवायत करते हैं कि हज़रत सअ़द رضی اللہ عنہ ने ख़्याल किया कि उन्हें (दौलत की वजह से) दूसरों पर फ़ज़ीलत है, पस हुज़ूर ﷺ ने फ़रमायाः तुम अपने कमज़ोर लोगों की वजह से मदद किए जाते और रोज़ी दिए जाते हो।

एक और मुक़ाम पर रसूले आज़म ﷺ ने अपनी उम्मत के

कमज़ोर लागों के मुक़ाम को कितना बुलंद किया। हज़रत अबू दरदा رضی اللہ عنہ बयान करते हैं कि हुज़ूर ﷺ ने फ़रमायाः "اِبْغُوْنِیْ فِیْ ضُعَفَائِکُمْ فَاِنَّمَا تُرْزَقُوْنَ اَوْ تُنْصَرُوْنَ بِضُعَفَائِکُمْ" मुझे अपने कमज़ोरों में तलाश किया करो, क्योंकि तुम अपने ज़ईफ़ों के सबब रोज़ी दिए जाते हो। या फ़रमाया, तुम अपने कमज़ोरों की वजह से मदद किए जाते हो। (अबू दाउद)

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! एक बंदा किसी बंदे पर एहसान करता है तो इस गुमान व उम्मीद के साथ कि साइल मजबूर व बेबस है और मोहताज व ज़रूरत मंद है अगर आज मैं मदद न करूंगा तो उसके मसाइल हल न होंगे। और उसके हाशिया-ए-ख़्याल में यह बात भी होती है कि कल कोई काम पड़ा तो मैं भी इससे फ़ायदा उठा सकूँगा। बिलफ़र्ज़ ज़रूरत मंदों की ज़रूरत पूरी कर दी गई और अल्लाह عزوجل ने उसको तरक़्क़ी व उरूज और सर बुलंदी अता फ़रमा दी और दौलत से मालामाल कर दिया तो अब मोहसिन उसको अपना एहसान याद दिलाता है कि तुझे मालूम है कि तू क्या था? अगर उस वक़्त मैं तेरी मदद न करता तो आज तू इस मुक़ाम तक न पहुंच सकता। लेकिन एहसान जताने वाला भूल जाता है कि एहसान जताने वाला अल्लाह عزوجل और उसके प्यारे महबूब ﷺ के नज़दीक कितना नापसंद है। अल्लाह और उसके रसूल ﷺ के फ़रामीन आप पढ़ चुके लिहाज़ा एहद कीजिए कि आइंदा कभी किसी पर एहसान न जताऐंगे।

सदक़ात के इक़साम

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! सदक़ा की दो क़िस्में हैं एक सदक़ा-ए-वाजिबा कि इसमें ज़कात, उश्र, सदक़ा-ए-फ़ित्र सदक़ा नज़र वग़ैरा शामिल हैं। दूसरा सदक़ा-ए-नाफ़िला जो सदक़ाते वाजिबा के अलावा हों।

ज़कात का बयान

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! साल में एक मर्तबा मालिके निसाब पर अपने माल में से ज़कात निकालना भी इसी तरह फ़र्ज़ है जिस तरह नमाज़, रोज़ा, हज वग़ैरा फ़र्ज़ हैं। अगर कोई शख़्स इसकी फ़र्ज़ियत का इंकार करे तो काफ़िर हो जाएगा और अगर कोई

शख़्स अदा न करे तो सख़्त मुजरिम ठहरेगा और अेताबे इलाही का हक़दार होगा।

माहे रमज़ानुल मुबारक में नफ़्ल का षवाब फ़र्ज़ के बराबर और फर्ज़ का षवाब सत्तर फर्ज़ के बराबर हो जाता है लिहाज़ा हमें माहे रमज़ानुल मुबारक में अपने माल में से ज़कात अदा करके अल्लाह ﷻ की बंदगी और उसके हुक्म के सामने सर तस्लीम करने का सुबूत देना चाहिए। ज़कात के हवाले से चंद बातें दर्ज कर देते हैं ताकि अल्लाह की राह में ख़र्च करने के जज़बा में इज़ाफ़ा हो।

ज़कात का लुग्वी और शरई माअ्ना

लुग़त के एतबार से ज़कात दो मअ्ना का हामिल है, उसका एक माअ्ना पाकीज़गी, तहारत, और पाक साफ़ होने या करने का है। और दूसरा माअ्ना नशो नुमा और बालीदगी का है। जिसमें किसी के बढ़ने, फलने फूलने और फ़रोग़ पाने का मफ़हूम पाया जाता है। चूंकि ज़कात अदा करने से माल में इज़ाफ़ा होता है इसलिए वह माल जो अल्लाह की राह में ख़र्च किया जाता है उसको ज़कात कहते हैं।

और इस्तिलाहे शरअ़ में ''अल्लाह के लिए अपने माल का एक हिस्सा जो शरीअ़त ने मुक़र्रर किया है, मुसलमान फ़क़ीर को मालिक बना देने, को ज़कात कहा जाता है।

ज़कात किस पर वाजिब है

ज़कात हर उस मुसलमान पर वाजिब है जो आक़िल, बालिग़, आज़ाद, मालिके निसाब हो और निसाब का पूरे तोर पर मालिक हो, निसाबे दीन और हाजते असलिया से फ़ारिग़ हो और उस निसाब पर पूरा साल गुज़र जाए। (क़ुतुब फ़िक़ई)

निसाबे ज़कात

ज़कात फ़र्ज़ होने के लिए माल व दौलत की एक ख़ास हद और मुतअय्यन मिक़दार है, जिसको शरीअ़त की इस्तिलाह में ''निसाब'' कहा जाता है, ज़कात उसी वक़्त फ़र्ज़ है जब माल बक़द्र निसाब हो, निसाब से कम माल व दौलत पर ज़कात फ़र्ज़ नहीं। सोने का निसाब साढ़े सात

तोला है, और चाँदी का निसाब साढ़े बावन तोला है। और माले तिजारत का निसाब यह है कि उसकी क़ीमत सोने या चांदी के निसाब के बराबर हो या सोने, चांदी की नक़द क़ीमत बसूरत रुपए हों।

जिसके पास इतना माल हो उस पर ज़कात फ़र्ज़ है। सोना चाँदी, तिजारती अमवाल, धात के सिक्के, नोट, ज़ेवर सब पर चालीसवाँ हिस्सा यानी ढाई फीसद (सौ रुपये में ढाई रुपए) ज़कात निकालना फ़र्ज़ है।

ज़कात क्यों फ़र्ज़ हुई?

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! बारहा लोगों के दिलों में यह सवाल उभरता है कि ज़कात क्यों फ़र्ज़ हुई? उसकी फर्ज़ियत का मक़्सद क्या है? इसमें मुसलमानों का क्या फ़ायदा है? मुसलमानों को अपनी मेहनत की कमाई दूसरों को देने का क्यों हुक्म दिया जा रहा है? तो इन सवालात के जवाबात ग़ौर से पढ़ो और अपने दिल में पैदा होने वाले वसवसों को ख़त्म करने की कोशिश करते हुए अल्लाह की राह में फ़र्राख़ दिली से ख़र्च करने का जज़्बा पैदा करो।

ज़कात का निज़ाम दरअस्ल मोमिन के दिल से हुब्बे दुनिया और उसके जड़ से पैदा होने वाले सारे ख़ुराफ़ात को ख़त्म करके ख़ालिस ख़ुदा की महब्बत करने के लिए फ़र्ज़ की गई, पूरे इस्लामी मुआशरा को बुख़्ल, तंग दिली, ख़ुद ग़र्ज़ी, बुग़ज़, हसद, संग दिली और इस्तेहसाल जैसे बेअस्ल जज़्बात से पाक करके उसमें महब्बत, इसार, एहसान, ख़ुलूस, ख़ैर ख़्वाही, तआवुन, मवासात और रफ़ाक़त के आला और पाकीज़ा जज़्बात पैदा करता है। ज़कात हर नबी की उम्मत पर फ़र्ज़ रही, उसकी मिक़्दार, निसाब और फ़िक़्ही एहकाम में ज़रूर फ़र्क़ रहा लेकिन ज़कात का हुक्म बहरहाल तक़रीबन् हर शरीअ़त में मौजूद रहा।

ज़कात से मुतअल्लिक़ चंद ज़रूरी मसाइल

☆ वह माल जो तिजारत के लिए रखा हुआ है उसे देखा जाए कि उसकी क़ीमत, साढ़े सात तोला सोना या साढ़े बावन तोला चांदी के बराबर हो तो उस माले तिजारत की ज़कात अदा करना फ़र्ज़ है। माले तिजारत से मुराद हर क़िस्म का सामान है ख़्वाह वह

ग़ल्ला वग़ैरा के जिंस से हो या मवेशी, घोड़े, बकरियाँ, गाए वग़ैरा, अगर यह अशिया बग़र्ज़े तिजारत रखी, हुई हैं तो पूरा साल गुज़रने के बाद उनकी ज़कात अदा करना फ़र्ज़ है।

☆ अगर माले तिजारत बक़दरे निसाब नहीं है लेकिन सोना चांदी और नक़द रुपया मौजूद है तो उन सब को मिलाया जाएगा, अगर उनका मजमूआ बक़दरे निसाब हो जाए तो उस पर ज़कात फ़र्ज़ है वरना नहीं।

☆ जो मकानात या दुकानें किराए पर दे रखी हैं तो उन पर ज़कात नहीं लेकिन उनका किराया जमा करने के बाद अगर बक़दरे निसाब हो जाए तो उस पर साल गुज़रने के बाद ज़कात फ़र्ज़ है। हाँ, अगर मालिक पहले ही मालिके निसाब है तो किराया उसी निसाब में शामिल होगा, किराया की आमदनी का अलाहिदा निसाब शुमार नहीं किया जाएगा। इसलिए जब पहले निसाब पर साल गुज़र जाए तो किराए की रक़म भी उस निसाब में मिला कर ज़कात अदा की जाएगी।

☆ दुकानों में माले तिजारत रखने के लिए शो केस, तराज़ु, अलमारियाँ वग़ैरा, नीज़ इस्तेमाल के लिए फ़रनीचर, सर्दी, गर्मी से बचाव के लिए हीटर, एयरकंडीशन वग़ैरा और ऐसी चीज़ें जो ख़रीद व फ़रोख़्त में सामान के साथ नहीं दी जातीं बल्कि ख़रीद व फ़रोख़्त में उनसे मदद ली जाती हो तो उन पर ज़कात फ़र्ज़ नहीं, क्योंकि यह तिजारत में हवाइजे असलिया में शामिल हैं।

☆ मोती और जवाहेरात पर ज़कात वाजिब नहीं अगर्चे हज़ारों के हों। हाँ अगर तिजारत की नियत से ली है तो ज़कात वाजिब हो गई।

☆ साल गुज़रने से मुराद क़मरी साल है यानी चांद के महीनों से बारा महीने, अगर शुरू साल और आख़िर साल में निसाब कामिल है और दर्मियान साल में निसाब नाक़िस भी हो गया हो तो भी ज़कात फ़र्ज़ है।

☆ ज़कात देते वक़्त या ज़कात के लिए माल अलाहिदा करते वक़्त ज़कात की नियत शर्त है। नियत के यह माअ्ना हैं कि अगर

पूछा जाए तो बिला ताम्मुल बता सके कि ज़कात है।

☆ साल भर तक ख़ैरात करता रहा अब नियत की जो कुछ दिया है ज़कात है, तो ज़कात अदा न होगी, माल को ज़कात की नियत से अलाहिदा कर देने से बरीउज़्ज़िमा न होगा जब तक कि फ़क़ीर को न दे दे, यहाँ तक कि वह जाता रहा तो ज़कात साक़ित न हुई।

☆ ज़कात का रुपया मुरदा की तजहीज़ व तक्फीन या मस्जिद की तामीर में नहीं सर्फ़ कर सकते कि फ़क़ीर को मालिक बनाना न पाया गया, अगर इन उमूर में ख़र्च करना चाहें तो उसका तरीक़ा यह है कि फ़क़ीर को मालिक कर दें और वह सर्फ़ करे और सवाब दोनों को होगा, बल्कि हदीष पाक में है अगर सौ हाथों में सदक़ा गुज़रा तो सब को वैसा ही षवाब मिलेगा जैसा देने वाले के लिए, और उसके अज्र में कुछ कमी न होगी।

☆ ज़कात देने में यह ज़रूरी नहीं कि फ़क़ीर को ज़कात कह कर दे बल्कि सिर्फ़ नियते ज़कात काफ़ी है। यहाँ तक कि हिबा या क़र्ज़ कह कर दे और नियत ज़कात की हो तो भी अदा हो जाएगी।

☆ यूँ ही नज़र, हदिया, ईदी या बच्चों की मिठाई खाने के नाम से दी तब भी अदा हो गई, बाज़ मोहताज ज़रूरतमंद ज़कात का रुपया नहीं लेना चाहते उन्हें ज़कात कह कर दिया जाएगा तो नहीं लेंगे लिहाज़ा ज़कात का लफ़्ज़ न कहे।

☆ सोने, चाँदी के अलावा तिजारत की कोई चीज़ हो जिसकी क़ीमत सोने या चांदी के निसाब को पहुंचे तो उस पर भी ज़कात वाजिब है। यानी क़ीमत के चालीसवें हिस्से पर ज़कात वाजिब है।

किन चीज़ों पर ज़कात नहीं है?

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! कुछ चीज़ें ऐसी भी हैं जिन पर ज़कात फ़र्ज़ नहीं है अगरचे वह कितनी ही ज़्यादा हों। उनकी तफ़सील मुलाहिज़ा करें:-

रहने का मकान, मोती याक़ूत और दूसरे तमाम जवाहिर, खेती

बाड़ी के लिए जो ऊँट, बैल, भैंस पाले गए हों, कारख़ाने की मशीनें आलात, हिसाब किताब करने के लिए कम्प्यूटर केल्क्यूलेटर, कारख़ाने की इमारत, कारोबार में काम आने वाली फ़र्नीचर, स्टेशनरी के सामान, दुकान की इमारत, शीर ख़ाना Dairy form के जानवर, बेश क़ीमत चीज़ें जो कि यादगार के तोर पर शोक़िया घर में रख छोड़े हो, हौज़ या तालाब में शोक़िया मछलियाँ रखे हो, वह जानवर जो ज़ाती ज़रूरत के लिए पाले गए हों, सवारी की मोटर साइकिल, कार, बस, किराया पर चलाई जाने वाली चीज़ें मषलन साईकिल, रिकशा, टेकसी, बस ट्रक वग़ैरा पर ज़कात नहीं है, अलबत्ता उनसे हासिल होने वाली क़ीमत अगर निसाब को है तो उस पर ज़कात है।

पहनने के कपड़े, कोट, चादर, कम्बल, टोपी, जूते, घड़ी, घर का सामान, बिस्तर, क़लम वग़ैरा पर भी ज़कात नहीं ख़्वाह यह कितनी ही ज़्यादा क़ीमत की क्यों न हों।

ख़ुलासा यह कि जिन चीज़ों की तिजारत की जाए उन पर ज़कात वाजिब है और जो चीज़ें तिजारत का ज़रिया और सबब बनें और जो चीज़ें रोज़मर्रा के इस्तेमाल की हैं उन पर ज़कात नहीं।

ज़कात किस को दी जाए?

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने माले सदक़ा के मुस्तहिक़ीन की तफ़सील कुरआने अज़ीम में यूँ बयान फ़रमाया हैः चुनान्चे इशादि बारी तआला हैः "اِنَّمَا الصَّدَقَاتُ لِلْفُقَرَاءِ وَالْمَسَاكِيْنَ وَالْعَامِلِيْنَ عَلَيْهَاوَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوْبُهُمْ وَ فِىْ الرِّقَابِ وَالْغَارِمِيْنَ وَفِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَ ابْنَ السَّبِيْلِ فَرِيْضَةً مِّنَ اللّٰهِ وَ اللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ" ज़कात तो उन ही लोगों के लिए है मोहताज और निरे नादार और जो उसे तहसील करके लाऐं और जिनके दिलों को इस्लाम से उलफ़त दी जाए और गरदनें छुड़ाने में और क़र्ज़दारों को और अल्लाह की राह में और मुसाफ़िर को यह ठहराया हुआ है उसे अल्लाह का, और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है। (सूरएः तौबा, पाराः 10, आयत 60)

मज़कूरा बाला आयात में ज़कात के मुस्तहिक लोगों का ज़िक्र फ़रमाया गया है, यह वह लोग हैं जो ज़कात व सदक़ात के सही हक़दार हैं, कुरआनी आयत में मज़कूरा सदक़ात के हक़दारों की तफ़सील यह हैः

फ़क़ीर

वह है जिसके पास कुछ माल हो लेकिन इतने रुपये पैसे नहीं जो निसाब के क़ाबिल हो न घर में इतनी चीज़ें हैं कि जिनकी क़ीमत बक़दरे निसाब हो या क़ीमत बक़दरे निसाब है मगर सब चीज़ें हाजते असलिया में दाख़िल हैं, मषलन ज़रूरी किताबें, पहनने के कपड़े, रहने का मकान, काम काज के ज़रूरी आलात वग़ैरा हैं, कोई चीज़ ज़ाइद उसके पास नहीं जिसकी क़ीमत निसाब को पहुंचे ऐसा शख़्स फ़क़ीर कहलाता है, ज़कात का मुस्तहिक़ है, अगर ऐसा शख़्स आलिम भी हो तो उसकी ख़िदमत और भी ज़्यादा अफ़ज़ल है।

मिस्कीन

वह शख़्स है जिसके पास कुछ भी माल न हो। कुरआन मुक़द्दस में इर्शाद खुदावंदी हैः اَوْ مِسْكِيْنًا ذَا مَتْرَبَةٍ या ख़ाक नशीन मिस्कीन को।

यानी मिट्टी जो उस पर पड़ी है वही उसकी चादर है और वही उसका बिस्तर है। ऐसे शख़्स को ज़कात देकर सवाब हासिल करो। उस शख़्स को सवाल करना भी जाइज़ है और फ़क़ीर को नहीं, क्योंकि उसके पास कुछ माल है अगरचे निसाब के क़ाबिल नहीं, मगर जिसके पास इतना भी माल है कि एक दिन के खुराक के क़ाबिल है तो उसको सवाल करना हलाल नहीं है। (आलमगीरी)

आमिल

आमिल को भी ज़कात दी जा सकती है अगर्चे वह ग़नी हो। आमिल वह शख़्स है जिसको बादशाहे इस्लाम ने उश्र और ज़कात वुसूल करने पर मुक़र्रर किया है, चूंकि यह अपना वक़्त इस काम में लगाता है लिहाज़ा उस आमिल को अपने अमल की उजरत भी मिलना ज़रूरी है ताकि उसके अख़राजात के लिए बदरजा मुतवस्सित काफी हो मगर उजरत जमा करदा रक़म से ज़ाइद न हो। अगर माल आमिल के हाथ से ज़ाए हो जाए तो ज़कात अदा करने वालों की ज़कात अदा हो गई। अगर आमिल सैयद है तो ज़कात के माल से उसको उजरत न दी जाएगी, हाँ उजरत ग़ैरे सैयद फ़क़ीर को देकर उसको दी जाए तो जाइज़

है मगर ग़नी आमिल को उसी ज़कात से उजरत देना जाइज़ है इसलिए कि हाशमी का शर्फ ग़नी के रुतबा से ज़ाइद है।

मोअल्लिफ़तुल कुलूब

मोअल्लिफ़तुल कुलूब का मतलब दिलजुई करना है, एक आम उसूल है कि जिस किसी हाजतमंद की माली इमदाद की जाए तो वह देने वालों की तरफ़ मुतवज्जोह होता है। इसलिए अल्लाह तआ़ला ने लोगों को दीने इस्लाम की तरफ़ माइल करने के लिए मोअल्लिफ़तुल कुलूब की मदद रखी है ताकि इस्लाम में हर नए दाख़िल होने वाले की दिलजुई हो और वह आसानी से मुसलमानों के ज़ाब्त-ए-हयात के मुताबिक़ अमल पैरा हो सके। लेकिन जब इस्लाम को ग़लबा हुआ तो ज़कात के उन आठ मसारिफ़ में से मोल्लिफ़तुल कुलूब ब इजमाए सहाबा साक़ित हो गया।

रक़ाब मकातिब

वह गुलाम जो माले मुईन अदा करने की शर्त पर आज़ाद किया गया हो अगर्चे वह ग़नी का गुलाम हो या ख़ूद उसके पास निसाब से ज़ाइद हो तो ऐसे गुलाम को ज़कात देना जाइज़ है मगर यह गुलाम किसी सैयद का न हो कि उसको ज़कात देना जाइज़ नहीं क्योंकि एक लिहाज़ से यह मालिक की मिलक में है और मालिक सैयद है तो यह सैयद ही को ज़कात पहुंचेगी और उसको जाइज़ नहीं है।

ग़ारिम यानी क़र्ज़दार

क़र्ज़दार को ज़कात देना भी जाइज़ है बशर्ते कि क़र्ज़ से ज़ाइद कोई रक़म बक़दरे निसाब उसके पास न हो या कोई माल हाजते असलिया से उसके पास फ़ाज़िल न हो कि जिसकी क़ीमत निसाब को पहुंचे तो ऐसे क़र्ज़दार को ज़कात देना जाइज़ है।

फ़ी सबीलिल्लाह

इससे मुराद ऐसे मुजाहिदीन पर माल ज़कात का सर्फ़ करना है जो कि अल्लाह की राह में जिहाद के लिए निकले हों कि उनकी सवारी,

अस्लहा, रास्ते के ख़र्च और आलात की फ़राहमी के लिए माले ज़कात का देना जाइज़ है और या तो इससे मुराद वह हुज्जाजे किराम हैं जो कि रास्ते में किसी हादसा के शिकार होकर माली तआवुन के मोहताज हों या वह तलबा मुराद हैं जो कि इल्मे दीन के हुसूल के लिए अल्लाह की राह में निकले हों कि उनको भी ज़कात का माल लेना जाइज़ है।

इब्ने सबील यानी मुसाफ़िर

इब्ने सबील से मुराद मुसाफ़िर है जिसका ज़ादे राह ख़त्म हो चुका हो अगर्चे वह घर पर माली एतबार से ख़ुशहाल हो फिर भी उसको ज़कात लेना जाइज़ है।

उश्र का बयान

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! उश्र का माअ्ना है दसवाँ हिस्सा और इस्तिलाहे शरअ़ में उश्र से मुराद पैदावार की ज़कात है जो बाज़ ज़मीनों में पैदावार का दसवाँ हिस्सा होती है और बाज़ ज़मीनो में पैदावार का बीसवाँ हिस्सा। जिस तरह ज़कात की अदाएगी फ़र्ज़ है उसी तरह उश्र की अदायगी भी फ़र्ज़ है।

उश्र की शरह

जिस खेत या बाग़ को बारिश का पानी, चश्मे, दरिया, नदी और कुदरती नालों का पानी सैराब करता हो या दरिया के किनारे वाक़ेअ होने की वजह से कुदरती तौर पर नम और सैराब रहती हो, उसमें पैदावार का दसवां हिस्सा उश्र निकालना वाजिब है और जो खेत या बाग़ आबपाशी के मसनूई ज़राए मषलन टयूब वैल, रहेट, हैंड पम्प वग़ैरा से सैराब किए जाते हों उनमें पैदावार का बीसवां हिस्सा यानी निस्फ़ उश्र निकालना वाजिब होता है।

उश्र किस को दिया जाए

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! उश्र के भी वही हक़दार हैं जो ज़कात के हक़दार हैं। लाज़िम यह है कि जब अनाज या फल खाने के लायक़ हो जाऐं तो उनमें से उश्र (दसवाँ या बीसवाँ हिस्सा) निकाल कर

जाइज़ मसारिफ़ में ख़र्च कर दिया जाए फिर उसको दीगर मसारिफ़ यानी ज़ख़ीरा अंदोज़ी, खेती वग़ैरा के काम में इस्तेमाल किया जाए।

शबे क़दर

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! शबे क़दर की फ़ज़ीलत क़ुरआन व हदीष से सराहतन षाबित है। शबे क़द्र अज़मत व तक़दीस, फ़ज़ाइल व कमालात का मख़ज़न है, शबे क़द्र को तमाम रातों पर फ़ोक़ियत हासिल है क्योंकि इस रात में रहमते इलाही का नुज़ूल होता है और शबे क़द्र की एहमियत का अंदाज़ा इससे बख़ूबी लगा सकते हैं कि ख़ालिक़े लैल व नहार جل جلاله ने उसकी तारीफ़ व तौसीफ़ में मुकम्मल सूरत नाज़िल फ़रमा दिया। इर्शाद होता है:-

اِنَّا اَنْزَلْنَاهُ فِیْ لَیْلَةِ الْقَدْرِ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا لَیْلَةُ الْقَدْرِ لَیْلَةُ الْقَدْرِ خَیْرٌ مِّنْ اَلْفِ شَهْرٍ
تَنَزَّلُ الْمَلٰٓىِٕكَةُ وَالرُّوْحُ فِیْهَا بِاِذْنِ رَبِّهِمْ مِنْ كُلِّ اَمْرٍ سَلٰمٌ هِیَ حَتّٰى مَطْلَعِ الْفَجْرِ

बेशक! हमने उसे शबे क़द्र में उतारा और तुमने क्या जाना क्या शबे क़द्र, शबे क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर, इसमें फ़रिश्ते और जिब्रइल उतरते हैं अपने रब के हुक्म से हर काम के लिए, वह सलामती है, सुबह चमकने तक। (सूरः क़द्र, पारः 30 कंज़ुल ईमान)

वजहे तस्मिया

मुफ़स्सिरे शहीर हज़रत अल्लामा पीर करम शाह अज़हरी इमाम ज़हरी का क़ौल नक़ल करते हुए रक़मतराज़ हैं: "سُمِّیَتْ بِهَا لِلْعَظْمَةِ وَالشَّرَفِ لِاَنَّ الْعَمَلَ فِیْهِ یَكُوْنُ ذَا قَدْرٍ عِنْدَ اللّٰهِ....." इसका नाम "लैलतुल क़द्र" अज़मत और शराफ़त की वजह से रखा गया है.... क्योंकि आमाले सालिहा अल्लाह के नज़दीक बाइज़्ज़त होते हैं।

अल्लामा क़रतबी ने इस रात को लैलतुल क़द्र कहने की वजह यूँ बयान की है "قِیْلَ سُمِّیَتْ بِذٰلِكَ لِاَنَّهٗ اَنْزَلَ فِیْهَا كِتَابًا ذَا قَدْرٍ عَلٰى رَسُوْلٍ ذِیْ قَدْرٍ عَلٰى اُمَّةٍ ذَاتِ قَدْرٍ" यानी उसे शबे क़द्र इसलिए कहते हैं कि अल्लाह सुबहानहू तआ़ला ने इसमें एक बड़ी क़द्र व मंज़िलत वाली किताब, बड़े क़द्र व मंज़िलत वाले रसूल पर और बड़ी क़द्र व मंज़िलत वाली उम्मत के लिए नाज़िल फ़रमाई। (ज़ियाउल क़ुरआन)

शबे क़द्र अहादीष के आइना में

हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया "مَنْ قَامَ لَيْلَةَ الْقَدْرِ اِيْمَاناً وَّ اِحْتِسَاباً غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهٖ" जो शबे क़द्र में ईमान व यक़ीन के साथ क़याम करे तो उसके पिछले गुनाह बख़्श दिए जाते हैं। (बुख़ारीः 255-1, मुस्लिम)

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! इस हदीष शरीफ़ का मतलब यह है कि जो शख़्स महज़ षवाब की नियत और अल्लाह की रज़ा के लिए क़याम करे यानी नवाफ़िल, तिलावत, ज़िक्र व अज़कार वग़ैरा में मस्रूफ़ रहे तो ख़ुदाए ग़फ़्फ़ार ऐसे शख़्स के पिछले गुनाहे सग़ाइर को माफ़ फ़रमा देता है, और रहे गुनाहे कबाइर तो वह बग़ैर तौबा के माफ़ नहीं होते।

शबे क़द्र कौन सी रात है?

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! शबे क़द्र कौन सी रात है? यह मुतअय्यन नहीं, अलबत्ता अहादीष में यह वारिद हुआ है कि माहे रमज़ानुल मुबारक के आख़री अशरा की ताक़ रातों में तलाश करो। लिहाज़ा माहे रमज़ानुल मुबारक की 21, 23, 25, 27, 29 वीं रातों को शब बैदारी करें और इन रातों को क़याम व तिलावत व ज़िक्र व दुरूद में गुज़ारें अगर ज़िम्मा में क़ज़ा नमाज़ बाक़ी हो तो क़ज़ा नमाज़ों को अदा करें क्योंकि इन रातों के शबेक़द्र होने की ज़्यादा उम्मीद है जैसा कि मालिके कौनो मकाँ ﷺ का इर्शादि गिरामी है تَحَرَّوْا لَيْلَةَ الْقَدْرِ فِى الْعَشْرِ الاَوَاخِرِ مِنْ رَمَضَانَ" रमज़ान शरीफ़ के आख़री अशरा में लैलतुल क़द्र को तलाश करो। (बुख़ारीः 271-1)

दूसरी हदीष पाक में है कि आख़री अशरा की ताक़ रातों में तलाश करो। अकसर उलमाए किराम की राए यह है कि रमज़ानुल मुबारक की सत्ताइसवीं रात शबे क़द्र है।

इमामुल आइम्मा काशिफ़ुल ग़म्मा सैयदना इमामे आज़म अबू हनीफ़ा رضی اللہ عنہ का मौक़फ़ यही है और अल्फ़ाज़े क़ुरआन से भी इस तरफ़ इशारा मिलता है। मस्लन सूरतुल क़द्र में "लैलतुल क़द्र" तीन

जगह इर्शाद हुआ और लैलतुल क़द्र में नो हर्फ़ हैं, नो को तीन से ज़र्ब देने में हासिल सत्ताईस होता है। (9x3=27)

शबे क़द्र की अलामतें

हुज़ूर नबीए रहमत ﷺ ने इर्शाद फ़रमायाः यह रात इकाई की है (यानी इक्कीसवीं या तैइसवीं या पच्चीसवीं या सत्ताइसवीं या आख़री रात) यह रात बिल्कुल साफ़ और ऐसी रोशन होती है कि गोया चांद चढ़ा हुआ है, इसमें सुकून और दिलजमई होती है, न सर्दी ज़्यादा होती है न गर्मी, सुबह तक सितारे नहीं झड़ते, इसकी एक निशानी यह भी है कि उसकी सुबह को सूरज तेज़ शुआओं से नहीं निकलता बल्कि चौदहवीं रात की तरह साफ़ निकलता है।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! मज़कूरा हदीष शरीफ़ में जो शबे क़द्र की अलामतें बयान की गई हैं उनके ज़रिया शबे क़द्र को तलाश करना बिल्कुल आसान हो गया है, अब हमारी ज़िम्मेदारी बनती है कि मज़कूरा अलामतों को ज़हन में रखते हुए शबे क़द्र को तलाश करें और इसमें ख़ूब दिलजमई के साथ अल्लाह तआ़ला की इबादत करें। अल्लाह तआ़ला हमें तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन

शबे क़द्र को पोशीदा रखने की हिकमतें

हज़रत उबादा बिन सामत رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं कि नबी करीम صلی اللہ علیہ وسلم एक दिन इस ग़र्ज़ से बाहर तशरीफ़ लाए ताकि हमें शबे क़द्र की इत्तिला फ़रमा दें मगर दो मुसलमानों में झगड़ा हो रहा था, हुज़ूर ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि मैं इसलिए आया था ताकि तुम्हें शबे क़द्र की इत्तिला दूँ मगर फलां फलां शख़्सों में झगड़ा हो रहा था जिसकी वजह से उसकी तअय्युन मेरे ज़हन से उठा ली गई, क्या बईद है कि यह उठा लेना अल्लाह के इल्म में बेहतर हो। (बुख़ारीः 1-271)

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! मज़कूरा हदीषे मुबारका से मालूम हुआ कि आपस का झगड़ा इस क़द्र बुरा अमल है कि उसकी वजह से नबी-ए-रहमत ﷺ के क़ल्ब मुबारक से अल्लाह عزوجل ने लैलतुल क़द्र की तअय्युन उठा ली, यानी कौन सी रात लैलतुल क़द्र है, उसकी तख़सीस तो हो गई थी लेकिन उसको उठा लिया गया।

मगर बाज़ वज़ूह से इसमें भी उम्मत के चंद फायदे हैं

☆ लैलतुल क़द्र की तअय्युन बाक़ी रहती तो बाज़ आराम पसंद और कोताह तबीअतों के लोग दूसरी रातों में इबादत व रियाज़त न करते। अब अदमे तअय्युन पर ताक़ रातों में बंदे इबादत व रियाज़त में गुज़ारने की कोशिश करेंगे।

☆ तअय्युन की सूरत में एक रात इबादत करके बंदा बाक़ी रातों को सो सकता था मगर अदमे तअय्युन की सूरत में पांच रातें बंदा इबादत में गुज़ारेगा, जिसकी वजह से उसे शबे क़द्र की फ़ज़ीलत तो हासिल होगी ही साथ ही साथ दीगर रातों में इबादत करने का भी अज्र मिलेगा और शबे क़द्र को तलाश करने का भी अज्र उसे हासिल होगा।

☆ लैलतुल क़द्र साल में एक ही रात है, अगर उसकी तअय्युन हो जाती है, तो उसमें इबादत कर लेने के बाद दीगर रातों की इबादत में इतना लुत्फ़ नहीं मिलता जितना अदमे तअय्युन की सूरत में मिलता है।लिहाज़ा अल्लाह عزوجل ने उसकी तअय्युन को उठा लिया ताकि उसके बंदे माहे रमज़ानुल मुबारक की रातों में ख़ूब से ख़ूब इबादत करके अपने मौला की ख़ुशनूदी हासिल कर सकें।

ख़ास बात तो यह है कि अल्लाह عزوجل फ़रिश्तों में तफ़ाख़ुर फ़रमाता है कि देखो माहे रमज़ानुल मुबारक की रातों में मेरे बंदे किस तरह मेरी इबादत व रियाज़त कर रहे हैं।

बहरहाल कोई भी वजह हो लेकिन अल्लाह तबारक तआ़ला ने हमारे हक़ में बेहतर ही किया। हमको चाहिए कि हम लैलतुल क़द्र की तलाश में माहे रमज़ानुल मुबारक की आख़री ताक़ रातों को इबादत व रियाज़त के ज़रिया ज़िंदा रखें। इंशाअल्लाह! हमें बेशुमार नेकियाँ और फ़वाइद मैयस्सर आऐंगे।

शबे क़द्र क्यों अता हुई?

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! शबे क़द्र अता किए जाने के बारे में कई रिवायतें मिलती हैं। एक रिवायत में है कि हुज़ूर

नबीए कौनेन साहिबे क़ाब कौसेन ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि बनी इस्राईल में एक शमऊन नामी आबिद थे जिन्होंने हज़ार माह अल्लाह की राह में जिहाद किया और इबादत की। इस पर सहाबा-ए-किराम को तअज्जुब हुआ और कहा कि फिर हमारे आमाल की क्या हैसियत है? इस पर अल्लाह तआ़ला ने इस उम्मत को एक रात अता फ़रमाई जो उस ग़ाज़ी की मुद्दते इबादत से बेहतर है। (तफ्सीर सावी)

इसी सिलसिले में एक और रिवायत अल्लामा क़रतबी رحمۃ اللہ علیہ ने मोअता इमाम मालिक के हवाले से तहरीर फ़रमाया कि रसूलुल्लाह ﷺ को पिछली उम्मतों की उम्रें दिखाई गईं, आपने देखा कि उनके मुक़ाबिल में आपकी उम्मत की उमरें कम हैं इससे आपको ख़ौफ़ हुआ कि मेरी उम्मत के आमाल उन उम्मतों के आमाल तक न पहुंच सकेंगे तो अल्लाह तआ़ला ने आपको शबे क़द्र अता फ़रमाया जो उन उम्मतों के हज़ार माह की इबादत से बेहतर है। जैसा कि अल्लाह तबारक व तआला का इर्शाद है "لَيْلَةُ الْقَدْرِ خَيْرٌ مِّنْ اَلْفِ شَهْرٍ"

इसी तरह एक और रिवायत हज़रत अली बिन अरवा से है कि एक दिन रसूलुल्लाह ﷺ ने बनी इस्राईल के चार अशख़ास का ज़िक्र फ़रमाया जिन्होंने अल्लाह की अस्सी बर्स इबादत की और उनकी ज़िंदगी का एक लमहा भी अल्लाह की नाफ़रमानी में नहीं गुज़रा, आपने इन चार अशख़ास में हज़रत अय्यूब, हज़रत हिज़क़ील, हज़रत यूशअ और हज़रत ज़करिया علیہم السلام का ज़िक्र फ़रमाया, रसूलुल्लाह ﷺ के सहाबा को यह सुन कर तअज्जुब हुआ तो जिब्रइले अमीन علیہ السلام नाज़िल हुए और अर्ज़ किया, मुहम्मद ﷺ ! आपकी उमम्त को उन लोगों की अस्सी साल की इबादत से तअज्जुब हुआ, अल्लाह तआ़ला ने आप पर इससे बेहतर चीज़ नाज़िल कर दी है और सूराः क़द्र पढ़ी और कहा, यह उस चीज़ से अफ़ज़ल है जिस पर आपको और आपकी उम्मत को तअज्जुब हुआ था।

फ़रिश्तों का नुज़ूल

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! सूराः क़द्र में अल्लाह عزوجل ने इर्शाद फ़रमाया "تَنَزَّلُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَ الرُّوْحُ فِيْهَا" इस रात फ़रिश्ते और

रूह आसमान से ज़मीन पर उतरते हैं। शबे क़द्र में सारे फ़रिश्ते नाज़िल होते हैं या उन में से बाज़, इस सिलसिले में मुफ़स्सरीने किराम के चंद अक़वाल हैं। बाज़ का यह कहना है कि सारे फ़रिश्ते नाज़िल होते हैं और बाज़ का यह कहना है कि उनमें से बाज़ नाज़िल होते हैं और बाज़ का यह कहना है कि हज़रत जिब्रइल علیہ السلام सिदरतुल मुंतहा के सारे फ़रिश्तों के साथ नाज़िल होते हैं।

नुज़ूले मलाइका के हवाले से हदीषे पाक में भी ज़िक्र है।

जैसा कि हज़रत अनस رضی اللہ عنہ ही से मरवी है कि नबी-ए-करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमायाः "اِذَا كَانَ لَيْلَةُ الْقَدْرِ يَنْزِلُ جِبْرِيْلُ فِيْ كَبْكَبَةٍ مِّنَ الْمَلَائِكَةِ يُصَلُّوْنَ عَلٰى كُلِّ عَبْدٍ قَائِمٍ اَوْ قَاعِدٍ يَذْكُرُ اللّٰهَ عَزَّوَجَلَّ" यानी लैलतुल क़द्र को जिब्रीले अमीन फ़रिश्तों के एक जम्मे ग़फ़ीर के साथ ज़मीन पर उतरते हैं और मलाइका का यह ग्रिरोह हर उस बंदे के लिए दुआए मग़फ़िरत और इल्तिजा रहमत करता है जो खड़े या बैठे अल्लाह सुबहानहू तआ़ला के ज़िक्र में मशग़ूल होता है।

एक रिवायत में है कि जब शबे क़द्र आती है तो हज़रत सैयदना जिब्रइल علیہ السلام के साथ वह फ़रिश्ते भी उतरते हैं जो सिदरतुल मुंतहा पर रहने वाले हैं। और वह अपने साथ चार झंडे लाते हैं, एक गुंबदे ख़िज़रा पर नसब करते हैं, एक बैतुल मुक़द्दस की छत पर, एक मस्जिदे हराम की छत पर नसब करते हैं और एक तूरे सेना के ऊपर, और हर मोमिन मर्द व औरत के घर पर तशरीफ़ ले जाते हैं और उन्हें सलाम कहते हैं, इस रहमत से शराबी, क़ातेए रहम और सूद खाने वाले महरूम रहते हैं। (सावी बहवाला मताअए आख़िरत)

एक अजीबुल ख़िल्क़त फ़रिश्ते का नुज़ूल

साहिबे तफ़सीरे रूहुल बयान तहरीर फ़रमाते हैं कि एक फ़रिश्ता ऐसा है कि जिसका सर अर्श के नीचे है और दोनों पाँव सातों ज़मीनों की जड़ों में, उसके एक हज़ार सर हैं और हर सर आलमे दुनिया से बड़ा है और हर सर में एक हज़ार चेहरे और हर चेहरे में हज़ार मुंह, हर मुंह में हज़ार ज़बानें, हर ज़बान से हज़ार क़िस्म की तस्बीह व तहमीद पढ़ता है, हर ज़बान की बोली दूसरी ज़बान से नहीं मिलती, वह मुंह से ज़बान

खोलता है तो तमाम आसमान के फ़रिश्ते उसके डर से सजदा रेज़ हो जाते हैं कि कहीं उसके चहरे के अन्वार उन्हें जला न दें। हर सुबह व शाम इन तमाम मुंहों से अल्लाह तआ़ला की तस्बीह करता है। यह फ़रिश्ता शबे क़द्र में ज़मीन पर उतर कर रसूले अकरम नूरे मुजस्सम ﷺ की उम्मत के एहले ईमान रोज़ादार मर्दों और औरतों के लिए तुलूऐ फ़ज्र तक इस्तिग़फार करता है। (रूहुल बयान)

फ़रिश्ते क्यों नाज़िल होते हैं?

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! आप यह सोचते होंगे कि आख़िर शबे क़द्र में फ़रिश्ते क्यों नाज़िल होते हैं? जब कि फ़रिश्ते ख़ूद तस्बीह व तक़दीस और तहलील के तवंगर हैं, क़याम, रुकूअ और सुजूद सारी इबादात से सरशार हैं फिर इंसानों की वह कौन सी इबादत है जिसे देखने के शोक़ में वह इंसानों से मुलाक़ात की तमन्ना करते हैं और अल्लाह तआ़ला से इजाज़त तलब करके ज़मीन पर नाज़िल होते हैं? आइए इस सिलसिले में चंद बातें मुलाहिज़ा करते हैं ताकि उस रात इबादत करने का जज़बा पैदा हो।

महद्दिसीने किराम ने उसकी वजह बयान की है कि कोई शख़्स ख़ूद भूका रह कर अपना खाना किसी और ज़रूरतमंद को खिला दे यह वह नादिर इबादत है जो फ़रिश्तों में नहीं होती, गुनाहों पर तौबा और नदामत के आंसू बहाना और गिड़गिड़ाना, अल्लाह से माफ़ी चाहना, अपनी तबई नींद छोड़ कर अल्लाह की याद के लिए रात के पिछले पहर उठना और ख़ौफे ख़ुदा से हिचकियाँ ले ले कर रोना, यह वह इबादतें हैं जिनका फ़रिश्तों के यहाँ कोई तसव्वुर नहीं क्यों कि न वह खाते हैं, न पीते हैं, न गुनाह करते हैं, न सोते हैं।

हदीषे क़ुदसी में है कि अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है "गुनाहगारों की सिसकियों और हिचकियों की आवाज़ मुझे तस्बीह व तहलील की आवाज़ों से ज़्यादा पसंद है" इसलिए फ़रिश्ते यादे ख़ुदा में आंसू बहाने वाली आंखों को देखने और ख़ौफ़े ख़ुदा से निकलने वाली आहों को सुनने के लिये ज़मीन पर उतरते हैं।

इमाम राज़ी رحمۃ اللہ علیہ ने उसकी वजह यह बयान फ़रमाई कि इंसान

की आदत है कि वह उलमा और सालेहीन के सामने ज़्यादा अच्छी और ज़्यादा ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ से इबादत करता है, अल्लाह तआ़ला उस रात फ़रिश्तों को भेजता है कि ए इंसानों! तुम इबादत गुज़ारों की मजलिस में ज़्यादा इबादत करते हो, आओ! अब मलाईका की मजलिसों में ख़ुज़ूअ और ख़ुशूअ से इबादत करो।

फ़रिश्तों के नुज़ूल की एक वजह यह भी हो सकती है कि इंसान की पैदाइश के वक़्त फ़रिश्तों ने इस्तिफ़सार किया था कि उस पैदा करने में क्या हिकमत है जो ज़मीन में फ़िस्क़ व फ़ुजूर और ख़ूंरेज़ी करेगा? लिहाज़ा इस रात अल्लाह तआ़ला ने अपने बंदों से उनकी उम्मीदों से बढ़ कर अज्र व षवाब का वादा किया, उस रात के इबादत गुज़ारों को ज़बाने रिसालत से मग़फ़िरत की नवेद सुनाई, फ़रिश्तों की आमद और उनकी ज़ियारत और सलाम करने की बशारत दी ताकि उसके लिए यह रात जाग कर गुज़ारें, थकावट और नींद के बावजूद अपने आप को बिस्तर और आराम से दूर रखें ताकि जब फ़रिश्ते आसमान से उतरें तो उनसे कहा जा सके, यही वह इब्ने आदम हैं जिनकी ख़ूंरेज़ियों की तुम ने ख़बर दी थी, यही वह शरर ख़ाकी है जिसके फ़िस्क़ व फ़ुजूर का तुमने ज़िक्र किया था, उसकी तबीअत और ख़िल्क़त में हम ने रात की नींद रखी है, यह अपने तबई और खल्क़ी तक़ाज़ों को छोड़ कर हमारी रज़ा जोई के लिए रात सज्दों और क़याम में गुज़ार रहा है।

फ़रिश्तों का सलाम

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! हज़रत इमाम राज़ी علیہ الرحمہ लिखते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने वादा फ़रमाया है कि आख़िरत में फ़रिश्ते मुसलमानों की ज़ियारत करेंगे और आकर सलाम अर्ज़ करेंगे। "اَلْمَلٰٓئِكَةُ يَدْخُلُوْنَ عَلَيْهِمْ مِّنْ كُلِّ بَابٍ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ" फ़रिश्ते जन्नत के हर दरवाज़े से उनके पास आएंगे और आकर सलाम करेंगे और लैलतुल क़द्र में यह ज़ाहिर फ़रमाया कि अगर तुम मेरी इबादत में मशग़ूल हो जाओ तो आख़ेरत तो अलग रही दुनिया में भी फ़रिश्ते तुम्हारी ज़ियारत को आऐंगे और आकर सलाम करेंगे।

(शरह सहीह मुस्लिम, अल्लामा ग़ुलाम रसूल सईदी)

शबे क़द्र और तदाबीरे उमूर

अल्लामा क़रतबी मुजाहिद के हवाले से लिखते हैं कि अल्लाह तआ़ला इस रात में ज़िंदगी, मौत और रिज़्क़ वग़ैरा के एहकाम मुदब्बिराते उमूर (फ़रिश्तों) के हवाले कर देता है। यह चार फ़रिश्ते हैं इस्राफ़ील, मीकाईल, इज़राईल और जिब्रईल علیہم السلام।

हज़रत इब्ने अब्बास رضی اللہ عنہما से रिवायत है कि इस साल जिस क़दर बारिश होनी है, जिस क़दर रिज़्क़ मिलना है और जिन लोगों को जीना या मरना है इसको लोहे महफ़ूज़ से नक़ल करके लिख दिया जाता है हत्ता कि लैलतुल क़द्र में यह भी लिख दिया जाता है कि कौन कौन शख़्स इस साल बैतुल्लाह का हज करेगा, उनके नाम उनके आबा के नाम लिख दिए जाते हैं। न उनमें कोई कमी की जाती है न कोई इज़ाफ़ा।

शबे क़द्र की दुआऐं

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा رضی اللہ عنہا फ़रमाती हैं कि मैंने रहमते आलम ﷺ से पूछा कि या रसूलुल्लाह ﷺ ! अगर मुझ को शबे क़द्र मालूम हो जाए तो उसमें क्या करूँ? आपने फ़रमाया कि यह दुआ पढ़ा करो। اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ عَفُوٌّ تُحِبُّ الْعَفْوَ فَاعْفُ عَنِّیْ

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा رضی اللہ عنہا से एक और रिवायत इस तरह है: उन्होंने फ़रमाया कि मैंने नबी करीम ﷺ से पूछा कि अगर लैलतुल क़द्र पा लूँ तो अल्लाह तआ़ला से क्या मांगू? फ़रमाया, ''उससे आफ़ियत के सिवा कुछ न मांगना'' इसमें हुज़ूर सरवरे आलम ﷺ की दुआऐ मुबारक की तरफ़ इशारा है "اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ الْعَفْوَ وَ الْعَافِيَةَ وَ الْمُعَافَاةَ فِی الدِّيْنِ وَ الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةِ" ऐ अल्लाह मैं तुझ से अफ़व व आफ़ियत और दीन व दुनिया व आख़िरत में मआफ़ात (आफ़ियत) मांगता हूँ।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! मज़कूरा अहादीषे करीमा में अल्लाह के प्यारे हबीब ﷺ ने हज़रते आइशा सिद्दीक़ा رضی اللہ عنہا को जो दुआऐं तालीम फ़रमाई वह बड़ी ही माअ्ना ख़ेज़ हैं। मज़कूरा दुआओं में बंदा अपने रब की शाने अफ़व व करम को वसीला बना कर अर्ज़

करता है कि ऐ अल्लाह! तू माफ़ फ़रमाने वाला है, माफ करने को पसंद फ़रमाता है, बस मुझे भी माफ़ फ़रमा। और दूसरी दुआ में दीन, दुनिया और आख़िरत में अफव, आफ़ियत, और मुआफ़ात को तलब करता है।

माहे रमज़ानुल मुबारक में अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की शाने रहीमी व करीमी जोश पर होती है इसलिए हम जैसे सियाह कारों को इस सुनेहरे मोक़े को ज़ाएअ नहीं करना चाहिए और रब की रहमत से भरपूर फ़ायदा उठाते हुए इससे अफव की भीक मांगनी चाहिए और शबे क़द्र में ख़ास इस दुआ की कषरत करनी चाहिए क्योंकि शबे क़द्र की फ़ज़ीलत क़ुरआने मुक़द्दस से षाबित है जो हज़ार महीनों से बेहतर है। हम अगर शबे क़द्र में शब बेदारी का ख़ास एहतमाम करें और क़याम व तिलावत में मस्रूफ़ हो जाऐं तो अल्लाह की ज़ात से उम्मीद है कि ज़रूर हमारे गुनाहों को माफ़ भी फ़रमाऐगा और करम की नज़र भी फ़रमाएगा।

शबे क़द्र की नफ़ल नमाज़

जो इस रात चार रकअत पढ़े और हर रकअत में बाद सूराः फ़ातिहा, सूराः क़द्र एक मर्तबा और सूराः इख़लास सत्ताइस मर्तबा पढ़े तो इस नमाज़ का पढ़ने वाला गुनाहों से ऐसा साफ़ हो जाता है कि गोया आज ही पैदा हुआ और अल्लाह *جل شانہ* उसे जन्नत में हज़ार महल्लात अता फ़रमाएगा।

एक रिवायत में है कि जो कोई सत्ताईसवीं रमज़ान को चार रकअ़त पढ़े और हर रकअत में सूरएः फ़ातिहा के बाद सूरएः क़द्र तीन मर्तबा और सूरएः इख़लास पचास मर्तबा पढ़े और बाद सलाम सज्दा में जाकर एक मर्तबा पढ़े।

"سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ" फिर जो दुआ मांगे क़ुबूल होगी और अल्लाह *عزوجل* उसको बेइंतिहा नेअ्मतें अता फ़रमाएगा और उसके कुल गुनाह बख़्श देगा। इंशाअल्लाह!

रब्बे क़दीर हम सब को शबे क़द्र की क़द्र करने और इसमें ख़ूब ख़ूब इबादत करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

शबे क़द्र से महरूमी का नुक़सान

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! जहाँ शबे क़द्र में शब बेदारी और इबादत करने के बेशुमार फ़वाइद हैं वहीं उसमें सुस्ती बरतने और ग़फ़लत का मुज़ाहिरा करने में बेशुमार नुक़सानात भी हैं। अगर हम ने लैलतुल क़द्र में यानी रमज़ानुल मुबारक की ताक़ रातों में क़याम व तिलावत का एहतमाम न किया तो उसका नुक़सान भी मुलाहिज़ा फ़रमाएं कि हदीष शरीफ़ में फ़रमाया गया "مَنْ حُرِمَهَا فَقَدْ حُرِمَ الْخَيْرَ كُلَّهُ وَ لَا يُحْرَمُ خَيْرَهَا اِلَّا كُلُّ مَحْرُوْمٍ" यानी जो शख़्स शबे क़द्र से महरूम हो गया गोया पूरी भलाई से महरूम हो गया और शबे क़द्र की ख़ैर से वही महरूम होता है जो कामिल महरूम हो। (इब्ने माजा)

हदीष शरीफ़ से यह वाज़ेह हो गया कि शबे क़द्र में ग़फ़लत नहीं बरतनी चाहिए बल्कि अपने आपको इबादत के लिए ख़ूब तैयार करना चाहिए क्योंकि अल्लाह करीम चंद घंटों की इबादत के एवज़ अपने महबूब ﷺ के सदक़ा व तुफ़ैल हज़ार महीनों की इबादत से ज़्यादा षवाब अता फ़रमाता है। कम नसीब है वह शख़्स जो चंद घंटे भी अपने रब के हुज़ूर इबादत के लिए क़ुरबान करने को तैयार न हो।

अगली उम्मतों की उमरें ज़्यादा होती थीं और वह इबादत व रियाज़त की कषरत करते थे। अल्लाह عزوجل ने इस उम्मत पर करम फ़रमाया कि उनको शबे क़द्र अता फ़रमा दी और एक शबे क़द्र की इबादत का दरजा हज़ार महीनों की इबादत से ज़्यादा कर दिया। कम वक़्त और मेहनत भी कम लेकिन षवाब में लंबी उम्र वालों से भी ज़्यादा! यह इनाम व इकराम सिर्फ़ रहमते आलम ﷺ के सदक़ा व तुफ़ैल ही है अगर बंदा इसके बावजूद भी ग़फ़लत बरते तो उस पर अफ़सोस है।

लैलतुल क़द्र में ख़ूब इबादत व रियाज़त के साथ साथ अपने एहल व अयाल और दोस्त व एहबाब को भी इस पर आमादा करो। इंशाअल्लाह! लैलतुल क़द्र में जागना अपनी क़िस्मत को जगाने का ज़रिया बन जाएगा और जो दुआ नबी करीम ﷺ ने तालीम फ़रमाई उस दुआ की कषरत करो यानी सुबहानहू व तआ़ला की बारगाहे बेकस

पनाह में अपने गुनाहों से माफ़ी मांगो इसलिए कि आख़िरत का मामला बहुत ही कठिन है, इंशाअल्लाह! शबे क़द्र की बरकत से अल्लाह तबारक व तआ़ला आख़िरत की सारी परेशानियों को आसान फ़रमा देगा।

एतिकाफ़ का बयान

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! अल्लाह तबारक व तआ़ला ने इंसानों को महज़ अपनी इबादत के लिए पैदा फ़रमाया जैसा कि ख़ूद उसका इर्शाद है। "وَ مَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَ الْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ" मैंने जिन्न व इंसान को सिर्फ अपनी इबादत के लिए पैदा फ़रमाया।

इबादत कहते ही "अल्लाह तबारक व तआ़ला की बंदगी करने और उसके एहकाम के बजा लाने" को। इबादत का मफहूम बहुत वसीअ है। हम नमाज़ पढ़ते हैं, रोज़ा रखते हैं, हज करते हैं, उमरा करते हैं, ज़कात व सदक़ात अदा करते हैं, ग़रीबों की मदद करते हैं, मदारिसे इस्लामिया की तामीर, मस्जिदों की तामीर और अपनी जाइज़ कमाई से तालिबाने उलूमे दीनिया का तआवुन करते हैं, यह सारी चीज़ें इबादत में शुमार होती हैं और उनके अलावा भी इबादत के बेशुमार तरीक़े हैं।

माहे रमज़ानुल मुबारक में जहाँ हमें और दीगर इबादतों का एहतिमाम करना है वहीं इस एतिकाफ़ करने की भी कोशिश करनी है। हम एतिकाफ़ के हवाले से चंद बातें तहरीर कर रहे हैं ताकि उसके पढ़ने के बाद दिलों में एतिकाफ़ करने का जज़बा पैदा हो।

एतिकाफ़ का लुग़वी और शरई माअ्ना

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! एतिकाफ़ का लुग़वी माअ्ना अल्लामा अस्फ़हानी ने "ताज़ीम की नियत से किसी चीज़ के पास ठहरना" बयान फ़रमाया है और शरीअ़त में इबादत की नियत से मस्जिद में ठहरने को एतिकाफ़ कहते हैं। (शरहे सहीह मुस्लिमः 220)

नबीए कौनो मकाँ का मामूल

हज़रत इब्ने उमर رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ रमज़ान के आख़री अशरे में एतिकाफ़ फ़रमाते थे, नाफ़ेअ् कहते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہما ने मुझे वह जगह दिखाई जहाँ रसूलुल्लाह

ﷺ एतिकाफ़ करते थे (इज़नः 371)

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा رضی اللہ عنہا बयान फ़रमाती हैं "اِنَّ النَّبِیَّ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّمَ کَانَ یَعْتَکِفُ الْعَشْرَ الْاَوَاخِرَ مِنْ رَمَضَانَ حَتّٰی تَوَفَّاہُ اللّٰہُ" रसूलुल्लाह ﷺ रमज़ानुल मुबारक के आख़री दस दिन में एतिकाफ़ किया करते थे यहाँ तक कि रफ़ीक़े आला से जा मिले। (बुख़ारीः 271/1)

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! मज़कूरा बाला अहादीष में "کَانَ یَعْتَکِفُ" का लफ़्ज़ आया जो नबी अकरम ﷺ की एतिकाफ़ पर मुदावमत और इष्तमरार पर दलालत करता है। जिससे यह षाबित होता है कि नबीए कौनेन ﷺ बिल्इ स्तमरार एतिकाफ़ फ़रमाया करते थे।

एतिकाफ़ के ज़रिये शबे क़द्र की तलाश

हज़रत अबू सईद खुदरी رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने रमज़ानुल मुबारक के पहले अशरे में एतिकाफ़ किया फिर तुर्की खेमा के अंदर दर्मियानी अशरा में एतिकाफ़ किया फिर सर मुबारक खेमा से निकल कर फ़रमाया, मैंने उस रात की तलाश में पहले अशरे का एतिकाफ़ किया फिर दर्मियानी अशरे का एतिकाफ़ किया फिर मेरे पास आने वाला आया और मुझे बताया गया कि वह रात आख़री अशरे में है तो जिसने मेरे साथ एतिकाफ़ किया वह आख़री अशरे में भी एतिकाफ़ करे।

मुझे यह रात दिखाई गई थी फिर भूला दी गई। मैंने उस रात की सुबह अपने आपको गीली मिट्टी में सज्दा करते देखा लिहाज़ा तुम इसे आख़री अशरा की ताक़ रातों में तलाश करो। हज़रत अबू सईद खुदरी رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं, उस रात बारिश हुई और मस्जिद की छत टपकने लगी और मेरी आंखों ने रसूले कायनात ﷺ को इक्कीसवीं की सुबह को देखा कि आपकी पेशानी पर गीली मिट्टी का अपर था। (बुख़ारीः1/271)

एतिकाफ़ की फ़ज़ीलत

हज़रत इब्ने अब्बास رضی اللہ تعالیٰ عنہما से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने मोअ्तकिफ के बारे में इर्शाद फ़रमाया "वह गुनाहों से बाज़ रहता है और नेकियों से उसको इस क़दर षवाब मिलता है जैसे उसने

तमाम नेकियाँ कीं। (इब्ने माजा)

हज़रत इमाम हुसैन رضی اللہ تعالیٰ عنہ से रिवायत है कि हुज़ूरे अक़दस ﷺ ने फ़रमाया जिसने रमज़ान में दस दिनों का एतिकाफ़ कर लिया तो ऐसा है जैसे दो हज और दो उमरे किए। (बैह्क़ी)

आक़ाए नेअ्मत ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया, जो शख़्स रमज़ानुल मुबारक के आख़री अशरा में ख़ुलूस के साथ एतिकाफ़ करे अल्लाह عزوجل उसके नाम-ए-आमाल में हज़ार साल इबादत का षवाब दर्ज फ़रमाएगा और उसको क़यामत के दिन अपने अर्श के साए में जगह इनायत फ़रमाएगा।

एतिकाफ़ के अक़साम

एतिकाफ़ की तीन क़िस्में हैं। (1) वाजिब (2) सुन्नते मोअक्किदा (3) नफ़्ल।

एतिकाफ़ वाजिबः एतिकाफ़ वाजिब नज़र की वजह से होता है। उसकी दो सूरतें हैंः अव्वल यह कि बंदा यह नज़र माने कि अल्लाह तआ़ला की रज़ा के लिए एक दिन या एक हफ़्ता या एक माह एतिकाफ़ करूंगा। दोम यह कि यह नज़र माने कि मेरा फ़लाँ काम हो जाए तो मुतअय्यना अय्याम में एतिकाफ़ करूंगा। तो इस सूरत में एतिकाफ़ वाजिब हो जाएगा। (क़ुतुबे फ़िक़्ह)

एतिकाफ़े सुन्नते मोअक्किदाः

रमज़ानुल मुबारक के आख़री अशरा में एतिकाफ़ सुन्नते मोअक्किदा किफ़ाया है कि अगर शहर के एक शख़्स ने भी कर लिया तो सारे लोग बुरीउज़्ज़िमा हो जाऐंगे और अगर किसी ने न किया तो सब जवाब देही के मुस्तहिक होंगे।

एतिकाफ़े नफ़्लः

मज़कूरा बाला दो अक़साम के अलावा एतिकाफ़ की जितनी भी सूरतें हैं वह एतिकाफ़े नफ़िल हैं।

एतिकाफ़ वाजिब, सुन्नते मोअक्किदा और नफ़ल में फ़र्क़

एतिकाफ़े वाजिब, सुन्नते, मोअक्किदा और नफ़ल में फ़र्क़ यह है कि एतिकाफ़े वाजिब और सुन्नते मोअक्किदा में रोज़ा शर्त है कि ब ग़ैर रोज़ा के यह एतिकाफ़ नहीं माने जाऐंगे, मगर नफ़ल एतिकाफ़ में रोज़ा शर्त नहीं है बल्कि वह एक घंटा दो घंटा, एक दिन दो दिन का भी होता है। इसी लिए बेहतर यह है कि जब कभी मस्जिद में दाख़िल हों तो एतिकाफ़ की नियत कर लें या अपनी ज़बान से इन अलफ़ाज को दोहरा लें: "بِسْمِ اللّٰهِ دَخَلْتُ وَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَ نَوَيْتُ سُنَّتَ الْاِعْتِكَافِ" उसके बाद अगर मस्जिद में बैठे भी रहेंगे तो इबादत का सवाब नामा-ए-आमाल में लिखा जाता रहेगा।

एतिकाफ़े वाजिब और सुन्नते मोअक्किदा में बिला उज़्र मस्जिद से निकलने की सूरत में एतिकाफ़ टूट जाता है मगर एतिकाफ़े नफ़ल में बिला उज़्र भी मस्जिद से निकल सकते हैं फिर जब दोबारा मस्जिद में दाख़िल होंगे तो एतिकाफ़ शुरू हो जाऐगा।

एतिकाफ़ में किए जाने वाले आमाल

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! वैसे तो हम एतिकाफ़ में इबादत का कोई भी काम कर सकते हैं मगर मंदरजा ज़ैल मख़सूस आमाल करें तो बेहतर है:-

☆ नमाज़े पंजगाना की बाजमाअत सफ़े अव्वल में तकबीरे उला के साथ पाबंदी करें।

☆ अमामा शरीफ़ बांध कर नमाज़ पढ़ें।

☆ रोज़ाना कम अज़ कम एक पारा कुरआने मुक़द्दस के तिलावत करें।

☆ कुरआने मुक़द्दस का तर्जुमा और तफ़सीर कंज़ुल ईमान से मुताला करें।

☆ मुक़र्ररा वक़्त में उलमाए एहले सुन्नत की चंद मख़सूस किताबों का मुताला करें जिन के ज़रिया इल्मे दीन हासिल हो।

☆ अगर मुमकिन हो तो चंद मख़सूस लोगों से मुक़र्ररा अव्क़ात में

पंद व नसीहत की बातें करें।

☆ मख़सूस वक़्त में दुरूद शरीफ़ का विर्द करें।

☆ रात में नवाफ़िल की कषरत करें।

☆ हर काम सुन्नत के मुताबिक़ करें।

☆ नमाज़े तहज्जुद, इशराक़, चाश्त, अव्वाबीन वग़ैरा नवाफ़िल पढ़ें।

☆ क़ज़ा नमाज़ें अदा करें।

☆ तौबा व इस्तिग़फ़ार करें।

☆ अपने और सारी उम्मते मुस्लिमा के फलाह व बहबूद की दुआ करें।

☆ अपनी ज़िंदगी में इंक़िलाब पैदा होने और सारी उम्र इश्क़े रसूल ﷺ में गुज़रने और मौत के वक़्त ईमान पर ख़ात्मा होने की दुआ करें।

इंशाअल्लाह! एतिकाफ़ में मज़कूरा बाला आमाल करने की बरकत से हम नेकियों का ज़ख़ीरा अपने दामन में इकट्ठा कर लेंगे और हमें इबादत में लुत्फ़ भी आएगा। अल्लाह عزوجل की बारगाह में दुआ है कि हमें इन तमाम आमाल की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

एतिकाफ़ में किए जाने वाले चंद अव्राद व वज़ाइफ़

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! अव्राद व वज़ाइफ़ हमारे अस्लाफ़ का मामूल रहा है, उसके बेशुमार फ़वाइद व फ़ज़ाइल हैं, सबसे बड़ा फ़ायदा तो यह है कि यह भी अल्लाह عزوجل के ज़िक्र का एक एहम ज़रिया हैं और ज़िक्रे ख़ुदा के हवाले से ख़ूद ख़ुदाए करीम का इर्शाद है "اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوْبُ" ख़बरदार! अल्लाह के ज़िक्र ही में दिलों का इत्मिनान है।

वैसे तो हमें हर दिन और हर रात के लिए चंद वज़ाइफ़ मुक़र्रर कर लेना चाहिए कि उसकी पाबंदी करें मगर माहे रमज़ानुल मुबारक में जब हमने एतिकाफ़ की नियत कर ली उस वक़्त हमें ख़ुसूसन मंदरजा ज़ैल अव्राद की कषरत करनी चाहिए। हम चंद वज़ाइफ़ उनके फ़ज़ाइल व फ़वाइद के साथ तहरीर कर रहे हैं:-

☆ हज़रत अबू दरदा رضی اللہ عنہ से मरवी है कि जो कोई हर रोज़ सात

मर्तबा इस आयत को पढ़ेगा "فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِیَ اللّٰہُ لَا اِلٰہَ اِلَّا ھُوَ عَلَیْہِ تَوَکَّلْتُ وَھُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِیْمِ" अल्लाह तआ़ला उसके आख़िरत के अमर मुहिम को किफ़ायत करेगा। ख़्वाह वह इस क़ौल में सच्चा हो या झूटा। यानी ख़्वाह तवक्कुल रखता हो या नहीं।

☆ किसी ने ख़्वाब में उतबा गुलाम رضی اللہ عنہ को देखा कि आपने फ़रमाया में इस दुआ के बाइस जन्नत में दाख़िल हुआ "اَللّٰھُمَّ یَا ھَادِیَ الْمُضِلِّیْنَ وَ یَا اَرْحَمَ الْمُذْنِبِیْنَ وَ مُقِیْلَ عَثَرَاتِ الْعَاثِرِیْنَ اِرْحَمْ عَبْدَکَ ذَاالْخَطَرِ الْعَظِیْمِ وَ الْمُسْلِمِیْنَ کُلَّھُمْ اَجْمَعِیْنَ فَاجْعَلْنَا مَعَ الْاَحْیَاءِ الْمَرْزُوْقِیْنَ الَّذِیْنَ اَنْعَمْتَ عَلَیْھِمْ مِنَ النَّبِیِّیْنَ وَ الصِّدِّیْقِیْنَ وَ الشُّھَدَاءِ وَ الصَّالِحِیْنَ آمِیْنَ یَا رَبَّ الْعَالَمِیْنَ"

☆ हुज़ूर ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया, जिस जगह में नमाज़ पढ़ूं उस जगह मेरा बैठा रहना और नमाज़ से लेकर आफ़ताब निकलने तक ज़िक्रे इलाही करना मुझे इस बात से महबूब तर है कि चार ग़ुलाम आज़ाद करूँ।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! मज़कूरा हदीष शरीफ़ को मद्दे नज़र रखते हुए हमें ख़ुसूसन एतिकाफ़ की हालत में नमाज़ के बाद इन कलमात को बकषरत दोहरा लेना चाहिए। "اَسْتَغْفِرُ اللّٰہَ الَّذِیْ لَا اِلٰہَ اِلَّا ھُوَ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ وَ اَتُوْبُ اِلَیْہِ سُبْحَانَ اللّٰہِ وَ الْحَمْدُ لِلّٰہِ وَ لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَ اللّٰہُ اَکْبَرُ"

माहे रमज़ानुल मुबारक की आख़री शब कैसे गुज़ारें?

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! माहे रमज़ानुल मुबारक में हम रोज़ा रखते हैं, नवाफ़िल पढ़ते हैं, तरावीह का एहतेमाम करते हैं, क़ुरआन मुक़द्दस की तिलावत करते हैं, ग़रीबों की मदद करते हैं, रोज़ा दारों को इफ़तारी कराते हैं, अपने एहल व अयाल पर ख़ूब दिल खोल कर खर्च करते हैं। यक़ीनन! इन आमाल में बेहद षवाब और बेशुमार फ़वाइद हैं लेकिन जैसे ही हम ईद का चाँद देखते हैं यह तसव्वुर करते हैं कि सारे आमाले ख़ैर से हमें छुटकारा मिला, ईद का चांद देखते ही हम बाज़ार में निकल जाते हैं और क़िस्म क़िस्म का सामान ख़रीदने में मशग़ूल हो जाते हैं और अकषर लोगों का हाल यह होता है कि माहे रमज़ानुल मुबारक का चांद देखते ही गोया वह अल्लाह عزوجل को भूल गए हों, पूरा महीना इबादत और नेकी में गुज़ारने के बाद ईद का चांद

देखते ही नमाज़ों को तर्क करके दीगर आमल में मशग़ूल हो जाते हैं।

हमें कभी यह ख़्याल नहीं आता कि क्या हमने माहे रमज़ानुल मुबारक की इस तरह क़द्र की है जिस तरह उसकी क़द्र करने का हक़ बनता है, क्या हमने इसमें इस तरह इबादत की है जिस तरह इबादत करनी चाहिए। शबे ईद माहे रमज़ानुल मुबारक में की जाने वाली नेकियों का बदला लेने की शब है अगर हम उसी शब में अल्लाह से ग़ाफ़िल हो जाऐंगे तो यह कितनी कम नसीबी की बात होगी। लिहाज़ा इस हदीष को पढ़ो और शबे ईद में माहे रमज़ानुल मुबारक में अपने सारे आमाल का तजज़िया और एहतिसाब करो।

अल्लाह के प्यारे हबीब ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया जब ईदुल फ़ित्र की रात आती है तो मलाइका ख़ुशी मनाते हैं और अल्लाह عزوجل अपने नूर की ख़ास तजल्ली फ़रमाता है, फ़रिश्तों से फ़रमाता है, ऐ गिरोहे मलाइका! उस मज़दूर का क्या बदला है जिसने अपना काम पूरा कर लिया? फ़रिश्ते अर्ज़ करते हैं, उसको पूरा अज्र दिया जाए। अल्लाह عزوجل फ़रमाता है, मैं तुम्हें गवाह करता हूँ कि मैंने इसको बख़्श दिया।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! इस हदीष को पढ़ने के बाद रमज़ान की आख़री शब हमें अपना एहतिसाब करना चाहिए कि हमने पूरे माह में कितनी नेकी की है और आज जो नेकियों का सिला मिलने की शब है उसमें हम कितनी अज्र के हक़दार हैं। अगर हम ने माहे रमज़ानुल मुबारक में भरपूर इबादत की है तो ठीक है और अगर हम से इबादत में कोताही हो गई है तो फिर अब कौन सी ख़ुशी हमें है जिसकी इतनी धूम धाम से तैयारी करने जा रहे हैं, हमें तो अपनी कोताहियों पर अफसोस व नदामत करना चाहिए था कि अफसोस सद अफ़सोस! हम से माहे मोहतरम रमज़ानुल मुबारक का हक़ अदा नहीं हो सका।

सहाबा-ए-किराम और बुज़ुर्गाने दीन की हयाते तैयबा का अगर हम मुताला करें तो हम पर यह बात वाज़ेह हो जाएगी कि वह हज़रात रमज़ानुल मुबारक के महीने में बे शुमार नेकियाँ करने के बावजूद ईद के दिन कितना अफसोस किया करते थे और उनको यह फ़िक्र सताया

करती थी कि क्या हमने रमज़ानुल मुबारक का हक़ अदा कर दिया है! जैसा कि हज़रत उमर رضی اللہ عنہ के हवाले से मंक़ूल है कि आप ईद के दिन गोश-ए-तंहाई में बैठ कर इतना रोए कि रेशे मुबारक तर हो गई, लोगों ने दरयाफ़्त किया तो फ़रमाया, जिसको यह मालूम न हुआ कि उसके रोज़े क़ुबूल हुए या नहीं वह ईद कैसे मनाए। (मवाइज़े हुसना)

इसी तरह हज़रत सालेह رحمۃ اللہ علیہ के हवाले से मंक़ूल है कि वह ईद के दिन अपने एहल व अयाल को इकट्ठा करते और सब मिल कर रोते, लोगों ने मालूम किया कि आप क्यों ऐसा करते हैं? फ़रमाने लगे, मैं ग़ुलाम हूँ, अल्लाह तआ़ला ने हमें नेकी करने और बुराई से बचने का हुक्म फ़रमाया है, हमें मालूम नहीं कि वह हम से पूरा हुआ या नहीं,? ईद की ख़ुशी मनाना उसे मुनासिब है जो अज़ाबे इलाही से अम्न में हो।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! वह हज़रत उमर رضی اللہ عنہ जिनके हवाले से सैयदे कौनेन ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि उनकी नेकियाँ आसमान के सितारों के बराबर हैं और हज़रत सालेह رحمۃ اللہ علیہ जो अल्लाह के बरगुज़ीदा बंदे हैं, इन हज़रात का यह हाल है कि इस तसव्वुर से रो रहे हैं कि क्या ख़बर माहे रमज़ानुल मुबारक के रोज़े क़ुबूल हुए हैं या नहीं, अल्लाह के हुक्म की तकमील हुई या नहीं, अल्लाह हम से राज़ी हुआ या नहीं! लेकिन हमारा हाल यह है कि हमारे दिल में कभी यह ख़्याल भी पैदा नहीं होता और हम रमज़ान के रुख़सत होते ही रक़्स व सुरूर में मदहोश होकर अल्लाह عزوجل को भूल जाते हैं।

मेरे अर्ज़ करने का मक़सद यह नहीं कि ईद न मनाई जाए। यक़ीनन! ईद मनानी चाहिए मगर साथ ही साथ अल्लाह तबारक व तआ़ला के ज़िक्र से ग़ाफ़िल नहीं होना चाहिए। चाहे ख़ुशी का मोक़ा हो या ग़म का। जैसा कि हुज़ूर ताजदारे कायनात ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया " اَوَّلُ مَنْ یُّدْعٰی اِلَی الْجَنَّۃِ یَوْمَ الْقِیَامَۃِ الَّذِیْنَ یَحْمَدُوْنَ اللّٰہَ فِی السَّرَّآءِ وَالضَّرَّآءِ " जिन्हें क़यामत के दिन सबसे पहले जन्नत की तरफ़ बुलाया जाएगा, वह होंगे जो ख़ुशी व ग़म में अल्लाह عزوجل की हम्द करते हैं।

अल्लाह तबारक व तआ़ला को इस शब में याद करने की फ़ज़ीलत हदीषे पाक में इस तरह मरवी है कि हज़रत अबू अमामा رضی اللہ

عہ ने ताजदारे कायनात ﷺ से रिवायत की है कि जो ईदैन की रातों में क़याम करे उसका दिल उस दिन न मरेगा जिस दिन लोगों के दिल मरेंगे।

दूसरी रिवायत में इस तरह मंकूल है कि अस्बहानी मआज़ बिन जब्ल رضی اللہ عنہ से रिवायत करते हैं कि जो पांच रातों में शब बेदारी करे उसके लिए जन्नत वाजिब है। ज़िल हिज्जा की आठवीं, नववीं और दसवीं शब, ईदुल फ़ित्र की रात और शाबान की पंद्रहवीं रात यानी शबे बरात।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! नबी-ए-सादिक़ व मस्दूक़ ﷺ ने मज़कूरा बाला अहादीषे करीमा में शबे ईद में क़याम यानी रात में जाग कर इबादत करने की फ़ज़ीलत बयान फ़रमा दी, पहली हदीष में यह इर्शाद फ़रमाया कि जब सारे लोगों के दिल मुरदा होंगे उस वक़्त उस शख़्स का दिल ज़िंदा रहेगा जो शख़्स इस रात में जाग कर इबादत करता है, और दूसरी रिवायत में यह फ़रमाया कि जो इस रात में इबादत करेगा उसके लिए जन्नत वाजिब हो जाएगी। अब मुझे बताइए कि कौन शख़्स ज़िंदा दिली नहीं चाहता यक़ीनन हम में का हर शख़्स यह चाहेगा कि उसका दिल ज़िंदा हो।

ज़िंदगी ज़िंदा दिली का नाम है
मुरदा दिल क्या ख़ाक जिया करते हैं

इसी तरह हर शख़्स जन्नत भी चाहता है मगर जन्नत हासिल करने के लिए गुनाह नहीं बल्कि नेकियाँ काम आती हैं, हमारा तो यह हाल है कि गुनाह पे गुनाह करते जाते हैं और तसव्वुर करते हैं कि जन्नत हमारे नाम से ही बनाई गई है। याद रखें कि जहन्नम अल्लाह तआला ने तैयार कर रखा है उन लोगों के लिए जो उसकी इताअत नहीं करते हैं। एक अरबी शाइर ने क्या ख़ूब कहा है:

تَصِلُ الذُّنُوْبَ اِلَى الذُّنُوْبِ وَ اَنْتَ تَرْتَجِی
دَرْکَ الْجِنَانِ بِهَا وَ فَوْزَ الْعَابِدِ
وَ نَسِیْتَ اَنَّ اللّٰهَ اَخْرَجَ
آدَمَا مِنْهَا بِذَنْبٍ وَّاحِدِ

यानी तुम गुनाह पे गुनाह किए जा रहे हो और इससे जन्नत और इबादत करने वाले की तरह कामयाबी की उम्मीद रखते हो। क्या तुम यह भूल गए कि अल्लाह तआ़ला ने हज़रत आदम عليه السلام को फ़क़त एक ख़ताए इजतिहादी की वजह से जन्नत से निकाल दिया था।

लिहाज़ा हमें शबे ईद भी अल्लाह की याद में और गुनाहों से अपने आपको बचाते हुए गुज़ारना चाहिए। अल्लाह तआ़ला की बारगाह में दुआ है कि हमें इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

ईदुल फ़ित्र का बयान

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! माहे रमज़ानुल मुबारक के गुज़रने के फ़ौरन बाद ख़ुदाए तआ़ला हमें ईद मनाने का मोक़ा अता फ़रमाता है यह उसका इतना बड़ा एहसान है लेकिन अफसोस! उम्मते मुस्लिमा ईदे सईद के हक़ीक़ी मफ़हूम से नावाक़िफ़ है। हमारा ख़्याल यह है कि इसमें सिर्फ़ हमें दो रकअत नमाज़ अदा करने के बाद घूम फिर के और फ़ुज़ूल कामों में उसे गुज़ार देना है, हत्ता कि बाज़ नौजवान दोगाना अदा करने के फौरन बाद घूमने फिरने की जगहों, सिनेमा हालों और पिकनिक की जगहों की तरफ़ रवाना हो जाते हैं और माहे रमज़ान जो हमें गुनाहों से रोकने के लिए आया था और हमें तक़वा का दर्स देने आया था उसके गुज़र जाने के बाद तक़वा का तसव्वुर ही हमारे दिल से ख़त्म हो जाता है। याद रखें! इस्लाम ख़ुशी मनाने का हुक्म देता है मगर वह ख़ुशी जिसमें शरीअते मुतह्हरा के एहकाम के ख़िलाफ़ वरज़ी की जाए इस्लाम इसकी हरगिज़ इजाज़त नहीं देता। हमें ईद का दिन कैसे गुज़ारना चाहिए मंदरजा जैल सुतूर को पढ़ें और अमल करने की कोशिश करें।

ईद मनाना कब से शुरू हुआ।

अबू दाऊद हज़रत अनस رضی اللہ عنہ से रिवायत करते हैं कि हुज़ूरे अक़दस ﷺ जब मदीना तशरीफ़ लाए उस ज़माने में एहले मदीना साल में दो दिन ख़ुशी मनाते थे (महरगान दीरोज़) फ़रमाया, यह क्या दिन हैं? लोगों ने अर्ज़ किया, जाहिलियत में हम इन दिनों में ख़ुशी मनाते थे। फ़रमाया, अल्लाह तआ़ला ने उनके बदले में उनसे बेहतर दो दिन तुम्हें दिए, ईदुल अज़्हा और ईदुल फित्र।

ईद का दिन कैसे गुज़ारें

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! इस्लाम दीने फितरत है इसने अपने मानने वालों को हयात के हर लम्हा के लिए उसूल और ज़ाब्ता मुहय्या फ़रमाया है, ईद मनाने के उसूल अता फ़रमाए हैं। अस्लाफे किराम की तारीख़ के मुताला से पता चलता है कि वह इस मुबारक दिन बकपरत अल्लाह की इबादत करते थे, ग़रीबों की ग़मख़्वारी करते, यतीमों, बेवाओं का सहारा बनते वग़ैरा वग़ैरा। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त हमें भी उन पाक बाज़ नुफूसे कुदसिया के नक़्शे क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन

ग़रीबों का ख़्याल रखें

यूँ तो दीने इस्लाम ने हर लमहा ग़रीब परवरी, मुफलिसों की मदद और यतीमों और मिस्कीनों की फ़रयाद रसी का दर्स दिया है, ख़ुसूसन इद के दिन इन्हें न भूलना चाहिए। इसी लिए बानी-ए- इस्लाम ﷺ ने ईद की नमाज़ अदा करने से पहले सदक़-ए-फ़ित्र अदा करने का हुक्म फ़रमाया ताकि मुसलमान इस ख़ुशी के मोक़े पर अपने ग़रीब भाइयों को भी याद रखें और अपनी ख़ुशी में उन्हें भी शरीक कर लें। गुज़िश्ता सफ़हात पर आपने सदक़ात के अक़साम और उसकी फ़ज़ीलत के हवाले से तफ़सील पढ़ ली, अब सदक़-ए- फित्र के हवाले से चंद मसाइल मुलाहिज़ा करें:-

☆ सदक़ा-ए-फ़ित्र हर मुसलमान आज़ाद मालिके निसाब पर जिसकी निसाब हाजते असलिया से फ़ारिग़ हो, वाजिब है। इसमें आक़िल बालिग़ होने की शर्त नहीं। नाबालेग़ीन का सदक़ा उनके वलियों पर वाजिब है।

☆ सदक़ा-ए-फ़ित्र शख़्स पर वाजिब है, माल पर नहीं, लिहाज़ा अगर कोई शख़्स मर गया तो उसके माल से सदक़ा-ए-फ़ित्र वाजिब नहीं।

☆ ईद के दिन सुबहे सादिक़ तुलूअ् होते ही सदक़ा-ए-फ़ित्र वाजिब हो जाता है। लिहाज़ा जो सुबह सादिक़ के बाद पैदा हो या

काफ़िर था मुसलमान हुआ या फ़क़ीर था मालिके निसाब हुआ तो उस पर भी सदक़ा-ए-फ़ित्र वाजिब है।

☆ सदक़ा-ए-फ़ित्र वाजिब होने के लिए रोज़ा रखना शर्त नहीं है, अगर किसी उज़्र, सफ़र, बीमारी, बुढ़ापे की वजह से या (मआज़ल्लाह) बिला उज़्र रोज़ा न रखा तब भी उस पर वाजिब है।

☆ सदक़ा-ए-फ़ित्र उन्हीं को देना जाइज़ है जिनको ज़कात देना जाइज़ है, जिनको ज़कात नहीं दे सकते उन्हें फ़ितरा भी नहीं दे सकते। (बहारे शरीअ़त)

☆ सदक़ा-ए-फ़ित्र की मिक़दार यह है कि गैंहूं या उसका आटा या सत्तू आधा साअ़, खजूर या मुनक़्क़ा या जव या उसका आटा या सत्तू एक साअ़, गैंहू या जो देने से उनका आटा देना अफ़ज़ल है और उससे अफ़ज़ल यह है कि उनकी क़ीमत दे।

आला दरजे की तहक़ीक़ और एहतियात यह है कि साअ़ का वज़न तीन सौ इकयावन रुपया भर है और आधा साअ़ का वज़न एक सौ पछत्तर रुपया अठन्नी भर ऊपर है। यानी अस्सी भर के नम्बरी सेर से जो आज कल हिन्दुस्तान के अक्सर बड़े शहरों में राइज है, एक साअ़ चार सेर सवा छः छटांक का होता है और आधा साअ़ दो सैर सवा तीन छटांक का होता है। आसानी और ज़्यादा एहतियात इसमें है कि गैहूं सवा दो सेर नम्बरी या जो साढ़े चार सेर नम्बरी एक एक शख़्स की तरफ़ से दें। (क़ानूने शरीअ़त)

ईद के दिन यह बातें मुस्तहब हैं

हजामत बनवाना, नाख़ुन काटना, ग़ुस्ल करना, मिस्वाक करना, अच्छे कपड़े पहनना, (नया हो तो नया वरना साफ़ सुथरा धुला हुआ) अमामा बांधना, अंगूठी पहनना, ख़ुश्बू लगाना, सुबह की नमाज़ मुहल्ला की मस्जिद में पढ़ना, ईदगाह जल्द जाना, नमाज़ से पहले सदक़ा-ए-फ़ित्र अदा करना, ईदगाह को पैदल जाना, दूसरे रास्ते से वापिस आना, नमाज़ को जाने से पहले चंद खजूरें खा लेना, तीन पांच या सात या कम व बेश मगर ताक़ अदद में हों। खजूरें न हों तो कुछ मीठी चीज़ खा लें।

ख़ुशी ज़ाहिर करना, कषरत से सदक़ा देना, ईदगाह को इत्मिनान

व वक़ार से और नीची निगाह किए जाना, आपस में मुबारक बाद देना यह सब बातें ईद के दिन मुस्तहब हैं।

इन बातों से परहेज़ करें

अब हम चंद ऐसी चीज़ों का ज़िक्र करने जा रहे हैं जो हमारे मुआशरे में राइज हैं मगर शरीअ़त की रू से इसको करना किसी तोर पर दुरुस्त नहीं बल्कि दुनिया व आख़िरत में तबाही का सबब है:-

☆ ईद का दिन आने पर आम तोर पर मुसलमान सिनेमा, ड्रामा, सर्कस वग़ैरा देखने जाते हैं।

☆ बाज़ मुसलमान ईद के दिन शराब नोशी, जुआ वग़ैरा खेलते हैं।

☆ बाज़ जगहों पर गाने वग़ैरा लगा कर लड़कों के साथ साथ लड़कियाँ भी नाचती हैं।

☆ बाज़ जगहों पर पटाखे वग़ैरा फोड़े जाते हैं।

☆ बाज़ लोग ग़ैर मुस्लिमों की बाक़ायदा एहतेमाम के साथ दावत करते हैं और उन्हें भी अपने इस मुक़द्दस तहवार में शरीक करना चाहते हैं।

☆ बाज़ जगहों पर बाक़ायदा टी.वी. लगा कर लोगों को जमा करके लोग फ़िल्में देखते हैं। (मआज़ल्लाह)

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! मज़कूरा उमूर का इरतिकाब सरासर अल्लाह व रसूल عزوجل وﷺ की नाराज़गी का सबब बनते हैं, मज़कूरा अफ़आले मज़मूमा व क़बीहा के इरतिकाब से हम हरगिज़ फ़लाहे दारैन की अबदी सआदतों को हासिल नहीं कर सकेंगे। फ़लाह व कामयाबी तो अल्लाह عزوجل और रसूलुल्लाह ﷺ की इताअत व फ़रमांबरदारी में है।

रब्बे क़दीर جل جلاله की बारगाह में दुआ है कि हम सब को अपने हबीब ﷺ की प्यारी सुन्नतों पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन

माहे रमज़ानुल मुबारक की कुछ एहम तारीख़ें

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! माहे रमज़ानुल मुबारक के फ़ज़ाइल व मसाइल आप पढ़ चुके, आपने बख़ूबी अंदाज़ा लगा लिया

होगा कि यह कितना अज़ीम महीना है? जहाँ यह महीना अपने अंदर बेशुमार ख़ूबियाँ रखता है वहीं इस माह की अज़मत व फ़ज़ीलत इससे भी अयाँ है कि (1) मौलाए कायनात हज़रत अली کرم اللہ وجہہ الکریم के विसाल का भी माह है। (2) हज़रत ख़दीजतुल कुबरा رضی اللہ تعالیٰ عنہا (3) उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा رضی اللہ تعالیٰ عنہا और (4) ख़ातूने जन्नत हज़रत फ़ातिमा ज़ोहरा رضی اللہ تعالیٰ عنہا।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! इस नुफ़ूसे कुदसिया ने बड़ी मेहनत व मुशक़्क़त के साथ इस्लाम की अज़ीम दौलत हम तक पहुंचाई, इस्लामियाने आलम पर उनके बेशुमार एहसानात हैं, यही वजह है कि जब उनके विसाल की तारीख़ें आती हैं तो हम उनका ज़िक्रे ख़ैर करने के लिए महाफ़िल व मजालिस का इंअेक़ाद करते हैं, उनकी याद ताज़ा करते हैं और उनकी अरवाह को इसाले षवाब करते हैं।

शेर ख़ुदा हज़रत अली

کرم اللہ وجہہ الکریم

मुरतज़ा शेरे हक़ अशजउल अशजईन
बाबे फ़ज़्ले व विलायत पे लाखों सलाम

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! हज़रत अली کرم اللہ وجہہ الکریم की ज़ात मोहताजे तआ़रुफ़ नहीं, मुसलमान घर का बच्चा उन्हें जानता और मानता है।

माहे रमज़ानुल मुबारक से आपकी तारीख़े शहादत मुतअल्लिक है इस वजह से आपकी हयाते तैयबा पर चंद सुतूर सुपुर्दे क़िरतास कर रहा हूँ पढ़ें और उनकी सीरत के मुताबिक़ अमल करने की कोशिश करें।

नाम व नसब

आपका नाम नामी ''अली इब्ने अबी तालिब'' और कुन्नियत ''अबुल हसन और अबु तुराब'' है। आप सरकारे अक़दस ﷺ के चचा अबू तालिब के साहबज़ादे हैं यानी हुज़ूर ﷺ के चचा ज़ाद भाई हैं। आपकी वालिदा मोहतरमा का इस्मे गिरामी फ़ातिमा बिंते असद बिन

हाशिम है और यह पहली हाशमी ख़ातून हैं जिन्होंने इस्लाम क़ुबूल किया और हिजरत फ़रमाई। (तारीखुल ख़ुलफ़ा)

नसब नामा व विलादत

आपका सिलसिला-ए-नसब इस तरह है।

علی بن ابی طالب بن عبد المطلب بن هاشم بن عبد مناف

आप सन् 30 आम्मुल फ़ील में पैदा हुए और एलाने नबुव्वत से पहले ही मौलाए कुल सैयदुल रुसुल जनाब अहमदे मुजतुबा मुहम्मद मुस्तफ़ा ﷺ की परवरिश में आए कि जब क़ुरैश क़हत में मुबतिला हुए थे तो हुज़ूर ﷺ ने अबू तालिब पर अयाल का बोझ हलका करने के लिए हज़रत अली کرم اللہ وجہہ الکریم को ले लिया था। इस तरह हुज़ूर ﷺ के साए में आपने परवरिश पाई और उन्हीं की गोद में होश संभाला, आंख खुलते ही हुज़ूर ﷺ के जमाले जहाँ आरा देखा, उन्हीं की बातें सुनीं और उन्हीं की आदतें सीखीं। इसलिए बुतों की निजासत से आपका दामन कभी आलूदा न हुआ, यानी आपने कभी बुत परस्ती न की और इसी लिए کرم اللہ وجہہ الکریم आपका लक़ब हुआ। (तंज़ीहुल मकानतुल हैदरया)

आपका क़ुबूले इस्लाम

हज़रत अली کرم اللہ وجہہ الکریم नौ उमर लोगों में सबसे पहले इस्लाम से मुशर्रफ़ हुए। तारीखुल ख़ुलफ़ा में है कि जब आप ईमान लाए उस वक़्त आपकी उम्र मुबारक दस साल थी बल्कि बाज़ लोगों के क़ौल के मुताबिक़ नौ साल और बाज़ कहते हैं कि आठ साल और कुछ लोग इससे भी कम बताते हैं और आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान फ़ाज़िले बरैलवी علیہ الرحمۃ والرضوان तंज़ीहुल मकानतुल हैदरया में तहरीर फ़रमाते हैं कि बवक़्ते इस्लाम आपकी उम्र आठ दस साल थी।

आपके इस्लाम क़ुबूल करने की तफ़सील मुहम्मद बिन इस्हाक़ ने इस तरह बयान किया है कि हज़रत अली رضی اللہ عنہ ने हुज़ूर علیہ الصلوٰۃ والسلام को और हज़रत ख़दीजतुल कुबरा رضی اللہ عنہا को रात में नमाज़ पढ़ते हुए देखा। जब यह लोग नमाज़ से फ़ारिग़ हो गए तो हज़रत अली رضی اللہ عنہ ने हुज़ूर ﷺ से पूछा कि आप लोग यह क्या कर रहे थे? हुज़ूर ﷺ ने

फ़रमाया कि यह अललाह तआ़ला का ऐसा दीन है जिसको उसने अपने लिए मुंतख़ब किया है और उसी की तबलीग़ व इशाअत के लिए अपने रसूल को भेजा है। लिहाज़ मैं तुम को भी ऐसे मअ्बूद की तरफ़ बुलाता हूँ जो अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं और मैं तुम को उसी की इबादत का हुक्म देता हूँ। हज़रत अली رضی اللہ عنہ ने कहा कि जब तक मैं अपने बाप अबू तालिब से मालूम न कर लूँ उसके बारे में कोई फैसला नहीं कर सकता। चूंकि उस वक़्त हुज़ूर ﷺ को राज़ फ़ाश होना मंज़ूर न था इसलिए आपने फ़रमाया, ऐ अली! अगर तुम इस्लाम नहीं लाते हो तो अभी इस मामला को पोशीदा रखो, किसी पर ज़ाहिर न करो।

हज़रत अली رضی اللہ عنہ अगर्चे रात में ईमान नहीं लाए मगर अल्लाह तआ़ला ने आपके दिल में ईमान को रासिख़ कर दिया था, दूसरे रोज़ सुबह होते ही हुज़ूर ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और आपकी पेश की हुई सारी बातों को क़ुबूल कर लिया और इस्लाम ले आए।

आपकी हिजरत

सरकारे अक़दस ﷺ ने जब ख़ुदाए तआ़ला के हुक्म के मुताबिक़ मक्का मुअ़ज़्ज़मा से मदीना तैयबा की हिजरत का इरादा फ़रमाया तो हज़रत अली رضی اللہ عنہ को बुला कर फ़रमाया कि मुझे ख़ुदाए तआला की तरफ़ से हिजरत का हुक्म हो चुका है लिहाज़ा मैं आज मदीना रवाना हो जाउंगा। तुम मेरे बिस्तर पर मेरी सब्ज़ रंग की चादर ओढ़ कर सो रहो, तुम्हें कोई तकलीफ न होगी। क़ुरैश की सारी अमानतें जो मेरे पास रखी हुई हैं उनके मालिकों को देकर तुम भी मदीना चले आना।

यह मोक़ा बड़ा ही ख़ौफ़नाक और निहायत ख़तरा का था। हज़रत अली رضی اللہ عنہ को मालूम था कि कुफ़्फ़ारे क़ुरैश सोने की हालत में हुज़ूर ﷺ के क़त्ल का इरादा कर चुके हैं इसी लिए ख़ुदाए तआला ने आपको अपने बिस्तर पर सोने से मना फ़रमा दिया है। आज हुज़ूर ﷺ का बिस्तर क़त्ल गाह है। लेकिन अल्लाह के महबूब दानाए ख़ुफ़ाया व गुयूब अहमदे मुजतबा मुहम्मद मुस्तफ़ा ﷺ के इस फ़रमान से कि ''तुम्हें कोई तकलीफ़ न होगी, क़ुरैश की अमानतें देकर तुम भी मदीना चले आना'' हज़रत अली رضی اللہ عنہ को पूरा यक़ीन था कि दुश्मन मुझे

कोई तकलीफ़ नहीं पहुंचा सकेंगे, मैं ज़िंदा रहूंगा और मदीना ज़रूर पहुंचुगा। लिहाज़ा सरकारे अक़दस ﷺ का बिस्तर जो आज बज़ाहिर कांटों का बिछोना था वह हज़रत अली رضی اللہ عنہ के लिए फूलों की सेज बन गया। इसलिए कि उनका अक़ीदा था कि सूरज पूरब की बजाए पच्छिम से निकल सकता है मगर हुज़ूर के फ़रमान के ख़िलाफ़ नहीं हो सकता है।

हज़रत अली رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं कि रात भर आराम से सोया, सुबह उठ कर लोगों की अमानतें उनके मालिकों को सौंपना शुरू किया और किसी से नहीं छुपा। इसी तरह मक्का में तीन दिन रहा फिर अमानतों के अदा करने के बाद मैं भी मदीना की तरफ़ चल पड़ा, रास्ता में भी किसी ने मुझ से कोई तआरुज़ न किया, यहाँ तक कि मैं क़ुबा भी पहुंचा। हुज़ूर ﷺ हज़रत कुलषुम رضی اللہ عنہا के मकान में तशरीफ़ फ़रमा थे मैं भी वहीं ठहर गया।

हज़रत अली رضی اللہ عنہ और अहादीषे करीमा

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! हज़रत अली رضی اللہ عنہ की फ़ज़ीलत में बहुत सी अहादीषे करीमा वारिद हैं बल्कि इमाम अहमद رحمۃ اللہ علیہ फ़रमाते हैं कि जितनी हदीषें आपकी फ़ज़ीलत में हैं किसी और सहाबी की फ़ज़ीलत में इतनी हदीषें नहीं है।

बुख़ारी व मुस्लिम में हज़रत सअ़द बिन वक़्क़ास رضی اللہ عنہ से मरवी है कि ग़ज़वा-ए-तबूक के मौक़े पर जब रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत अली رضی اللہ عنہ को मदीना में रहने का हुक्म फ़रमाया और अपने साथ नहीं लिया तो उन्होंने अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह ﷺ ! आप मुझे यहाँ औरतों और बच्चों पर अपना ख़लीफ़ा बना कर छोड़े जाते हैं तो सरकारे अक़दस ﷺ ने फ़रमाया "اَمَا تَرْضٰی اَنْ تَکُوْنَ مِنِّیْ بِمَنْزِلَةِ هَارُوْنَ مِنْ مُّوْسٰی" यानी क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं हो कि मैं तुम्हें इस तरह छोड़े जाता हूँ कि जिस तरह हज़रत मूसा علیہ السلام हज़रत हारून علیہ السلام को छोड़ गए?! अलबत्ता फ़र्क़ इतना है कि मेरे बाद कोई नबी नहीं होगा।(बुख़ारी: 1/526)

मतलब यह है कि जिस तरह हज़रत मूसा علیہ السلام ने कोहे तूर पर जाने के वक़्त चालीस दिन के लिए अपने भाई हज़रत हारून علیہ السلام

को बनी इस्राईल पर अपना ख़लीफ़ा बनाया था इसी तरह जंगे तबूक की रवानगी के वक़्त मैं तुम को अपना ख़लीफ़ा और नायब बना कर जा रहा हूँ। लिहाज़ा जो मर्तबा हज़रत मूसा علیہ السلام के नज़दीक हारून علیہ السلام का था वही मर्तबा हमारी बारगाह में तुम्हारा है। इसलिए ऐ अली! तुम्हें ख़ुश होना चाहिए। तो ऐसा ही हुआ कि इस ख़ुश ख़बरी से हज़रत अली رضی اللہ عنہ को तसल्ली हो गई।

हज़रत उम्मे सलमा رضی اللہ عنہا से मरवी है कि रसूल ﷺ ने फ़रमायाः "مَنْ سَبَّ عَلِيًّا فَقَدْ سَبَّنِيْ" यानी जिसने अली को बुरा भला कहा तो तहक़ीक़ कि उसने मुझ को बुरा भला कहा। (मिश्कातः 565)

यानी हज़रत अली رضی اللہ عنہ को हुज़ूर ﷺ से इतना क़ुर्ब और नज़्दीकी हासिल है कि जिसने उनकी शान में गुस्ताख़ी और बे अदबी की गोया उसने हुज़ूर ﷺ की शान में गुस्ताख़ी व बेअदबी की। ख़ुलासा यह है कि उनकी तौहीन करना हुज़ूर ﷺ की शान में तो गुस्ताख़ी व तौहीन करना है।

हज़रत अबू तुफ़ैल رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि एक हज़रत अली رضی اللہ عنہ ने खुले हुए मैदान में बहुत से लोगों को जमा करके फ़रमाया कि मैं अल्लाह की क़सम देकर तुम लोगों से पूछता हूँ कि रसूल ﷺ ने यौमे ग़दीरख़ुम में मेरे मुतअल्लिक़ क्या इर्शाद फ़रमाया था? मजमा से तीस आदमी खड़े हुए और उन लोगों ने गवाही दी कि हुज़ूर ﷺ ने उस रोज़ फ़रमाया था "مَنْ كُنْتُ مَوْلَاهُ فَعَلِيٌّ مَّوْلَاهُ اَللّٰهُمَّ وَالِ مَنْ وَّالَاهُ وَ عَادِ مَنْ عَادَاهُ" मैं जिसका मौला हूँ अली भी उसके मौला हैं, या इलाहल आलमीन! जो शख़्स अली से महब्बत रखे तू भी उससे महब्बत रख और जो शख़्स अली से अदावत रखे तू भी उससे अदावत रख।

आपकी शहादत

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! हज़रत अली मुरतज़ा کرم اللہ وجہہ الکریم ने 17 रमज़ानुल मुबारक सन 40 हि॰ अलस्सुबह बेदार होकर अपने बड़े साहबज़ादे हज़रत इमाम हसन رضی اللہ عنہ से फ़रमाया, आज रात ख़्वाब में रसूलुल्लाह ﷺ की ज़ियारत हुई तो मैंने अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह ﷺ ! आपकी उम्मत ने मेरे साथ कुजरवी इख़्तियार की

है और सख़्त नज़अ बरपा कर दिया है। हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया, तुम ज़ालिमों के लिए दुआ करो तो मैंने इस तरह दुआ की कि या इलाहल आलमीन! तू मुझे इन लोगों से बेहतर लोगों में पहुंचा दे और मेरी जगह उन लोगों पर ऐसा शख़्स मुसल्लत कर दे जो बुरा हो। अभी आप यह बयान फ़रमा ही रहे थे कि इब्ने नबाह मोअज़्ज़िन ने आवाज़ दी "اَلصَّلٰوةُ" "اَلصَّلٰوةُ" हज़रत अली رضی اللہ عنہ नमाज़ पढ़ने के लिए घर से चले, रास्ते में लोगों को नमाज़ के लिए आवाज़ दे देकर आप जगाते जाते थे कि इतने में इब्ने मुल्जिम आपके सामने आ गया और उसने अचानक आप पर तलवार का भरपूर वार किया। वार इतना सख़्त था कि आपकी पेशानी कंपटी तक कट गई और तलवार दिमाग़ पर जा कर ठहरी, शमशीर लगते ही आपने फ़रमाया, "فُزْتُ بِرَبِّ الْكَعْبَةِ" यानी रब्बे काबा की क़सम! मैं कामयाब हो गया। (तारीखुल खुलफ़ा)

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! हज़रत अली رضی اللہ عنہ के यौम शहादत की आमद पर आपके ज़िक्र की महफ़िलें क़ायम करो और उनकी ज़िंदगी की रोशन राहों पर चल कर कामयाब व कामरान हो जाओ। अल्लाह عزوجل हम सब को तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! उम्महातुल मोमिनीन رضی اللہ عنہا के फ़ज़ाइल व मनाक़िब में बहुत सी आयात व अहादीष हैं चुनान्चे फ़रमाने बारी तआला है: يٰنِسَآءَ النَّبِيِّ لَسْتُنَّ كَاَحَدٍ مِّنَ النِّسَآءِ اِنِ اتَّقَيْتُنَّ فَلَا تَخْضَعْنَ بِالْقَوْلِ فَيَطْمَعَ الَّذِيْ فِيْ قَلْبِهٖ مَرَضٌ وَّ قُلْنَ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا. ऐ नबी ﷺ की बीवियो! तुम और औरतों की तरह नहीं हो अगर अल्लाह से डरो तो बात में ऐसी नरमी न करो कि दिल का रोगी कुछ लालच करे, हाँ अच्छी बात कहो। (सूराः एहज़ाबः पाराः 22, आयतः 32)

एक और मक़ाम पर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का इर्शाद है "وَ اَزْوَاجُهٗۤ اُمَّهٰتُهُمْ" और उस (नबी) की बीवियाँ इन मोमिनीन की माएं हैं।

यह तमाम उम्मत का मुत्तफ़िक़ अलैह मस्अला है कि हुज़ूर नबी करीम ﷺ की मुक़द्दस बीवियाँ दो बातों में हक़ीक़ी माँ के मिसल हैं, एक यह कि उनके साथ हमेशा-हमेशा के लिए किसी का निकाह जाइज़ नहीं। दौम यह कि उनकी ताज़ीम व तकरीम हर उम्मती पर उसी तरह

लाज़िम है जिस तरह हक़ीक़ी मां की बल्कि इससे भी बहुत ज़्यादा, लेकिन नज़र और ख़ल्वत के मामला में अज़वाजे मुतह्हरात का हुक्म हक़ीक़ी मां की तरह नहीं है क्योंकि क़ुरआने अज़ीम में अल्लाह तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया "وَاِذَا سَاَلْتُمُوْهُنَّ مَتَاعًا فَاسْئَلُوْهُنَّ مِنْ وَّرَآءِ الْحِجَابِ" जब नबी करीम ﷺ की बीवियों से तुम लोग कोई चीज़ मांगो तो परदे के पीछे से मांगो।

मुसलमान अपनी हक़ीक़ी माँ को तो देख भी सकता है और तंहाई में बैठ कर इससे बात चीत भी कर सकता है मगर हुज़ूर علیہ الصلوٰۃ والسلام की मुक़द्दस बीवियों से हर मुसलमान के लिए परदा फ़र्ज़ है और तंहाई में उनके पास उठना बैठना हराम है।

उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजतुल कुबरा

رضی اللّٰہ تعالیٰ عنہا

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! हज़रत ख़दीजा رضی اللہ عنہا हुज़ूर علیہ الصلوٰۃ والسلام की सबसे पहली रफ़ीक़ा-ए-हयात हैं। उनके वालिद का नाम ख़ुवैलिद बिन आस और वालिदा का नाम फ़ातिमा बिन्त ज़ाइदा है। यह ख़ान्दाने क़ुरैश की बहुत ही मुअ़ज़्ज़ज़ और निहायत ही दौलत मंद ख़ातून थीं, एहले मक्का उनकी पाकदामनी और पारसाई की बिना पर उनको "ताहिरा" के लक़ब से याद करते थे, उन्होंने हुज़ूर علیہ الصلوٰۃ والسلام के अख़लाक़ व आदात और जमाले सूरत व कमाले सीरत को देख कर ख़ुद ही हुज़ूर ﷺ से निकाह की रग़बत की और फिर बाक़ायदा निकाह हो गया।

आपका क़ुबूले इस्लाम

अल्लामा इब्ने असीर और इमाम ज़हबी का बयान है कि इस बात पर तमाम उम्मत का इजमाअ़ है कि रसूलुल्लाह ﷺ पर सबसे पहले आप ही ईमान लाईं और इबतिदाए इस्लाम में जब कि हर तरफ़ से आपकी मुख़ालफ़त का तूफ़ान उठ रहा था ऐसे कठिन वक़्त में सिर्फ़ उन्हीं की एक ज़ात थी जो रसूलुल्लाह ﷺ की मूनिसे हयात बन कर तस्कीने ख़ातिर का बाइस थीं।

अहादीष में आपकी फ़ज़ीलत

हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि हज़रत जिब्रइल علیہ السلام रसूलुल्लाह ﷺ के पास तशरीफ़ लाए और अर्ज़ किया कि ऐ मुहम्मद ﷺ ! यह ख़दीजा हैं जो आपके पास एक बर्तन लेकर आ रही हैं जिसमें खाना है। जब यह आपके पास आ जाऐं तो आप इन से उनके रब का और मेरा सलाम कह दें और उनको यह ख़ुशख़बरी सुना दें कि जन्नत में उनके लिए मोती का एक घर बना है जिसमें न कोई शोर होगा न कोई तकलीफ़ होगी। (बुख़ारीः 539,1)

इसी तरह एक और रिवायत है कि एक मर्तबा हज़रत आइशा رضی اللہ عنہا ने हुज़ूर علیہ الصلوٰۃ والسلام की ज़बाने मुबारक से हज़रत ख़दीजा رضی اللہ عنہا की बहुत ज़्यादा तारीफ़ सुनी तो उन्हें ग़ैरत आ गई और उन्होंने यह कह दिया कि अब तो अल्लाह तआ़ला ने आपको उनसे बेहतर बीवी अता फ़रमा दी। यह सुन कर आपने इर्शाद फ़रमाया कि नहीं! ख़ुदा की क़सम! ख़दीजा से बेहतर मुझे कोई बीवी नहीं मिली। जब सब लोग मुझे झुटला रहे थे उस वक़्त उन्होंने मेरी तस्दीक़ की और जिस वक़्त कोई शख़्स मुझे कोई चीज़ देने के लिए तैयार न था उस वक़्त ख़दीजा ने मुझे अपना सारा माल दे दिया और उन्हीं के शिकम से अल्लाह तआ़ला ने मुझे औलाद अता फ़रमाई। (सीरतुल मुस्तफ़ा)

इमाम तिबरानी ने हज़रत आईशा رضی اللہ عنہا से एक हदीष नक़ल की है कि हुज़ूर ﷺ ने हज़रत ख़दीजा رضی اللہ عنہا को दुनिया में जन्नत का अंगूर खिलाया। (सीरतुल मुस्तफ़ा)

आपकी वफ़ात

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! हज़रत ख़दीजा رضی اللہ عنہا पच्चीस साल तक हुज़ूर علیہ الصلوٰۃ والسلام की ख़िदमत गुज़ारी से सरफ़राज़ रहीं, हिजरत से तीन बरस क़ब्ल पैंसठ बरस की उम्र पा कर माहे रमज़ानुल मुबारक में मक्का मुअज़्ज़मा में उन्होंने वफ़ात पाई। हुज़ूर ﷺ ने मक्का मुकर्रमा के मश्हूर क़ब्रस्तान हजून (जन्नतुल मुअल्ला) में ख़ूद ब नफ़्स नफ़ीस उनकी क़ब्र में उतर कर अपने मुक़द्दस हाथों से उनको सुपुर्द

ख़ाक फ़रमाया। चूंकि उस वक़्त तक नमाज़े जनाज़ा का हुक्म नाज़िल नहीं हुआ था इसलिए आपने उनकी नमाज़े जनाज़ा नहीं पढ़ी।

10 रमज़ानुल मुबारक आपकी वफ़ात का दिन है। उस रोज़ उनकी यादों को ताज़ा करो, उनकी रूहे मुक़द्दसा को इसाले षवाब करने का एहतेमाम करो।

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आईशा सिद्दीक़ा

رضی اللہ تعالیٰ عنہا

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! उम्मुल मोमिनीन हज़रत आईशा सिद्दीक़ा رضی اللہ عنہا हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ رضی اللہ عنہ की नूरे नज़र ओर दुख़तर नेक अख़्तर हैं। उनकी वालिदा माजिदा का नाम ''उम्मे रूमान'' है। यह छः बरस की थीं जब हुज़ूर ﷺ ने एलाने नबुव्वत के दसवें साल माहे शव्वाल में हिजरत से तीन साल क़ब्ल निकाह फ़रमाया और शव्वाल 2 हि॰ में मदीना मुनव्वरा के अंदर यह काशानए नबुव्वत में दाख़िल हो गईं और नो बरस तक हुज़ूर ﷺ की सोहबत से सरफ़राज़ रही। अज़वाजे मुतहरात में यही कुंवारी थीं और सबसे ज़्यादा बारगाहे नबुव्वत में महबूब तरीन बीवी थीं।

अहादीष में आपका तज़किरा

हुज़ूरे अक़दस ﷺ ने आपकी फ़ज़ीलत में इर्शाद फ़रमाया है कि किसी बीवी के लिहाफ़ में मेरे ऊपर वही नाज़िल नहीं हुई मगर हज़रत आइशा जब मेरे साथ बिस्तरे नबुव्वत पर सोती रहती हैं तो उस हालत में भी मुझ पर वहीए इलाही उतरती रहती है। (बुख़ारीः1, 532)

दूसरी रिवायत में है कि हुज़ूर ﷺ ने हज़रत आईशा رضی اللہ عنہا से फ़रमाया, तीन रातें मैं ख़्वाब में देखता रहा कि एक फ़रिश्ता तुम को एक रेशमी कपड़े में लपेट कर मेरे पास लाता रहा और मुझ से यह कहता रहा कि यह आपकी बीवी हैं, जब मैंने तुम्हारे चेहरे से कपड़ा हटा कर देखा तो नागहाँ वह तुम ही थीं। उसके बाद मैंने अपने दिल में कहा कि अगर यह ख़्वाब अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से है तो वह इस ख़्वाब को पूरा कर दिखाएगा। (मिश्कातः 573)

चंद वजहों से आपकी फ़ज़ीलत

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! हज़रत आईशा सिद्दीक़ा رضی اللہ عنہا को मंदरजा ज़ैल वजूहात की बुनियाद पर दीगर अज़वाजे मुतहरात पर फ़ज़ीलत हासिल है।

☆ हुज़ूर ﷺ ने आपके सिवा किसी दूसरी कुंवारी औरत से निकाह नहीं फ़रमाया।

☆ आपके सिवा अज़वाजे मुतहरात में से कोई भी ऐसी नहीं जिनके माँ बाप दोनों मुहाजिर हों।

☆ अल्लाह तआ़ला ने आपकी बरात और पाकदामनी का बयान कुरआन मुक़द्दस में फ़रमाया।

☆ निकाह से पहले हज़रत हज़रत जिब्रइल علیہ السلام ने रेशमी कपड़े में लाकर आपकी सूरत हुज़ूर ﷺ को दिखला दी थी और हुज़ूर ﷺ तीन रातें आपको देखते रहे।

☆ आप और हुज़ूर ﷺ एक ही बर्तन से पानी ले कर ग़ुस्ल किया करते थे, यह शर्फ़ अज़वाजे मुतहरात में से किसी और को हासिल नहीं है।

☆ हुज़ूर ﷺ तहज्जुद पढ़ा करते थे और आप उनके आगे सोई होती थीं। अज़वाजे मुतहरात में से कोई और हुज़ूर ﷺ की इस करीमाना महब्बत से सरफ़राज़ नहीं हुई।

☆ आप हुज़ूर ﷺ के साथ एक ही लिहाफ़ में सोई हुई होतीं और हुज़ूर ﷺ पर ख़ुदा की वही नाज़िल होती रहती।

☆ हुज़ूर ﷺ के विसाल के वक़्त आपका सरे मुबारक हज़रत आईशा सिद्दीक़ा رضی اللہ عنہا की हलक़ और सीने के दर्मियान था इस हालत में आपका विसाल हुआ।

☆ आपकी बारी के दिन हुज़ूर ﷺ का विसाल हुआ।

☆ हुज़ूर ﷺकी क़ब्रे अनवर ख़ास आपके घर में बनी।(सीरतुल मुस्तफ़ा)

अहादीषे मुबारका की नक़ल व रिवायत में आप का किरदार

फ़िक़ह व हदीष के उलूम में अज़वाजे मुतह्हरात के अंदर उनका दरजा बहुत ही बुलंद है। दो हज़ार दौ सो दस हदीषे उन्होंने हुज़ूर ﷺ से रिवायत की हैं, उनकी रिवायत की हुई हदीषों में से एक सौ चौहत्तर हदीषें ऐसी हैं जो बुख़ारी व मुस्लिम दोनों किताबों में हैं और चौव्वन हदीषें ऐसी हैं जो सिर्फ़ बुख़ारी शरीफ़ में हैं और अड़सठ हदीषें वह हैं जिनको सिर्फ़ इमाम मुस्लिम ने अपनी किताब सहीह मुस्लिम में तहरीर किया है। उनके अलावा बाक़ी हदीषें अहादीषें की दूसरी किताबों में मज़कूर हैं।

इल्मे तिब्ब में आपकी मालूमात

इल्म तिब और मरीज़ों के इलाज व मआलजा में भी उन्हें बहुत काफ़ी महारत थी, हज़रत उरवा बिन ज़ुबैर رضی اللہ عنہ कहते हैं कि मैंने एक दिन हैरान होकर हज़रत बी बी आईशा رضی اللہ عنہا से अर्ज़ किया कि ऐ अम्मा जान! मुझे इस बात पर बहुत ही हैरानी है कि आख़िर यह तिब्बी मालूमात और इलाज व मआलजा की महारत आपको कहाँ से और कैसे हासिल हो गई?

यह सुन कर हज़रत आईशा رضی اللہ عنہا ने फ़रमाया कि हुज़ूर ﷺ अपनी आख़री उम्र शरीफ़ में अकसर अलील हो जाया करते थे और अरब व अजम के अतिब्बा (डाक्टर्स) आपके लिए दवाऐं तजवीज़ करते थे और मैं इन दवाओं से आपका इलाज करती थी इसलिए मुझे तिब्बी मालूमात भी हासिल हो गई। (सीरतुल मुस्तफ़ा मुलख़्ख़सन)

इबादत व सख़ावत में आपकी ज़ात

इबादत में आपका मर्तबा बहुत ही बुलंद है, आपके भतीजे हज़रत इमाम क़ासिम बिन मुहम्मद बिन अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ عنہم का बयान है कि हज़रत आईशा رضی اللہ عنہا रोज़ाना बिला नाग़ा नमाज़े तहज्जुद पढ़ने की पाबंद थीं और अकषर रोज़ादार भी रहा करती थीं।

सख़ावत और सदक़ात व ख़ैरात के मामले में भी तमाम

उम्महातुल मोमिनीन में ख़ास तोर पर मुमताज़ थीं। उम्मे दुर्रा رضی اللہ عنہا कहती हैं कि मैं हज़रत आईशा رضی اللہ عنہا के पास थी उस वक़्त एक लाख दिरहम कहीं से आपके पास आया, आपने उसी वक़्त उन सब दिरहमों को लोगों में तक़सीम कर दिया और एक दिरहम भी घर में बाक़ी नहीं छोड़ा, उस दिन वह रोज़ादार थीं।

अरबी अश्आर में आपकी महारत

हज़रत उरवा बिन ज़ुबैर رضی اللہ عنہ जो आपके भांजे थे उनका बयान है कि फ़िक़्ह व हदीष के अलावा मैंने हज़रत आईशा رضی اللہ عنہا से बढ़ कर किसी को अश्आर अरब का जानने वाला नहीं पाया। वह दौराने गुफ्तगू हर मौक़े पर कोई शेअर पढ़ दिया करती थीं जो बहुत ही बरमहल हुआ करता था।

आपका विसाल

17 रमज़ानुल मुबारक शबे सह शंबा 57 हि॰ या 58 हि॰ में मदीना मुनव्वरा के अंदर आपका विसाल हुआ। हज़रत अबु हुरैरा رضی اللہ عنہ ने आपकी जनाज़ पढ़ाई और आपकी वसियत के मुताबिक़ रात में लोगों ने आपको जन्नतुल बक़ीअ के क़ब्रस्तान में दूसरी अज़वाजे मुतहरात की क़ब्रों के पहलू में दफ़न किया।

ख़ातूने जन्नत हज़रत फ़ातिमतुज़्ज़हरा رضی اللہ تعالیٰ عنہا

ख़ूने ख़ैरुर रुसुल से है जिनका ख़मीर
उनकी बेलोस तीनत पे लाखों सलाम
इस बतूल जिगर पारए: मुस्तफ़ा
हुजला आराए इफ्फ़त पे लाखों सलाम
जिसका आंचल न देखा मह व महर ने
उस रिदाए नज़ाहत पे लाखों सलाम
सैयदा ज़ाहिरा, तैयबा, ताहिरा
जाने अहमद की राहत पे लाखों सलाम

रमज़ानुल मुबारक मुसलमानों के लिए जहाँ इसलिए मोहतरम है कि इसमें रहमतों और बरकतों का नुज़ूल मुसलसल होता रहता है,

अल्लाह तआ़ला की ख़ुसूसी तवज्जोह इसमें दुनिया वालों पर होती है, उसकी बरकत से जहन्नम के दरवाज़े बंद कर दिए जाते हैं, उसके सदक़े में अल्लाह तआ़ला की ख़ुसूसी रहमतें व मग़फ़िरतें हमें मिलती हैं वहीं इसलिए भी यह माहे मुबारक हमारे लिए क़ाबिले क़द्र व यादगार है कि इस माह की तीन तारीख़ को हज़रत ख़ातूने जन्नत सैयदतेना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رضی اللہ عنہا का विसाले बाकमाल हुआ।

ख़ातूने जन्नत رضی اللہ عنہا का क्या मुक़ाम व मर्तबा है और कितना अज़ीम रुतबा है उनका यह किसी पर मख़्फ़ी नहीं है। अल्लाह तबारक व तआ़ला का इर्शाद है। "قُلْ لَّا اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْراً اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبٰى" तुम फरमाओ! मैं इस पर तुम से कुछ उजरत नहीं मांगता मगर क़राबत की मुहब्बत। (सूरए शूराः 23)

यानी मुहम्मद ﷺ ! आप लोगों से कह दीजिए कि मैंने तुम्हारे माबैन जो रुश्द व हिदायत की है और तुम्हें ज़ुल्माते कुफ्र से निकाल कर इस्लामी अन्वार से मुनव्वर किया है, इस पर मुझे तुम्हारी उजरत नहीं चाहिए, हाँ! इतना मुतालबा ज़रूर है कि मेरे क़रीबी रिश्तेदारों से महब्बत रखना, इन्हें कोई इज़ा व तकलीफ़ न पहुंचाना। इससे मालूम हुआ कि एहले बैते अत्हार की महब्बत फ़राइज़े दीनिया में से है।

हज़रत फ़ातिमा رضی اللہ تعالیٰ عنہا के फ़ज़ाइल ज़बाने नबवी से

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि सहाबा किराम ने एक मर्तबा अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह ﷺ ! क़ुरबा से मुराद कौन लोग हैं? तो आप ने फ़रमाया "عَلِيٌّ وَّ فَاطِمَةُ وَ وَلَدَاهُمَا" फ़ातिमा और उनके बेटे। (رضی اللہ تعالیٰ عنہم اجمعین)

लिहाज़ा मालूम हुआ कि हज़रत फ़ातिमा की महब्बत मत्लूब मुस्तफ़ा भी है और मरज़िए ख़ुदा भी, इसलिए तमाम मुसलमानों पर ज़रूरी है कि उनकी महब्बत दिल में बसाए रखें और उनकी शान में अदना सी बेअदबी से भी बचें। अल्लाह तआ़ला हम सब को हमेशा उनके मुहब्बीन में रहने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ و التسلیم

हुज़ूर को सबसे ज़्यादा महबूब

हज़रत जुमेअ् बिन उमेर رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि हज़रत आईशा सिद्दीक़ा رضی اللہ عنہا से पूछा गया "اَیُّ النَّاسِ کَانَ اَحَبَّ اِلٰی رَسُوْلِ اللّٰہِ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم قَالَتْ: فَاطِمَۃُ فَقِیْلَ مِنَ الرِّجَالِ قَالَتْ: زَوْجُھَا" हुज़ूर ﷺ के नज़दीक सबसे ज़्यादा महबूब कौन था फ़रमाया कि हज़रत फ़ातिमा थीं, फिर पूछा गया, मर्दों में कौन? तो बोलीं उनके शोहर। (मिश्कात:570)

पेशानी को बोसा देते

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आईशा सिद्दीक़ा رضی اللہ عنہا फ़रमाती हैं "کَانَتْ اِذَا دَخَلَتْ عَلَی النَّبِیِّ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم قَامَ اِلَیْھَا فَقَبَّلَھَا وَ اَجْلَسَھَا فِیْ مَجْلِسِہٖ وَ کَانَ النَّبِیُّ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم اِذَا دَخَلَ عَلَیْھَا قَامَتْ مِنْ مَّجْلِسِھَا فَقَبَّلَتْہُ وَ اَجْلَسَتْہُ فِیْ مَجْلِسِھَا" जब हज़रत फ़ातिमा नबी अकरम ﷺ के पास तशरीफ़ लातीं तो आप उनके लिए खड़े हो जाते और (उनकी पेशानी अक़दस पर) बोसा देते ओर उन्हें अपनी जगह बिठाते (महब्बत में) और जब हुज़ूर ﷺ उनके पास तशरीफ़ ले जाते तो आप खड़ी हो जातीं और हुज़ूर ﷺ (के दस्ते अक़दस) को चूम लेतीं और (एहतेरामन) अपनी जगह पर बिठातीं। (तिर्मिज़ी, मुस्तदरक)

हुज़ूर का गुस्ताख़

हदीषे मुबारका में है कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया "فَاطِمَۃُ بُضْعَۃٌ مِّنِّیْ فَمَنْ اَغْضَبَھَا اَغْضَبَنِیْ" फ़ातिमा मेरे जिस्म का टुकड़ा है, जिसने उन्हें नाराज़ किया उसने मुझे नाराज़ किया। (मिश्कात: स-568)

अल्लाह की रज़ामंदी व नाराज़गी

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया "اِنَّ اللّٰہَ یَغْضَبُ بِغَضَبِ فَاطِمَۃَ وَ یَرْضٰی بِرِضَائِھَا" फ़ातिमा के नाराज़ हो जाने से अल्लाह तआ़ला ग़ज़बनाक हो जाता है और उनके ख़ुश हो जाने से अल्लाह तआ़ला राज़ी होता है। (मुस्तदरक)

जन्नती औरतों की सरदार

हज़रत आईशा सिद्दीक़ा رضی اللہ عنہا के पूछने पर हज़रत फ़ातिमा رضی اللہ عنہا ने ख़ुद बयान फ़रमाया है कि हुज़ूर ﷺ ने मुझ से फ़रमाया था "یَا فَاطِمَۃُ اَمَا تَرْضَیْنَ اَنْ تَکُوْنِیْ سَیِّدَۃَ نِسَآءِ الْمُؤْمِنِیْنَ اَوْ سَیِّدَۃَ نِسَآءِ ھٰذِہِ الْاُمَّۃِ" ऐ फ़ातिमा क्या तुम

इससे राज़ी नहीं हो कि तमाम जन्नती मोमिनीन की औरतों की सरदार हो, या यह फ़रमाया कि इस उम्मत की औरतों की सरदार हो (मुस्लिम)

मुख़्तसर सवानेह हयात

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! हज़रत फ़ातिमा رضی اللہ عنہا नबी अकरम ﷺ की वह साहबज़ादी हैं जो आपको सबसे ज़्यादा महबूब थीं, महबूबे ख़ुदा ﷺ की यह लाडली शहज़ादी फ़ातिमा के नाम से और ज़हरा व बतूल के लक़ब से जानी जाती हैं। हज़रत ख़दीजा बिन्ते ख़ुवैलिद رضی اللہ عنہا के बतने मुबारक से आपकी विलादत हुई। आपकी विलादत की तारीख़ में उलमाए मोअर्ख़ीन ने इख़्तिलाफ़ किया है, किसी ने कहा है कि ऐलाने नबुव्वत के पहले साल पैदा हुई, किसी ने कहा कि एलाने नबुव्वत से एक साल क़ब्ल उनकी विलादत हुई जबकि अल्लामा इब्ने जौज़ी رحمۃ اللہ علیہ का यह कहना है कि एलाने नबुव्वत से पांच साल क़ब्ल उनकी पैदाइश हुई। واللہ تعالیٰ اعلم بالصواب

पन्द्रह बरस की उमर में जंगे उहद के बाद या पहले आपका निकाह मौलाए कायनात हज़रत अली मुरतज़ा رضی اللہ عنہ से हुज़ूर ﷺ ने कर दिया, हज़रत सैयदा फ़ातिमा رضی اللہ عنہا को जब यह मालूम हुआ था कि वह हज़रत अली رضی اللہ عنہ की ज़ौजियत में दाख़िल कर दी गई हैं तो रोने लगी थीं फिर हुज़ूर ﷺ तशरीफ़ लाए और फ़रमाया ऐ फ़ातिमा! वल्लाह! मैंने तुम्हारा निकाह ऐसे शख़्स से कर दिया है जिसका इल्म सबसे ज़्यादा है, जो इल्म में सबसे अफ़ज़ल है, जो सबसे पहले इस्लाम लाने वाला है।

हज़रत सैयदा फ़ातिमा رضی اللہ عنہا को दीगर साहबज़ादियों पर इसलिए भी फ़ौक़ियत हासिल है कि रसूले ख़ुदा ﷺ की नस्ले पाक का सिलसिला उन्हीं से जारी है। हुज़ूरे अक़दस ﷺ के विसाल शरीफ़ का हज़रत बी बी फ़ातिमा رضی اللہ عنہا के क़ल्बे मुबारक पर बहुत ही जांकाह सदमा गुज़रा यही वजह थी कि हुज़ूरे अक़दस ﷺ के विसाल शरीफ़ के बाद कभी आप हंसती हुई नहीं देखी गई।

जब आपकी वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो आप ने हज़रत अस्मा बिंते उमैस رضی اللہ عنہا से कहा कि मैं जनाज़ा खुला ले जाने को नापसंद करती हूँ, इस पर हज़रत अस्मा ने अर्ज़ किया ऐ बिंते रसूल! ﷺ मैंने सर ज़मीने हबशा में एक तरीक़ा देखा है कि जनाज़ा की

चारपाई पर दरख़्त की शाखें डाल कर उस पर कपड़ा डाल देते हैं। हज़रत फ़ातिमा को यह तरीक़ा पसंद आ गया तो उन्होंने फ़रमाया, जब मेरी वफ़ात हो जाए तो तुम और हज़रत अली मिल कर मुझे ग़ुस्ल देना, उसके अलावा और कोई दाख़िल न हो, चुनान्चे ऐसा ही किया गया। हज़रत फ़ातिमा رضی اللہ عنہا इस्लाम की वह पहली हस्ती हैं जिनके जनाज़े को ऊपर से ढांप कर ले जाया गया जबकि उनसे पहले जनाज़ा को चारपाई पर रख कर एक चादर डाल देते थे और जनाज़ा खुला जाता था।

विसाल शरीफ़

विसाले नबवी ﷺ के छः माह बाद 3 रमज़ानुल मुबारक 11 हि. मंगल की रात को जब आप ने दाईए अजल को लब्बैक कहा उस वक़्त आपकी उम्र पाक तीस साल थी। हज़रत अली या हज़रत अब्बास رضی اللہ عنہ ने आपकी नमाज़े जनाज़ पढ़ाई और आपकी वसियत के मुताबिक़ रात में आपकी तदफ़ीन अमल में आई। चुनान्चे हज़रत अली, हज़रत अब्बास और हज़रत फ़ज़ल बिन अब्बास رضی اللہ عنہ ने आपको क़ब्र में उतारा। असह व मुख़्तार क़ौल यही है कि आप जन्नतुल बक़ीअ़ शरीफ़ मदीना मुनव्वरा में मदफ़ून हैं।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! ख़ास कर रमज़ानुल मुबारक की 3 तारीख़ को मालिके कौनो मकाँ ﷺ की शहज़ादी- ए-पाक की बारगाह में ख़िराजे अक़ीदत पेश करें और उनकी महबब्त नीज़ एहले बैते अत्हार व अज़वाजे मुतह्हरात رضی اللہ عنہم اجمعین की महब्बत से अपने सीने सरशार रखें और उनकी महब्बत व उलफ़त ही में आख़िरत की भलाई समझें और हर उस शख़्स से महब्बत रखें जो उनका मुहिब्ब हो और जो उनसे बुग़्ज़ व अदावत रखता हो उससे किनारा कशी इख़्तियार करें और कभी भी इन मुक़द्दस बीबियों के तअल्लुक़ से बेअदबी का अदना लफ़्ज़ भी अपनी ज़बान पर न आने दें।

अल्लाह तआ़ला हम सब को उनके फ़ुयूज़ व बर्कात से माला माल फ़रमाए और मज़कूरा बातों पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ و التسلیم

☆☆☆☆☆

शुहदाए बद्र की बारगाह में ख़िराजे अक़ीदत पेश करें

इरशादे बारी तआ़ला है: وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ (आले इम्रान:123)

तर्जमाः और बेशक अल्लाह ने बद्र में तुम्हारी मदद की जब तुम बिल्कुल बेसरो सामान थे।

बद्र मदीना मुनव्वरा से तक़रीबन 80 मील के फासले पर एक गावं का नाम है जहां ज़मानए जाहिलिय्यत में सालाना मेला लगता था। यहां एक कुआं भी था जिसके मालिक का नाम "बद्र" था उसी के नाम पर इस जगह का नाम "बद्र" रख दिया गया। (सीरतुल मुस्तफा, सफहा:162)

ज़ियाउल उम्मत हज़रत अल्लामा पीर मुहम्मद करम शाह अज़हरी कुद्दस सिर्रुहू फरमाते हैं:

> तारीख़े इस्लाम का यह वह मअ्रिका है जब इस्लाम और कुफ्र, हक़ व बातिल, सच और झूट की पहली टक्कर हुई, इसी मअ्रिका में फरज़न्दाने इस्लाम की तादाद लश्करे कुफ्फार की तादाद से एक तिहाई थी, वसाइल और अस्लिहा के एतबार से बज़ाहिर बहुत कमज़ोर थे, ज़ज़ीरए अरब का इज्तिमाई माहौल सरासर उनके ख़िलाफ था, इन्तिहाई ख़ुशफहमी के बावजूद इस्लाम के ग़लबा और फतहमंद होने की पेशगोई नहीं की जा सकती थी। कुफ्र बड़े करो-फर के साथ हक़ की बेसरो सामानी से नबर्द आज़्मां होने के लिये तीन गुना फौज लेकर बड़े गुरूर व रऊनत से मैदान में आया था लेकिन उसे ऐसी फैसला कुन हज़ीमत का सामना करना पड़ा जिस ने उसकी कमर तोड़ दी फिर उसे कभी हिम्मत न हुई कि वह इस शान से हक़ को ललकार सके। मोअर्रिख़ीन इस मअ्रिका को ग़ज़वए बदरुल कुब्रा, ग़ज़वए बदरुल उ़ज़्मा के नाम से याद करते हैं

लेकिन रब्बे कुद्दूस ने अपनी किताबे मुक़द्दस में इसे यौमुल फुरक़ान के लक़ब से मुलक़्क़ब फरमाया है यानी वह दिन जब हक़ और बातिल के दरमियान फर्क़ आश्कारा हो गया, अंधों और बहरों को भी पता चल गया कि हक़ का अलम्बरदार कौन है और बातिल का नक़ीब कौन? इरशादे रब्बानी है: وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلٰی عَبْدِنَا یَوْمَ الْفُرْقَانِ یَوْمَ الْتَقَی الْجَمْعٰنِ

(अल-अंफाल:41)

तर्जमा: और उस पर जो हमने अपने बन्दे पर फैसले के दिन उतारा जिस दिन दोनों फौजें मिलीं थी।

एक दूसरी आयत में इसे यौमुल बतशतिल कुब्रा बताया गया है, इरशाद है: یَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ الْکُبْرٰی اِنَّا مُنْتَقِمُوْنَ (अद्दुख़ान:16)

तर्जमा: जिस दिन हम सब से बड़ी पकड़ पकड़ेंगे बेशक हम बदला लेने वाले हैं।

(ज़ियाउन्नबी: जिल्द:3, सफहा:293-294)

जंगे बद्र का सबब:

जंगे बद्र का असली सबब "अम्र बिन अल- हज़रमी" के क़त्ल से कुफ्फारे कुरैश में फैला हुआ ज़बर्दस्त इश्तेआल था जिस से हर काफिर की ज़बान पर यही एक नारा था कि "खून का बदला ख़ून" लेकर रहेंगे।

मगर बिल्कुल नागहानी यह सूरते हाल पेश आ गई कि कुरैश का वह क़ाफिला जिस की तलाश में हुज़ूर ﷺ मक़ामे "ज़िल अशीरा" तक तशरीफ ले गये थे मगर वह क़ाफिला हाथ नहीं आया था। बिल्कुल अचानक मदीना में ख़बर मिली कि अब वही क़ाफिला मुल्के शाम से लौट कर मक्का जाने वाला है। और यह भी पता चल गया कि उस क़ाफिले में अबू सुफयान बिन हरब व मख़रमा

बिन नौफल व अम्र बिन अल-आस वग़ैरा कुल 30 या 40 आदमी हैं और कुफ्फारे कुरैश का माले तिजारत जो उस क़ाफिले में है वह बहुत ज़्यादा है। हुज़ूर ﷺ ने अपने अस्हाब से फरमाया कि कुफ्फारे कुरैश की टोलियां लूट मार की नियत से मदीना के अतराफ में बराबर गश्त लगाती रहती हैं और "करज़ बिन जाफर फहरी" मदीना की चरागाहों तक आ कर ग़ारत गरी और डाका ज़नी कर गया है। लिहाज़ा क्यों न हम भी कुफ्फारे कुरैश के उस क़ाफिले पर हमला करके उसको लूट लें। ताकि कुफ्फारे कुरैश की शामी तिजारत बन्द हो जाए और वह मजबूर हो कर हम से सुलह कर लें। हुज़ूर ﷺ का यह इरशादे गिरामी सुन कर अंसार व मुहाजिरीन इस के लिये तैयार हो गए। (सीरतुल मुस्तफाः 162/163)

12 रमज़ान 2 हिजरी को बड़ी उज्लत के साथ लोग चल पड़े, जो जिस हाल में था उसी हाल में रवाना हो गया। इस लश्कर में हुज़ूर ﷺ के साथ न ज़्यादा हथियार थे न फौजी, न राशन की कोई बड़ी मिक़्दार थी, क्योंकि किसी को गुमान न था कि इस सफर में कोई बड़ी जंग होगी।

मगर जब मक्का में यह ख़बर फैली कि मुसलमान मुसल्लह हो कर कुरैश का क़ाफिला लूटने के लिये मदीना से चल पड़े है तो मक्का में एक जोश फैल गया और एक दम कुफ्फारे कुरैश की फौज का दल बादल मुसलमानों पर हमला के लिये तैयार हो गया। जब हुज़ूर ﷺ को इस की इत्तिलाअ् हुई तो आप ने सहाबए किराम को जमा फरमा कर सूरते हाल से आगाह किया और साफ साफ फरमा दिया कि मुम्किन है कि इस सफर में कुफ्फारे कुरैश के क़ाफिले से मुलाक़ात हो जाए और यह भी हो सकता है कि कुफ्फारे मक्का के लश्कर से जंग की नौबत आ जाये। इरशादे गिरामी सुन कर हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ व हज़रत उमर फारूक़

और दूसरे मुहाजिरीन ने बड़े जोश व ख़रोश का इज़हार किया, मगर हुज़ूर ﷺ अंसार का मुंह देख रहे थे क्यों कि अंसार ने आप के दस्ते मुबारक पर बैअ़त करते वक़्त इस बात का अहद किया था कि वह उस वक़्त तलवार उठायेंगे जब कुफ्फार, मदीना पर चढ़ आयेंगे और यहां मदीना से बाहर निकल कर जंग करने का मामला था।

अंसार में से क़बीलए ख़ज़रज के सरदार हज़रत सअ़द बिन उबादा رضی اللہ عنہ हुज़ूर ﷺ का चेहरा मुबारक देख कर बोल उठे कि या रसूलल्लाह! क्या आप का इशारा हमारी तरफ है? ख़ुदा की क़सम! हम वह जांनिसार हैं कि अगर आप का हुक्म हो तो हम समन्दर में कूद पड़ें। इसी तरह अंसार के एक और मोअ़ज़्ज़ सरदार हज़रत मिक़्दाद बिन अस्वद رضی اللہ عنہ ने जोश में भर कर अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! हम हज़रत मूसा علیہ السلام की क़ौम की तरह यह न कहेंगे कि आप और आप का ख़ुदा जा कर लड़ें, बल्कि हम लोग आप के दायें से, बायें से, आगे से, पीछे से लड़ेंगे। अंसार के इन दोनों सरदारों की तक़रीर सुन कर हुज़ूर ﷺ का चेहरा ख़ुशी से चमक उठा।

17 रमज़ान 2 हिजरी जुमा की रात थी, तमाम फौज तो आराम व चैन की नींद सो रही थी मगर एक सरवरे काइनात ﷺ की ज़ात थी जो सारी रात ख़ुदावंदे आलम से लौ लगाए दुआ में मस्रूफ थी, सुबह नमूदार हुई तो आप ने लोगों को नमाज़ के लिये बेदार फरमाया, फिर नमाज़ के बाद क़ुरआन की आयाते जिहाद सुना कर ऐसा लर्ज़ा ख़ेज़ और वलवला अंगेज़ वअ़ज़ फरमाया कि मुजाहिदीने इस्लाम की रगों के ख़ून का क़तरा क़तरा जोश व ख़रोश का समन्दर बन कर तूफानी मौजें मारने लगा और लोग मैदाने जंग के लिये तैयार होने लगे।

17 रमज़ान 2 हिजरी के दिन हुज़ूर ﷺ ने मुजाहिदीने इस्लाम को सफबंदी का हुक्म दिया। अब वह वक़्त है कि मैदाने बद्र में हक़ व

बातिल की दोनों सफें एक दूसरे के सामने खड़ी हैं। हुज़ूर सरवरे आलम ﷺ इस नाज़ुक घड़ी में जनाबे बारी से लौ लगाए गिरया व ज़ारी के साथ खड़े हो कर हाथ फैलाए हुए दुआ मांग रहे थे।

"खुदावंद! तू ने मुझ से जो वादा फरमाया है आज उसे पूरा फरमा दे।"

आप पर इस क़दर रिक़्क़त और महविय्यत तारी थी कि जोशे गिरया में चादर मुबारक दोशे अनवर से गिर पड़ी थी मगर आप को ख़बर नहीं हुई थी। कभी आप सजदे में सर रख कर इस तरह दुआ मांगते किः

"इलाही! अगर यह चंद नुफूस हलाक हो गए तो फिर क़ियामत तक रूए ज़मीन पर तेरी इबादत करने वाले न रहेंगे।"

जंगे बद्र में अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों की मदद के लिये आसमान से फिरिश्तों का लश्कर उतार दिया था, पहले एक हज़ार फिरिश्ते आए फिर तीन हज़ार हो गए इसके बाद पांच हज़ार हो गए।

(सूरए आले इम्रान व अंफाल)

जब ख़ूब घमासान का रन पड़ा तो फिरिश्ते किसी को नज़र न आते थे मगर उनकी हर्ब व ज़र्ब के असरात साफ नज़र आते थे, बाज़ काफिरों की नाक और मुंह पर कोड़ों की मार का निशान पाया जाता था, कहीं बग़ैर तलवार मारे सर कट कर गिरता नज़र आता था, यह आसमान से आने वाले फिरिश्तों की फौज के कारनामे थे।

उतबा, शैबा, अबू जहल वग़ैरा कुफ्फारे कुरैश के सरदारों की हलाकत से कुफ्फारे मक्का की कमर टूट गई और उनके पावं उखड़ गये और वह हथियार डाल कर भाग खड़े हुए और मुसलमानों ने उन लोगों को गिरिफ़्तार करना शुरू कर दिया। इस जंग में कुफ्फार के 70 आदमी क़त्ल

और 70 गिरिफ़्तार हुए, बाक़ी अपना समान छोड़ कर फरार हो गए।

जंगे बद्र में कुल 14 मुसलमान शहादत से सरफराज़ हुए जिन में से 6 मुहाजिर और 8 अंसार थे।

शुहदाए मुहाजिरीन के नाम यह हैं:

1- हज़रत उबैदा बिन अल-हारिस رضی اللہ تعالیٰ عنہ

2- हज़रत उमैर बिन अबी वक़्क़ास رضی اللہ تعالیٰ عنہ

3- हज़रत जुश्शमालैन उमैर बिन अब्द رضی اللہ تعالیٰ عنہ

4- हज़रत आक़िल बिन अबी बुकैर رضی اللہ تعالیٰ عنہ

5- हज़रत मेहजअ् رضی اللہ تعالیٰ عنہ

6- हज़रत सफवान बिन वैज़ा رضی اللہ تعالیٰ عنہ

शुहदाए अंसार के नामों की फेहरिस्त यह है:

1- हज़रत सअ़द बिन खैसमा رضی اللہ تعالیٰ عنہ

2- हज़रत मुबश्शिर बिन अब्दुल मुन्ज़िर رضی اللہ تعالیٰ عنہ

3- हज़रत हारिसा बिन सुराक़ा رضی اللہ تعالیٰ عنہ

4- हज़रत मुअ़व्वज़ बिन अफ़रा رضی اللہ تعالیٰ عنہ

5- हज़रत उमैर बिन हुमाम رضی اللہ تعالیٰ عنہ

6- हज़रत राफेअ् बिन मुअ़ल्ला رضی اللہ تعالیٰ عنہ

7- हज़रत औफ बिन अफ़रा رضی اللہ تعالیٰ عنہ

8- हज़रत यज़ीद बिन हारिस رضی اللہ تعالیٰ عنہ

जो सहाबए किराम जंगे बद्र में शरीक हुए वह तमाम सहाबा में एक खुसूसी शर्फ के साथ मुम्ताज़ हैं और उन खुश्नसीबों की फज़ीलत में

एक बहुत ही अज़ीमुश्शान फज़ीलत यह है कि उन सआ़दतमंदों के बारे में हुज़ूरे अकरम ﷺ ने यह फरमाया किः

> ''बेशक अल्लाह तआ़ला अहले बद्र से वाक़िफ है और उसने यह फरमा दिया है कि तुम अब जो अमल चाहो करो बिला शुब्हा तुम्हारे लिये जन्नत वाजिब हो चुकी है। या यह फरमाया कि मैं ने तुम्हें बख़्श दिया है।'' (बुख़ारी शरीफः जिल्दः2, बहवाला सीरतुल मुस्तफा, मुलख़्ख़सन)

क़ारेईन किराम! इस्लाम जैसी अज़ीम नेअ्मत हमें जो मिली है इन्हीं नुफूसे क़ुदसिया की जांनिसारी का सदक़ा है, लिहाज़ा 17 रमज़ानुल मुबारक को दीगर इबादात व मामूलात के साथ साथ शुहदाए बद्र की बारगाह में भी ख़िराजे अक़ीदत पेश करें। इसी तरह 20 रमज़ानुल मुबारक को फत्हे मक्का हुआ, इस तारीख़ में उन सहाबा को याद करें जिन्हों ने इस्लाम की हक़्क़ानियत व सियानत की ख़ातिर अपनी जान जाने आफरीं के सुपुर्द कर दी और जामे शहादत नोश फरमा कर चमने इस्लाम को सब्ज़ व शादाब कर दिया। रब्बे तआ़ला हम सब को तौफीक़ बख़्शे।

☆☆☆

मक्तबए तैबा की चन्द अहम मत्बूआ़त

इमाम अहमद रज़ा और एहतमामे नमाज़	उर्दू, अंग्रेज़ी
माहे रमज़ान कैसे गुज़ारें?	उर्दू, अंग्रेज़ी, हिन्दी
दाइयाने दीन के औसाफ	उर्दू, अंग्रेज़ी
बरकाते शरीअ़त जिल्द अव्वल	उर्दू, अंग्रेज़ी, हिन्दी
गुलदस्तए सीरतुन्नबी	उर्दू, हिन्दी, अंग्रेज़ी
बेनमाज़ी का अंजाम	उर्दू, हिन्दी, अंग्रेज़ी
हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़	उर्दू, अंग्रेज़ी, हिन्दी
मोबाइल का इस्तेमाल कुरआन की रौशनी में	उर्दू, अंग्रेज़ी, हिन्दी
अज़ाबे क़ब्र से निजात का ज़रिया	उर्दू
कुर्बानी क्या है?	उर्दू, अंग्रेज़ी
इस्लाम और ग्लोब्लाइज़ेशन	उर्दू, अंग्रेज़ी
ख़ुत्बात मुफक्किरे इस्लाम	उर्दू
ख़याबाने मिदहत	उर्दू
अ़ज़्मते माहे मुहर्रम और इमाम हुसैन رضی اللہ عنہ	उर्दू, अंग्रेज़ी
Blessed Sunnah	अंग्रेज़ी
Rights of Parents	अंग्रेज़ी
Islamic Rules	अंग्रेज़ी
Anware Mustafa	अंग्रेज़ी
A journey through Ramadhan	अंग्रेज़ी

राब्ताः मक्तबए तैबा

126, काम्बेकर स्ट्रीट, मुंम्बई, 400003

Phone: 022-23451292-23434366